स्वच्छ पर्यावरण
स्वस्थ जीवन

- ब्रह्मवर्चस

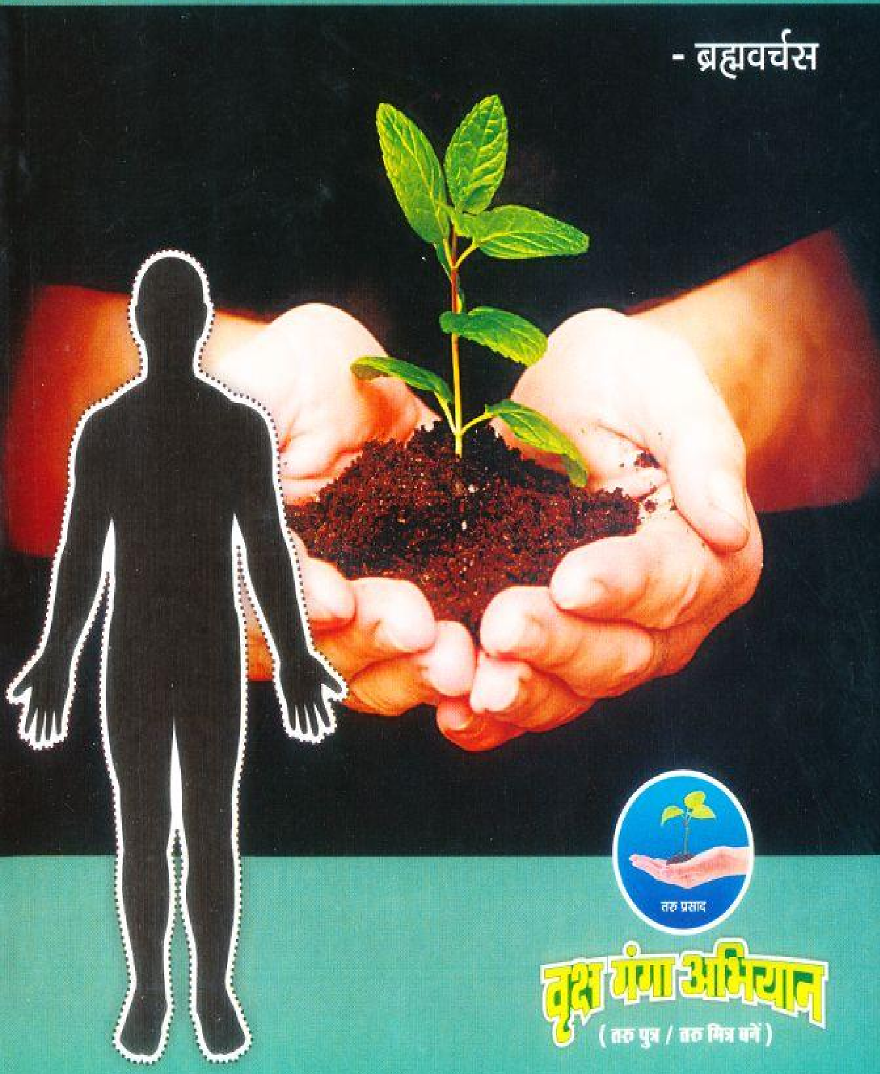

तरु प्रसाद

वृक्ष गंगा अभियान

(तरु पुत्र / तरु मित्र बनें)

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वच्छ पर्यावरण -स्वस्थ जीवन

वृक्ष गंगा अभियान

संकलन-संपादन
ब्रह्मवर्चस

प्रकाशक
वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (TMD)
गायत्री नगर, श्रीरामपुरम्- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
(उत्तराखण्ड) 249411

गायत्री जयन्ती सन्- 2016 मूल्य- 24/-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वच्छ पर्यावरण -स्वस्थ जीवन

□
संकलन-संपादन
ब्रह्मवर्चस

□
प्रकाशक
वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (TMD)
गायत्री नगर-श्रीरामपुरम्
शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

□
प्रथम संस्करण
गायत्री जयन्ती, 2016

□
मूल्य- 24/-

□
सम्पर्क सूत्र
गायत्रीतीर्थ-शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
फोन (01334) 260602, फैक्स 01334 260866
Internet-www.awgp.org
Email- shantikunj@awgp.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अनुक्रमणिका

(खण्ड-1)

1. वृक्ष गंगा अभियान 07
2. वृक्षों के हैं उपकार अनेक 08
3. इकॉलॉजी वैज्ञानिकों की चिन्ता 19
4. जंगल नहीं रहे तो मनुष्य भी नहीं रहेगा 21
5. वृक्ष सम्पदा घटने न दें 31
6. भारतीय संस्कृति में वृक्षों का महत्त्व 35
7. आर्ष ग्रंथों में वृक्षों का महत्त्व 47
8. तरुसिञ्चन - वृक्षों को जल-दान का महत्त्व 52
9. वृक्षारोपण को अभियान बनायें, आपदाओं को दूर भगायें 59
10. वृक्षारोपण के विविध अभियान 70

(खण्ड-2)

1. तरुपुत्र महायज्ञ-कर्मकाण्ड 76
2. प्रेरणा गीत 86

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्राक्कथन

अब और अधिक देर असहनीय है

भारतीय संस्कृति प्रकृति के साथ सहजीवन में ही आस्था रखती है। ऋषियों ने एक सूत्र दिया है '**वसुधैव कुटुम्बकम्**' अर्थात्- 'यह वसुधा ही एक परिवार है।' तमाम जीवन अनुसंधान करके ऋषियों ने सृष्टि के रहस्यों को खोजा। उसके ज्ञान-विज्ञान को जाना-समझा और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि इस सृष्टि के प्रत्येक घटक का एक दूसरे से अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। किसी एक घटक के घटने-बढ़ने अथवा उसमें व्यवधान उत्पन्न होने पर संपूर्ण सृष्टि ही प्रभावित होती है। ठीक उसी प्रकार जैसे परिवार के किसी एक सदस्य के सुख-दुःख से पूरा परिवार प्रभावित होता है। उन्होंने एक प्रकृतिनिष्ठ समग्र जीवन शैली का विकास किया। उन्होंने प्रकृति - पर्यावरण के प्रत्येक घटक में अपनी ही आत्मा का विस्तार देखा और सबके सन्तुलित-समन्वित विकास को महत्त्व दिया। पर्वत, नदी, वृक्ष-वनस्पति, जीव-जन्तु, पवन-आकाश सभी को देव रूप में स्वीकार किया। प्रकृति को मातृवत् स्वीकार करते हुए अथर्ववेद का ऋषि कह उठता है- **माता भूमिः पुत्रोहम् पृथिव्याः**।

ऋषिप्रणीत जीवनशैली में प्रकृति माँ का शोषण नहीं, उसका उपभोग नहीं, पोषण और उपयोग की नीति ही विकास का आधार थी। परन्तु विगत दो शताब्दियों के भोगवादी भौतिक विकास ने मनुष्य की चिन्तन शैली को बुरी तरह प्रभावित किया है। त्याग की पुनीत परम्परा तो मानो लुप्त ही हो गयी। अपने लिए अधिकाधिक संग्रह की वृत्ति ने प्रकृति से जो खिलवाड़ किया है, उसके परिणाम आज हमारे सामने हैं। नाना प्रकार के प्रदूषणों एवं प्राकृतिक असन्तुलन से समस्त मनुष्य जाति भयभीत एवं संकटग्रस्त है। फिर भी इस संकट से उबरने के लिये जिस तत्परता एवं जागरूकता की आवश्यकता है, उसकी ओर आम आदमी अभी भी उदासीन ही है।

पूज्य गुरुदेव का कथन है- "धरती माता अपने सब बच्चों की आवश्यकता पूर्ण करने की सहज सामर्थ्य रखती है, परन्तु लिप्सा एक व्यक्ति की भी पूरी नहीं कर सकती। संसार के समझदार जीव की नासमझी ने न केवल जल-थल-नभ; अपितु अपने भी जीवन को संकट में डाल दिया है। साँप-छछूँदर सी स्थिति निर्मित हो गयी है। न निगलते बनता है और न

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उगलते।'' कटते वन, सूखते, प्रदूषित होते जल-स्रोत, पिघलते हिमनद, विरल होती ओजोन परत, बंजर और जहरीली होती भूमि, हवा में फैलता जहर, कानफोड़ शोरगुल, बढ़ता तापमान, गर्म होती धरती, लुप्त होती वनस्पति-जीव प्रजातियाँ, अनावृष्टि, अतिवृष्टि, बादल फटना, भू-स्खलन, भूकम्प, सूनामी, आँधी-तूफान, चक्रवात आदि, न जाने कितनी मुसीबतों के मूल में वस्तुतः मानवीय दुर्बुद्धि ही उत्तरदायी है।

एकांगी वैज्ञानिक प्रगति की दौड़ में मानव प्रत्यक्षवाद एवं भौतिकवाद को ही सब कुछ मान बैठा है और आत्मविस्मृति की स्थिति में जी रहा है। वह प्रगति किस काम की, जिसमें एक रुपया कमाने के बदले सौ रुपये का घाटा उठाना पड़े। कदाचित् वह भूल गया है कि पशु-पक्षियों, वृक्षों और मनुष्यों के निर्वाह का परस्पर अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। इन तीनों में से एक घटेगा-मिटेगा, तो शेष दो का भी सफाया हो जायेगा। वैज्ञानिकों की मानें तो बढ़ता हुआ तापमान, हवा और पानी में विषाक्तता इस कदर तेजी से बढ़ रही है कि उसे धीमी गति से सर्वभक्षी आत्महत्या का नाम दिया जा सकता है।

अध्यात्मवेत्ता, महापुरुष, समाज सेवक तो प्रकृति का संरक्षण करने एवं सन्तुलित जीवन जीने की बात कहते ही आये हैं, वैज्ञानिकों सहित चारों ओर से भी प्रकृति के संरक्षण, सन्तुलित जीवन शैली की ओर लौट चलने की बात कही जा रही है; किन्तु विडम्बना यह है कि इस ओर आवश्यक कदम बड़ी धीमी गति से बढ़ रहे हैं।

वर्तमान समय में हम जिन विभीषिकाओं से जूझ रहे हैं, इनका संकेत परम पूज्य गुरुदेव, युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने अपनी पुस्तक '**महाकाल और युग प्रत्यावर्तन प्रक्रिया**' में सन् 60 के दशक में ही कर दिया था। इस पुस्तक में उन्होंने विश्वमानव से अपनी रीति-नीति को समय रहते बदलने की मार्मिक अपील की है और चेतावनी भी दी है कि ''जिस दिशा में हम चल रहे हैं, वह दिन-दिन अधिक संकट उत्पन्न करती चली आई है और अब सर्वनाश की संभावना सामने आ खड़ी हुई है। ऐसी दशा में वापस लौटने और दिशा बदलने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं। दुराग्रहपूर्वक यह रीति-नीति जारी रखी गई, तो मानवीय अस्तित्व को सुरक्षित रखना भी संभव न रह जायेगा।... यह कर्तव्य हमें इन दिनों अधिक तत्परतापूर्वक पालन करना चाहिये; क्योंकि महाकाल की भावी दण्ड व्यवस्था अन्धाधुन्ध नहीं,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सप्रयोजन है। यदि लोग बदल जाते हैं, सुधर जाते हैं, तो उस क्रूर कर्म की विशेष आवश्यकता न रह जायेगी। हमारा परिवर्तन भावी आपत्तियों को टाल सकने में समर्थ हो सकता है।... महाकाल की इच्छा भी पूरी हो जाये और हम कालदण्ड के प्रहारों से बच भी जायें। इसका यदि कोई उपाय हो सकता है तो वह युग निर्माण योजना के क्रियाकलापों के माध्यम से जनमानस में अभीष्ट परिवर्तन प्रस्तुत कर देना ही होगा।''(पृ. 70-71)

युग ऋषि ने इस हेतु सौ सूत्रीय योजना दी है। पर्यावरण संरक्षण उसी का एक अंश है। यह अपने आप में एक बहुत बड़ा विषय है। इसके बहुत से पहलू ऐसे भी हैं, जिन्हें सरकारी स्तर पर एवं बड़े स्तर पर ही हल किया जा सकता है। किन्तु एक बहुत बड़ा पक्ष आम जनता की जागरूकता और सहयोग के द्वारा ही हल किया जाना है। इसके लिये तीन स्तरों पर एक साथ कार्य करना होगा- 1. वृक्षारोपण 2. जल संरक्षण एवं जल स्त्रोतों की शुद्धि 3. गाँवों, शहरों, कस्बों में गन्दगी निस्तारण, पूर्ण स्वच्छता की व्यवस्था।

वृक्षारोपण ऐसा ही कार्य है, जिसे आम आदमी अपने भीतर थोड़ी सी जागरूकता और थोड़ी सी संवेदना जगाकर सहजता से कर सकता है। अन्ततः लाभ तो उसे और उसकी भावी पीढ़ियों को ही मिलेगा। युग निर्माण योजना का केंद्र गायत्री तीर्थ, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार प्रत्येक स्कूल, कॉलेज के छात्र-छात्राओं का, सरकारी, गैर-सरकारी प्रतिष्ठानों में कार्यरत युवाशक्ति का, सभी स्वयंसेवी संस्थाओं का, पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता रखने वाले विशिष्टजनों का और न केवल राष्ट्र; अपितु विश्व समुदाय के प्रत्येक नर-नारी का इस अभियान में तत्परता पूर्वक जुट पड़ने के लिये आवाहन करता है।

- डॉ. प्रणव पण्ड्या

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

1. वृक्ष गंगा अभियान

उद्देश्य –

- आसन्न पर्यावरण संकट यथा–ग्लोबल वार्मिंग, ग्रीनहाउस प्रभाव, मौसम चक्र का असन्तुलन, बढ़ता प्रदूषण, विरल होती जा रही ओजोन परत आदि को रोकने का एकमात्र समाधान वृक्षारोपण, हर प्रकार की दौलत की जड़ हरीतिमा संवर्धन।
- वायु प्रदूषण की समस्या को कम करना।
- हर सम्भव खाली पड़ी भूमि पर वृक्षारोपण।
- भू–कटान एवं भू–क्षरण की समस्या की रोकथाम।
- पृथ्वी के तापक्रम में हो रही निरन्तर वृद्धि की समस्या का एकमात्र समाधान धरती माँ को अधिकाधिक हरियाली से भरापूरा रखना।
- अतिवृष्टि, अनावृष्टि, सूखा, बाढ़ आदि के रूप में बढ़ते प्राकृतिक असन्तुलन को सन्तुलन में लाना।
- जंगलों के अन्धाधुन्ध कटान के कारण खाली होती जा रही धरती को पुनः हरा–भरा करना।
- गिरते भूमिगत जल स्तर को ऊपर उठाना।
- क्षीण होती जा रही ओजोन परत को और अधिक क्षतिग्रस्त होने से बचाना।
- सड़कों के किनारे अधिकाधिक वृक्षारोपण कर हरीतिमा संवर्धन करना एवं बढ़ते प्रदूषण और बढ़ते तापमान का यथासम्भव उपचार करना।
- मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये पर्याप्त वृक्ष–वनस्पति सम्पदा का भण्डार तैयार करना।
- जंगलों में अधिकाधिक फलदार व अन्य वृक्षों का रोपण, ताकि शहरों और कस्बों में बन्दरों द्वारा मचाये जा रहे उत्पात का समाधान हो सके।
- आर्थिक समृद्धि का आधार मजबूत करना।
- वृक्षारोपण एवं संरक्षण हेतु जन–जागरूकता पैदा करना एवं जन–जन को भागीदार बनाना।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

2. वृक्षों के हैं उपकार अनेक

वृक्षों की उपयोगिता और महत्त्वपूर्ण भूमिका का रहस्य उद्घाटन वैज्ञानिक विकास के समय हुआ। विश्व के मूर्धन्य वनस्पतिशास्त्री पर्यावरण विशेषज्ञ अब एक स्वर से स्वीकार कर रहे हैं, कि वृक्ष सम्पदा पर समस्त मानव-जाति का अस्तित्व टिका हुआ है। ये प्रकृति के सर्वश्रेष्ठ प्रहरी हैं, जिनके न रहने से प्राणि-समुदाय का जीवन संकट में पड़ जायेगा। प्रगतिशील देशों ने इस तथ्य को समझा है और अपनी वन-सम्पदा को बचाने एवं बढ़ाने के लिए हर तरह के कारगर उपाय सरकारी एवं गैर-सरकारी स्तर पर आरम्भ कर दिये हैं।

जीवन का आधार

वृक्ष-वनस्पतियों और पशु-पक्षियों समेत मनुष्य हरीतिमा के आधार पर जीवित रहते हैं। पशु घास खाते हैं और पेड़ों के पत्ते चरते हैं। मनुष्य का आहार अन्न के दाने, शाक, फल व वनस्पति है। यह खाने को न मिले तो जीवित रहना सम्भव नहीं। मांसाहारी भी-शाकाहारी प्राणियों का ही मांस खाते हैं। इस प्रकार जीवन की निर्भरता - घास स्तर की तथा वृक्ष स्तर की वनस्पतियों पर ही निर्भर माना गया है। उसके उत्पादन और संरक्षण का पूरा ध्यान रखा जाये, तभी आवश्यकता की पूर्ति सम्भव है। जब तक शरीर में प्राण है, तब तक जीवन है। वैसे तो प्राणों के अधिष्ठाता सूर्य भगवान् हैं, लेकिन धरती और सूर्य की ऊर्जा के संयोग से उन प्राणों को प्रोटीन, विटामिन, चिकनाई, कार्बोहाइड्रेट आदि जीवनावश्यक तत्त्वों को आहार के रूप में बदल कर वृक्ष-वनस्पतियाँ ही हम तक पहुँचाती हैं। अन्न, फल, फूल, औषधियाँ वृक्षों से ही मिलते हैं।

वनस्पति जगत्, धरती का फेफड़ा है

वनस्पति जगत्, धरती का फेफड़ा है

प्राणियों की सबसे बड़ी आवश्यकता है, साँस लेने के लिये शुद्ध वायु। इसके अभाव में जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। पहाड़ों पर जब ऊपर चढ़ते चले जाते हैं, तो वातावरण में विद्यमान ऑक्सीजन की मात्रा शनैः-शनैः कम होती चली जाती है। धीरे-धीरे साँस लेना भी दूभर हो जाता है। पर्वतारोही पीठ पर बँधे ऑक्सीजन की मदद से अपनी यात्रा पूरी करते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जब रोगी मृत्यु-शय्या पर होता है, तो अन्तिम समय में एकमात्र अस्त्र के रूप में चिकित्सक प्राणवायु ऑक्सीजन का ही प्रयोग करते हैं।

वातावरण में ऑक्सीजन की मात्रा को बढ़ाने एवं वायु के शोधन का कार्य वृक्ष-वनस्पतियों द्वारा ही होता है। वृक्ष दिन भर प्राणियों के साँस द्वारा छोड़ी हुई विष रूपी कार्बन डायऑक्साइड को निगलते हैं और उनके लिये अमृत के रूप में ऑक्सीजन उगलते हैं। वृक्ष वातावरण में प्राणवायु बढ़ाते एवं दूषित वायु का परिशोधन करते हैं। औद्योगीकरण जन्य वायु प्रदूषण को रोकने एवं शुद्ध वायु उपलब्ध कराने में इनकी भूमिका सर्वोपरि है। इसलिए इन्हें नीलकण्ठ की उपमा दी गयी है। बाकी तो चाहे मनुष्य हो या प्राणी, वाहन हो या कल-कारखाने, सभी तो बस जहर ही जहर उगल रहे हैं। वृक्षों के घटते जाने से ही पर्यावरण निरन्तर जहरीली गैसों से भर रहा है। नगरों में तो पर्यावरण इतना दूषित है, कि साँस लेना भी मुश्किल हो रहा है और तरह-तरह के रोग बढ़ रहे हैं। आग लगने तथा कारखानों द्वारा विसर्जित विषैली वायु से उत्पन्न वायु प्रदूषण, वृक्ष-वनस्पतियों द्वारा ही शोधित किया जाता है। इस तथ्य को हम भली-भाँति जानते हैं, फिर भी वृक्षों का कटान निरन्तर जारी है। यदि पर्याप्त वृक्ष नहीं रहेंगे, तो वातावरण में ऑक्सीजन की मात्रा घट जायेगी। यदि ऐसा हुआ तो जीवन भी नहीं रहेगा।

दमे एवं क्रॉनिक ब्रांकाइटिस के रोगी को अपर्याप्त ऑक्सीजन के कारण जो असह्य पीड़ा होती है, वह देखी नहीं जा सकती। ऐसे वातावरण में पर्याप्त ऑक्सीजन न होने से जीवधारियों को जो कष्ट हो सकता है, उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

डॉ० रिचर्ड बेकर आँकड़े उद्धृत करते हुए कहते हैं, कि घने जंगलों की वायु में एक विशेष प्रकार की आर्द्रता होती है। इससे बहुत ही कम जल से शरीर की आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है। शरीर निर्वाह के लिए जरूरी खनिज एवं आवश्यक लवणों की पूर्ति इतने कम जल से ही हो जाती है कि यहाँ रहने वाले निवासियों का रक्तचाप 56 mmHg. होने पर भी ये लोग स्वस्थ एवं सक्रिय बने रहते हैं, जबकि न्यूनतम सिस्टोलिक रक्तदाब कम से कम 80 mmHg. होना चाहिए। वृक्षों की प्राणदायिनी शक्ति इस कम रक्तचाप में ही इन वनवासियों की जीवनी शक्ति को सामर्थ्यवान् बनाये रखती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जंगल कटते चले जाने से रोगों के संक्रमण की दर बढ़ती चली जाती है। इससे श्वास एवं त्वचा के रोग बढ़ते हैं। वायु में आर्द्रता की कमी हो जाने से आवश्यक पानी के अभाव में वनवासी डिहाईड्रेशन से ग्रस्त होते देखे गये हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में 80% रोगों का कारण अशुद्ध जल एवं प्रदूषित जलवायु है। अशुद्ध जल का कारण है, अधिकांश गाँवों एवं कस्बों का नदी के किनारे बसा होना, पीने के लिए मात्र इसी के जल का उपलब्ध होना एवं भूक्षरण के कारण इस पानी का अशुद्ध होते चले जाना। पेड़ों के कटने से भूक्षरण तो बढ़ता ही है, जलवायु भी अनियमित होती चली जाती है।

विडम्बना यह है कि इन्हीं नीलकण्ठ विषपायियों को निर्ममता से आर्थिक स्वार्थवश काटा जाता है। यह भी एक जाना-माना तथ्य है कि विगत बीस वर्षों में जैसे-जैसे पेड़ कटते चले गये हैं, जन स्वास्थ्य की गुणवत्ता में काफी कमी आती चली गयी है।

शारीरिक ही नहीं, मानसिक पोषण भी

यह हानियाँ साधारण नहीं, असाधारण हैं। इसके अतिरिक्त एक और भी बड़ी बात है कि हरीतिमा का मानसिक स्तर पर भी बड़ा प्रभाव पड़ता है। प्राचीनकाल के ऋषि-तपस्वी अपनी भाव चेतना को उच्चस्तरीय बनाये रखने के लिए सघन वनों में रहते थे। वृक्ष रहित क्षेत्रों में मनुष्यों की मनोवृत्ति नीरस और दुष्ट हो जाती है और वहाँ अपराध, विग्रह अपेक्षाकृत अधिक होने लगते हैं। यदि हम गहराई में जायें तो देखेंगे कि हरियाली के अभाव के मनोवैज्ञानिक प्रभाव से मनुष्य की संवेदना भी घटती जा रही है। भले ही यह तथ्य आज के विद्वानों के मन-मस्तिष्क में अब तक नहीं उठा हो, लेकिन घटती मानवीय संवेदना, असहिष्णुता और बढ़ती क्रूरता, अत्याचार, अशान्ति का कारण हरियाली का निरन्तर कम होते जाना भी है।

वृक्षों का सान्निध्य हमें प्रसन्नता, प्रफुल्लता देता है। झूमती हरियाली देखते ही मन भी उसके साथ झूमने लगता है। जैसे मुरझाई पत्तियों वाले पौधे को सींचने पर कुछ ही क्षणों में सिकुड़ी उदास पत्तियाँ खिल जाती हैं। पौधा जीवन रस व ऊर्जा से भरकर झूमने लगता है। वैसे ही, मनोवैज्ञानिकों के अनुसार पौधों के मूड में आये इस परिवर्तन का समानान्तर प्रभाव इसे सींचने वाले मनुष्य के मन पर भी पड़ता है और वह सिञ्चित पौध की ही भाँति तुरन्त स्फूर्ति, तृप्ति, ऊर्जा और आनन्द से भर उठता है। यही कारण है कि पेड़-पौधों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की निराई, गुड़ाई, सिंचाई आदि में व्यस्त रहने को मानसिक स्वास्थ्य की सर्वोत्तम औषधि बताया गया है। सिंचित जल के प्रभाववश बीजों का अंकुरण, भूमि में दबी जड़ों-कन्दों का अंकुरण, वृक्ष में नयी कोंपलों का उगना और उनका तेजी से बढ़ना, मन की बड़ी से बड़ी निराशा को मारने की महौषधि है।

वृक्षमित्र पुरस्कार से सम्मानित वन अधिकारी श्री डी. एस. नेगी उदास व निराश लोगों को पौधशाला में जाकर अंकुरित होते बीज और बढ़ते हुए पौधों को देखने के लिए प्रेरित करते थे। चिकित्सा विज्ञान में मानसिक रूप से टूट चुके रोगियों को तेजी से अंकुरित, विस्तरित एवं पल्लवित होती वनस्पतियों को दिखाने का प्रयास किया जाता है।

पेड़ हमारे जीवन रक्षक मित्र

- पेड़ ग्रीनहाउस इफैक्ट से संरक्षित रखते हैं। पेड़ प्रदूषण कारक तत्त्वों यथा-NO_2, SO_2, O_3, NH_3 (अमोनिया) एवं कार्बन डायऑक्साइड (CO_2) का अवशोषण करते हैं। एक एकड़ भूमि पर अवस्थित पेड़ प्रति वर्ष 62,000 मील कार चलाने से उत्पन्न CO_2 को अवशोषित करते हैं। और 18 मनुष्यों के लिये आवश्यक पर्याप्त ऑक्सीजन प्रदान करते हैं।
- पेड़ हमारे घरों, गलियों एवं शहर-ग्राम में तापमान को सन्तुलित बनाये रखते हैं। ऐसा अनुमान लगाया गया है कि पर्याप्त पेड़ हमारे शहर के तापमान को प्रायः 10 डिग्री फोरेनहाइट कम कर देते हैं।
- पेड़ ऊर्जा की भी बचत करते हैं। ए. सी. एयर कण्डीशनिंग में जो ऊर्जा व्यय होती है, पेड़ लगाने से वह ऊर्जा 50 प्रतिशत तक कम हो सकती है; क्योंकि पेड़ कार्बन डायऑक्साइड और अन्य प्रदूषक तत्त्वों को भी कम कर देते हैं।
- यह अल्ट्रावॉयलेट किरणों से हमारी रक्षा करते हैं, जो स्किन कैंसर का कारण हैं।
- पेड़ों से हमारे भोजन की पूर्ति भी होती है, फलदार पेड़ न केवल मनुष्यों के लिए, बल्कि पक्षियों एवं वन्य जीवों आदि के लिए भी भोजन आहार उपलब्ध कराते हैं।
- औषधि, फल-फूल, ईंधन एवं फर्नीचर के लिए लकड़ी आदि प्रदान कर वृक्ष हमारी आर्थिक समृद्धि बढ़ाने में सहायक हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

- वृक्ष हमारी हर अवस्था में, हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। अत: ये सदैव देते रहने वाले बड़े उदार मित्र एवं शिक्षक हैं।
- पेड़ हमें एकता का सन्देश देते हैं। यह विभिन्न मत, सम्प्रदाय, जाति एवं वर्ग के लोगों को, सबको बिना किसी भेदभाव के अपने फल, छाया एवं आश्रय आदि प्रदान करते हैं। यहाँ तक कि अपने काटने वाले को भी।
- हम पेड़ों के बिना अपने अस्तित्व के विषय में सोच भी नहीं सकते। पेड़ों से ही शरीर रक्षा, भोजन, स्वास्थ्य, शुद्ध वायु, आदि सब कुछ मिलता है।

मृदा के प्राकृतिक स्वरूप को बनाये रखने में सहायक

वृक्षों की जड़ें जमीन में गहराई तक जाती हैं और मृदा को वर्षा के प्रवाह में बह जाने से उसे रोके रहती है। वृक्ष न हों, तो वर्षा का पानी न तो जमीन के भीतर रुकेगा और न पकड़ के अभाव में मिट्टी यथास्थान टिकी रहेगी, बहकर नदी-नालों में चली जायेगी और भूमि की उपजाऊ ऊपर वाली परत न रहने पर न तो कृषि ठीक तरह फसल देगी और न जमीन में घास-पात उगेगी। मिट्टी वर्षा के पानी के साथ बहकर जब नदी-नालों में जाती है, तो उनकी सतह और ऊपर उठती जाती है। गहराई कम होने पर पानी समतल भूमि में फैलता है और बाढ़ आने की स्थिति बन जाती है। इस बाढ़ में फसल बह जाती है और खेत कहीं से कहीं जा पहुँचते हैं, बालू-रेत से भर जाते हैं।

वृक्षों के पत्ते तथा फल-फूल टूट-टूट कर जमीन पर गिरते रहते हैं। वे सूखते और सड़ते रहते हैं, उनकी खाद बनती रहती है। इस प्रकार जमीन को वृक्ष ऊपर से खाद बरसाते हैं और जड़ों से दूर-दूर तक नमी रोके रहने के कारण पानी देते रहते हैं। हरीतिमा अपने आप बनी रहती है और नये पेड़-पौधे उगते-बढ़ते रहते हैं, किन्तु यदि वृक्षों को ईंधन या फर्नीचर के लिए बेहिसाब काटते रहें और उनके स्थान पर नये पेड़ न उगायें, तो उसके प्रतिफलस्वरूप सारे क्षेत्र की भूमि ऊसर और खाली दीखने लगेगी। पुराने पेड़ कटते चलें और नये उगाये न जायें, तो उस अभाव के कारण लकड़ी दिन-दिन कम होती चली जायेगी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वर्षा एवं जल संरक्षण में सहायक

जीवन के लिए दूसरा परम आवश्यक तत्त्व जल है। सूर्य जल को तपाकर बादल बनाता है, तो हरियाली उसे आकर्षित कर पूरे विश्व में बरसाती है। हरियाली ही जल चक्र का मुख्य घटक है। जहाँ वृक्ष हैं - वहाँ वर्षा है, वर्षा है तो जल है और जल है तो फसल है। नदियों का प्रवाह पेड़ों के कारण ही अविरल रहता है। पेड़ों की जड़ें वर्षा जल को सोखकर धीरे-धीरे विसर्जित करती हैं, जिससे कुएँ, तालाब, नदियों का जीवन बढ़ता रहता है। हरियाली घटी तो नदियाँ सूखने लगीं, सरोवर, तालाब सूखने लगे। परिणामतः धरती का जल स्तर निरन्तर नीचे गिरता जा रहा है।

वृक्षों का चुम्बकत्व आकाश से बादलों को खींचता है और बरसने के लिए विवश करता है। वृक्षों की जड़ें नीचे जमीन में जाती हैं, जो अपनी पकड़ के कारण वर्षा का पानी उस भूमि में रोके रहती हैं, फलतः उस क्षेत्र में उगने वाले पेड़-पौधों को खुराक मिलती रहती है। यदि पेड़ न हों तो समतल भूमि का पानी सर्राटे से बहकर नदी-नालों में चला जाता है। जमीन एक-दो महीने में ही सूख जाती है। कुओं का, झरनों का, तालाब-बावड़ियों का पानी तभी अधिक दिन टिकता है, जब पेड़ों की जड़ें ऊपर की सतह को गीली रखती है, अन्यथा कुएँ सूख जाते हैं, उनका पानी गहराई में उतर जाता है। जिसके कारण मनुष्यों और पशुओं को पानी का त्रास सहना पड़ता है।

जिन क्षेत्रों के वृक्ष कट जाते हैं, वहाँ वर्षा का अनुपात भी बहुत कम हो जाता है। लीबिया अब से 120 वर्ष पहले हरीतिमा से भरा हुआ था। तब वहाँ वर्षा भी खूब होती थी और घास के सहारे पशु भी पलते थे। इस बीच वहाँ के जंगल कट गये। कीमती लकड़ी यूरोप चली गयी। वीरान क्षेत्र में वर्षा बन्द हो गयी और बहुत बड़ा इलाका रेगिस्तान बन गया। इस अभाव के कारण वहाँ कितनी दरिद्रता बढ़ी होगी, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

कभी भारत का चेरापूँजी दुनिया में सर्वाधिक वर्षा के लिये जाना जाता था। पर अब वर्षा के चार महीने छोड़कर चेरापूँजी में पानी की भारी किल्लत रहती है। वहाँ सालभर में औसतन 9150 मिमी. वर्षा होती है, किन्तु पेड़ों की अन्धाधुन्ध कटाई एवं जल संरक्षण के उपायों के अभाव के चलते पानी बह जाता है, साथ में कीमती मिट्टी भी अपने साथ बहा ले जाता है। अब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वहाँ पहले जैसी वर्षा भी नहीं होती, जिसके परिणामस्वरूप वहाँ की जलवायु में परिवर्तन आया है और बहुत सी स्थानीय वनस्पतियाँ समाप्त हो रही हैं। जब से वहाँ की प्रकृति का दोहन बढ़ा है, तब से यह हालत हुई है।

केरल प्रान्त में भी काफी वर्षा होती है, लेकिन पिछले दिनों यहाँ की भारतपूजा नदी का सूखना खूब चर्चा का विषय बना। बारहों मास सदानीरा बहने वाली यह नदी पिछले दस वर्षों में लगभग सूख चुकी है। इसका मुख्य कारण है, नदी के तटीय वनों की अन्धाधुन्ध कटाई, लिफ्ट सिंचाई और मलमपूजा बाँध का बनना। इस तरह हजारों लोग आज इस नदी के पानी से वंचित हो गये हैं। अब वहाँ 'भारत पूजा बचाओ' आन्दोलन शुरू हो गया है।

भारत के बहुत से राज्यों की कुछ ऐसी ही दशा है। खेती, नगरों एवं औद्योगिक विकास आदि के नाम पर करोड़ों-करोड़ वृक्ष काट दिये गये और अब किसान के पास खेती के लिये जल उपलब्ध नहीं हो रहा तो कहीं पीने के पानी के लिये भी तरसना पड़ रहा है। यदि आप रेलगाड़ी से सफर कर रहे हैं तो खिड़की से बाहर झाँकने पर राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, उड़ीसा आदि प्रदेशों में मीलों तक कोई वृक्ष दिखाई नहीं पड़ता। खेत हैं, पर जल के अभाव से वर्षा होने पर ही खेती होती है। जहाँ कहीं भूमिगत जल का इस्तेमाल किया भी जा रहा है तो वहाँ भी अब जलस्तर बहुत नीचे गिर जाने के कारण कुएँ, ट्यूबवेल आदि सूख रहे हैं।

पशु-पक्षियों एवं असंख्य जीव-जन्तुओं के आश्रयदाता

प्रतिदिन पशु-पक्षियों, कीड़े-मकोड़ों की सैकड़ों प्रजातियाँ विलुप्त हो रही हैं। वे जिन पेड़ों से भोजन पाते थे, जिनके बीच रहते थे, अपना आशियाना बनाते थे, उनका ही अस्तित्व समाप्त होता जा रहा है, तो पशु-पक्षी, कीट-पतंगे कैसे बचेंगे? ध्यान रहे कि इन पशु-पक्षियों और कीड़े-मकोड़ों की भी पर्यावरण सन्तुलन में बहुत बड़ी भूमिका होती है।

पक्षी पेड़ों पर ही रहते हैं। वे कितने ही उपयोगी काम करते हैं। एक तो यह कि फसल को नष्ट करने वाले कीड़े-मकोड़े खाते रहते हैं और फसल को क्षति से बचाते हैं। दूसरे यह कि अपने पंजों और पैरों के स्पर्श से जो पराग चिपका लेते हैं, उसे अन्य पेड़ पर बैठते समय मादा जाति के फूलों पर छिड़क देते हैं। फलस्वरूप उनको अच्छी तरह फलने का अवसर मिलता है। यदि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पक्षी इस कार्य को न करें तो नर पराग के अभाव में उनका फलना रुक जायेगा। छोटे फूल पौधों का पराग- प्रत्यावर्तन मोरों, तितलियों, मधुमक्खियों व अन्य कीट-पतंगों द्वारा होता है। इसलिए फूलने के बाद वे फल और बीज भी देते हैं। यह कार्य पेड़ों के फूलने के समय पक्षी व कीट-पतंगे करते हैं। उनके फलने का श्रेय इन सबको ही है। पक्षी पेड़ों पर ही घोंसले बनाते हैं। वे दूर-दूर तक उड़ते हैं और अपनी बीट के साथ पर्वतीय एवं सुनसान क्षेत्रों में बीज गिरा देते हैं। फलतः उन क्षेत्रों में भी हरीतिमा उगने लगती है, जहाँ मनुष्य का आवागमन नहीं होता। समुद्री टापुओं में जो वृक्ष-वनस्पति पायी जाती है, उसे पक्षियों द्वारा बोया गया ही समझना चाहिए।

अन्य पशु पेड़ों की छाया में ही सर्दी, गर्मी और वर्षा की भयंकरता से अपना बचाव करते हैं। इसलिए पेड़ न केवल पक्षियों के लिए, वरन् पशुओं के लिए भी आश्रय-स्थल है। हिरण, लोमड़ी, खरगोश, सियार आदि जंगलों में ही खुराक एवं आश्रय प्राप्त करते हैं। उनके मल-मूत्र, हड्डी, चमड़ा आदि से वन-प्रदेश को कीमती खाद मिलती है और वह क्षेत्र सदा हरा-भरा रहता है। वन्य पशु जहाँ अपनी खुराक जंगलों से प्राप्त करते हैं, वहाँ बदले में उस क्षेत्र को कीमती खाद भी देते रहते हैं। सभी विचारशील देशों में प्रायः एक तिहाई जमीन वन लगाने के लिए छोड़ी जाती है। वे जानते हैं कि लकड़ी के लोभ में यदि उस क्षेत्र की सफाई कर डाली गयी और खेत बना लिये गये, तो इस छोटे लाभ के बदले जो हानि उठानी पड़ेगी, वह कहीं अधिक होगी। वनों की मिट्टी बह जायेगी और वहाँ खड्डे-खंदक पढ़ जायेंगे। जिनमें चोर डाकू मजे में आश्रय प्राप्त करते रहें। जमुना और चम्बल के इर्द-गिर्द पेड़ों को लगाने या बढ़ाने को प्रयत्न नहीं किया गया, फलतः किनारों के आस-पास ही लाखों एकड़ जमीन खड्ड-खंदकों से भर गयी और उन इलाकों में छिपने की सुविधा होने के कारण डाकुओं की असाधारण बढ़ोत्तरी हो गई। उनके भय से खुशहाल किसान और व्यापारी जान बचाने के लिए शहरों में चले गये।

दुधारू पशुओं को जंगल-चरागाह में चरने भेजते रहने की सुविधा होने पर एक ग्वाला बीसियों पशुओं को चरा लेता है और उनके लिए खुराक की अतिरिक्त व्यवस्था नहीं करनी पड़ती। जहाँ यह सुविधा नहीं है, वहाँ घर में बाँध कर जानवर पालने पड़ते हैं और खरीदा हुआ चारा लेने पर वे बहुत महँगे पड़ते हैं। अनुपयोगी पशुओं व शिशु-जानवरों का पालन तो एक प्रकार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से अति कठिन ही हो जाता है। फलतः वे कसाई के यहाँ चले जाते हैं। इस प्रकार पशु घटते जाने से बैल-गाय आदि सभी की कीमतें बढ़ती हैं और दूध-घी जैसे खाद्य पदार्थों के दाम आकाश चूमने लगते हैं। गरीबों के बच्चे इतना महँगा दूध न पा सकने के कारण अत्यन्त दुबले रह जाते हैं और अकाल मृत्यु का शिकार बनते हैं। यदि जंगल चरागाह बने रहते, तो पशुओं की इतनी कमी न पड़ती। दूध के अभाव में बच्चों को दुर्बलता, रुग्णता और अकाल मृत्यु का ग्रास न बनना पड़ता।

भू-क्षरण, भू-कटान की रोकथाम में सहायक

मौसम विज्ञानी बताते हैं कि भारत के जलवायु की विशेषता उसके मानसून पर अवलम्बन के कारण नहीं, अपितु हिमालय पर आच्छादित जल से भरे बादलों को आकर्षित कर वापस मैदानी इलाकों पर बरसने को विवश कर देता है। यदि ये वृक्ष ही न रहेंगे, तो बादल नहीं बरसेंगे एवं मौसम की अनियमितता उत्पन्न होती चली जायेगी। दूसरे, वृक्षों के न रहने से भूमि का जो कटाव होता है, उससे नदियों में बाढ़ आने के अवसर बढ़ते चले जाते हैं। नदियों में प्रतिवर्ष बह-बहकर पहाड़ों से जो मिट्टी आती है, वह धीरे-धीरे उन्हें छिछला बना देती है। ये नदियाँ प्रतिवर्ष वर्षा आते ही अपने तटबन्ध तोड़कर विनाश-लीला मचाती हैं एवं करोड़ों रुपये की हानि व जनसंहार करती हैं। गंगा नदी से लेकर ब्रह्मपुत्र तक सभी उत्तर भारत की नदियों का उद्‌गम स्त्रोत हिमालय रहा है। 2525 कि. मी. लम्बी गंगा नदी एवं लगभग 14000 कि. मी. लम्बी इसकी सहायक नदियों (यमुना, रामगंगा, कोसी, गंडक, घाघरा, गोमती, सोन) में बाढ़ आते रहने के कारण एक सर्वेक्षण के अनुसार प्रतिवर्ष तीन सौ करोड़ से भी अधिक रुपयों की हानि होती है।

भू-क्षरण से हानि ही हानि

पृथ्वी तल से अड़तीस सौ करोड़ टन मिट्टी तथा रासायनिक लवण बहकर समुद्र में चले जाते हैं। इसी सतही मिट्टी में कृषि सहायक मृदा रसायन एवं असंख्यों जीवाणु होते हैं, जिनकी पूर्ति किसी भी कृत्रिम रासायनिक खाद से सम्भव नहीं है। यदि इस हानि को रोक लिया गया होता तो बंजर पड़ी भूमि को उर्वर बनाने के अतिरिक्त इस भूमि से किसी खाद की मदद लिये बिना ही कई गुना अधिक खाद्यान्न उत्पन्न किया जा सकता था। मात्र गंगा क्षेत्र में ही लगभग 4 करोड़ पचास लाख एकड़ से. मी. मिट्टी का ह्रास प्रतिवर्ष हो रहा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह मृदा उतनी ही है, जितनी पूरे उत्तरप्रदेश की कृषि योग्य भूमि (लगभग 2 करोड़ 80 लाख हेक्टेयर)। इस प्रत्यक्ष हानि को देखते हुए भी जंगलों की अन्धाधुन्ध कटाई अदूरदर्शिता ही दर्शाती है। कृषि विशेषज्ञों के अनुसार खेती योग्य मिट्टी की सतह केवल 8 इंच अर्थात् 20 से. मी. होती है। इसमें नाइट्रोजन, पोटाश एवं फॉस्फेट के अतिरिक्त 13 अन्य सूक्ष्म तत्त्व तथा असंख्यों जीवाणु होते हैं। भूक्षरण से ये नष्ट होते हैं एवं सारी जमीन बेकार हो जाती है। इस प्रकार अब तक पूरे देश में लगभग 45 करोड़ 50 लाख एकड़ भूमि भूक्षरण से बर्बाद हो चुकी है। एक करोड़ 45 लाख एकड़ भूमि अम्ल, क्षार तथा जल प्लावित होने के कारण बेकार पड़ी है। 5 करोड़ एकड़ भूमि की बाढ़ के कारण क्षति मात्र इसलिए होती है कि पानी का निकास नहीं है।

प्रकृति चक्र सन्तुलन एवं ग्लोबल वार्मिंग कम करने में सहायक

वृक्ष पानी को पत्तियों से वाष्पोत्सर्जित करते हैं, जिसके प्रभाववश इनके चारों ओर शीतल, नम वातावरण बन जाता है। एक परीक्षण के दौरान वन अनुसन्धान संस्थान देहरादून परिसर में अरेकेरिया वृक्षों के नीचे भूतल पर लू के दिनों में बाहर की तुलना में तापक्रम 14.4 डिग्री सेल्सियस कम पाया गया। लू के दिनों में भरी दोपहरी में भी आप किसी छायादार वृक्ष के नीचे या बाग-बगीचे में चले जायें तो वहाँ का वातावरण ठण्डक और शीतलता से भरा होता है। जो शरीर और मन दोनों को ही ताजगी और सुकून से भर देता है। भगवान् के बनाये ये प्राकृतिक कूलर, घरेलू कूलर से सैकड़ों गुना अधिक शक्ति, ताजगी और प्रफुल्लता देते हैं। जहाँ घरों के आसपास पीपल, बरगद आदि के पेड़ होते हैं, वहाँ गर्मियों में उस गाँव या मुहल्ले वालों पर लू का असर नहीं होता। आपके घर से सैकड़ों मीटर की दूरी पर यदि पीपल का कोई बड़ा वृक्ष जल से तृप्त है, तो विश्वास करें, आपके क्षेत्र में किसी को लू नहीं लगेगी। इतने भर से ही हम समझ सकते हैं कि वृक्ष तापमान के नियंत्रण में कितनी बड़ी भूमिका निभाते हैं।

जंगलों के अन्धाधुन्ध कटान, बढ़ती जनसंख्या, वाहनों के धुएँ और औद्योगीकरण आदि के चलते जो गर्मी पैदा हो रही है, वह वायुमण्डल में जमा हो रही है। दिनोंदिन बढ़ रही यह गर्मी आज वैज्ञानिकों की चिन्ता का विषय बनी हुई है। उनके अनुसार यह इसी प्रकार बढ़ती रही तो हिमखण्ड तेज गति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से पिघल जायेंगे और समुद्रों का जल स्तर बढ़ने से समुद्र किनारे बसे शहर डूब जायेंगे। लगभग आधी दुनिया समाप्त हो जायेगी। शेष लोग प्राकृतिक असन्तुलन की मार से मर जायेंगे। हर वर्ष कहीं लू की चपेट में आकर तो कहीं शीत लहर से, कहीं बाढ़, भूस्खलन तो कहीं बादल फटने से केवल भारत में ही कितने लोग मर जाते हैं। शेष विश्व में भी कमोबेश ऐसी ही परिस्थितियाँ हैं।

वैज्ञानिक अब स्वीकार कर चुके हैं कि मौसम को सुव्यवस्थित रखने में वनों की अहम भूमिका है। यदि पेड़ घटते जायेंगे, तो उस क्षेत्र का मौसम गड़बड़ाने लगेगा, वर्षा घट जायेगी और सर्दी-गर्मी अधिक पड़ने लगेगी। जिससे भूमि धीरे-धीरे मरुस्थल में परिवर्तित होने लगती है। इसका मनुष्य के शारीरिक और मानसिक दोनों ही स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है, पशु दुर्बल होते जाते हैं और उनकी श्रम शक्ति तथा दूध देने की क्षमता घट जाती है। दुर्बल और रोगी, मनुष्य तथा बच्चे इस असन्तुलन को बर्दाश्त नहीं कर पाते, फलतः उनके लिए जीवन का संकट खड़ा हो जाता है।

व्यक्ति एवं राष्ट्र की आर्थिक सम्पन्नता में सहायक

वनस्पति शास्त्र के विशेषज्ञों के अनुसार एक वृक्ष अपने 50 वर्ष के जीवनकाल में जितनी सेवा करता है, उसकी कीमत रुपयों में जोड़ने पर एक करोड़ से भी अधिक बैठती है। वृक्ष की इन परोक्ष सेवाओं का मूल्यांकन न करके सामान्यतः लकड़ी एवं फलों से प्राप्त होने वाले कुछ सौ रुपयों में ही उसकी कीमत आँकी जाती है। एक वृक्ष 50 वर्ष की अवधि में जो ऑक्सीजन, भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ाने हेतु उर्वरक, प्रदूषण नियंत्रण का कार्य, आर्द्रता रोकने, वर्षा कराने तथा खाद्य प्रोटीनों जैसी अनेकों उपलब्धियाँ प्रस्तुत करता है। उसकी इन सेवाओं की कीमत यदि रुपयों में आँकी जाये, तो यह एक करोड़ एक लाख रुपये से भी अधिक होगी।

एक वृक्ष काटने से अधिक से अधिक बीस हजार रुपये कीमत की जलाऊ तथा अन्य निर्माण योग्य लकड़ी प्राप्त होती है, किन्तु उसके बने रहने से प्रतिवर्ष 2 लाख रुपये की स्वच्छ ऑक्सीजन, उर्वरक, पानी और वायु प्रदूषण निवारण का अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त होता है। कटाई का अर्थ होगा, लम्बे समय तक प्रतिवर्ष 2 लाख रुपये के लगभग का जो योगदान प्रकृति सन्तुलन के रूप में मिल सकता था, उससे वंचित रह जाना।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एक वृक्ष के अनुदान (50 वर्ष में)

1.	प्राण वायु (Oxygen)	5,00,000 रु.
2.	वायु प्रदूषण नियंत्रण एवं भूमि की उत्पादकता वृद्धि (Air Pollution control & Improvement in Soil Fertility)	31,00,000 रु.
3.	भूमिक्षरण नियंत्रण (Soil Erosion control)	15,60,000 रु.
4.	जल संरक्षण (Water Conservation)	18,80,000 रु.
5.	पशु पक्षियों का आश्रय (Wildlife Shelter)	16,60,000 रु.
6.	काष्ठ, फल, चारा (Wood, Fruits & Fodder)	4,00,000 रु.

कुल योग- **1,01,00,000**

(एक करोड़ एक लाख रुपये)

यह तो एक वृक्ष की बात हुई। प्रकृति प्रदत्त वृक्ष-सम्पदा से मिलने वाले कुल भौतिक अनुदानों का लेखा-जोखा लेने पर ज्ञात होता है कि इस सृष्टि में जितनी सेवा ये वृक्ष मुफ्त में करते हैं, उतनी मनुष्य कभी नहीं कर सकता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

3. इकॉलॉजी वैज्ञानिकों की चिन्ता

प्रकृति के विभिन्न घटकों के परस्पर सम्बन्धों का जब चेतना के धरातल पर परिस्थिति के अन्तर्गत अध्ययन किया जाता है, तो उसे इकॉलॉजी विज्ञान कहते हैं। इन सिद्धान्तों के अनुसार वनस्पति जगत्, प्राणि-समुदाय को न केवल पोषण एवं प्राणवायु देता है; अपितु इन दोनों का परस्पर सन्तुलन सारी सृष्टि के स्थायित्व के लिये अनिवार्य माना जाता है। जर्मनी के दो प्रमुख वैज्ञानिकगण ऑगस्ट थाइनेमन एवं कार्ल फ्रैडरिक के अनुसार प्रकृति जगत् के अन्दर दृष्टिगोचर हो रही इस सन्तुलित व्यवस्था का नाम ही इकालॉजी है। इन वैज्ञानिकों के अनुसार हवा, बादल, तड़ित, विद्युत, जल, पृथ्वी, मिट्टी व भूमण्डल में स्थिति प्राणी, वनस्पति, सड़ने वाले पदार्थों आदि का परम्परावलम्बन नोषजन चक्र (Nitrogen Cycle) नामक जैविक हलचल में भली-भाँति देखा जा सकता है। वर्षा का सन्तुलन, भूमि के कटाव को रोकना, जलाऊ ईंधन, कृमिकीटक खाकर फसल की रक्षा करने वाले पक्षियों को आश्रय, फल-फूल प्रदान करना तथा गिरने वाली पत्तियों से खाद बनाकर भूमि की उर्वरकता में वृद्धि-ये कुछ ऐसे अनुदान वृक्ष-वनस्पतियों के जीव-जगत् को हैं कि इन्हें जीवन निर्वाह का प्राण कहा जाना ही उचित होगा।

एक समय था, जब पृथ्वी का दो-तिहाई भाग वनों से आच्छादित था। सारा प्राणिजगत् प्राकृतिक सुषमा के बीच आनन्दमय जीवन बिताता था। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती चली गई, वन कटते चले गये। जनवृद्धि के अनुपात में बढ़ती आवश्यकताएँ, अन्नोत्पादन के लिए जरूरी अधिक भूक्षेत्र एवं उद्योगों के अपरिमित विस्तार के कारण वनों का स्थान ले लिया-शहरों ने, खेतों ने एवं कल-कारखानों ने। आँकड़े बताते हैं कि 50 वर्ष पूर्व विश्व में बारह अरब अस्सी करोड़ हैक्टेयर भूमि पर जंगल छाये थे। आज केवल 16 प्रतिशत (भू-भाग 2 अरब हेक्टेयर) पर ही वन हैं। पारिस्थितिकीय विशेषज्ञ (Environmental Scientist) बताते हैं कि इसका कारण है - अदूरदर्शितापूर्ण ढंग से अन्धाधुन्ध जंगलों का कटना। उनके अनुसार, सभी जीवधारियों के लिए इस पृथ्वी पर स्वच्छ वायु उपलब्ध कराने एवं पर्यावरण का सन्तुलन बनाये रखने के लिए धरती का तैंतीस प्रतिशत भाग वनों से ढँका होना चाहिए। एक वृक्ष को पनपने में 10 वर्ष से भी अधिक समय लग जाता है, जबकि उसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

काटने में मात्र 10 मिनट लगते हैं। राष्ट्रीय वन नीति द्वारा निर्धारित मापदण्डों के अनुसार भी पर्वतीय क्षेत्र का 60% भाग एवं मैदानी क्षेत्रों का कम से कम 35% भाग वनाच्छादित होना चाहिये, तभी भूमि को मरुस्थल बनने से बचाया जा सकता है। पर वर्तमान में यह अनुपात क्रमश: 45% एवं 16% तक आकर सिमट गया है एवं बढ़ते औद्योगीकरण की दर से और भी कम होने की सम्भावनायें दीखती हैं। इस वन विनाश से और नये वृक्ष लगाने के प्रति निरुत्साह से पारिस्थितिकी में जो असन्तुलन उत्पन्न हुआ है, उसने जन स्वास्थ्य व मौसम से लेकर अनेकानेक सामाजिक व आर्थिक समस्यायें उत्पन्न कर दी हैं।

इन समस्याओं के समाधान हेतु इण्डोनेशिया में यूनेस्को के तत्त्वावधान में 150 वैज्ञानिकों की एक अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी आयोजित की गई थी। इस समागम में भारत, जापान, आस्ट्रेलिया, नीदरलैण्ड्स, कनाडा, अमेरिका व ब्रिटेन के जाने-माने इकॉलाजिस्ट एवं वन विशेषज्ञों ने भाग लिया। कनाडा के विशेषज्ञ ब्लादीमिर कजीना, जो इस सम्मेलन के अध्यक्ष भी थे, ने अपनी समापन टिप्पणी में चेतावनी देते हुए कहा था कि "यदि वृक्ष नहीं रहेंगे तो मनुष्य भी नहीं रहेगा"। उनके अनुसार "अमेरिका में लू, रशिया में बाढ़, मौसम का अत्यन्त अनियमित हो जाना, जगह-जगह महामारियाँ फैलना एवं असाध्य रोगों में वृद्धि का कारण वन सम्पदा का निर्मम विनाश ही है। यदि समय रहते चेता न गया तो वही स्थिति होगी, जो सहारा रेगिस्तान की हुई है"।

"सहारा कॉनक्वेस्ट" के लिए प्रसिद्ध वन विज्ञानी लिखते हैं कि- सहारा रेगिस्तान की 20 लाख वर्गमील भूमि कभी बहुत ही हरी-भरी थी, पर लोगों ने अपनी नासमझी से इसे उजाड़ दिया। तेज गर्म हवाओं व सीधी पड़ने वाली सूर्य की किरणों ने अच्छी खासी उपजाऊ जमीन को बंजर बना दिया। मात्र यहीं तक होता तो एक बात थी, यह विशाल रेगिस्तानी भूखण्ड अब अपनी निकटवर्ती हरी-भरी जमीन को भी प्रति वर्ष 30 वर्गमील की तेज गति से किसी विशाल अजगर की भाँति निगलता चला जा रहा है। प्रति वर्ष इतनी जमीन सहारा मरुस्थल की चपेट में आकर सदा सर्वदा के लिये अपनी उपयोगिता खो देती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

4. जंगल नहीं रहे तो मनुष्य भी नहीं रहेगा

मनुष्य की सभ्यता के विकास में पूर्वजों ने-बुजुर्गों ने-विद्वानों ने तीन चरण माने हैं। 1. जंगल प्रधान सभ्यताओं का दौर, 2. जंगलों पर नियंत्रण कर रही सभ्यताओं का दौर, 3. वे सभ्यताएँ, जो जंगलों के ऊपर पूरी तरह हावी हो चुकी हैं। भारत सरकार के एक बड़े वन अधिकारी जनरल नारायण बचखेती एक बार अपने सामने 'जंगल कटाई बनाम जंगल उगाई' का नक्शा बड़े गौर से देख रहे थे। नक्शा देखकर उन्होंने लिखा, "मुझे बड़े दुःख से कहना पड़ रहा है, हमारा देश तीसरे चरण से गुजर रहा है। जिसमें केवल जंगलों का ही नहीं, बल्कि सभ्यताओं का भी विनाश होने का डर पैदा हो चुका है।"

जंगलों का व्यवस्था क्रम और मनुष्य को उनकी देन के बारे में दरअसल हम गहराई से जानते ही नहीं। जंगल हमें दो प्रकार के लाभ देते हैं-प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष। प्रत्यक्ष लाभों के लिए तो हमने होड़ मचाई हुई है, परन्तु जीवन को सम्भव बनाने वाले अप्रत्यक्ष लाभों के बारे में हमें तभी होश आया है, जब जंगल समाप्ति के कगार पर हैं। जंगलों के अप्रत्यक्ष लाभ गहराई से चिन्तन करने पर ही समझ आते हैं। जंगल मिट्टी की संरचना गढ़ने वाले कारखाने हैं। ये जीवों के लिए ऑक्सीजन और खाद्य पदार्थ देने वाली कपिला गाय हैं। ये वर्षा को प्रेरित करते हैं, इसलिए नदियों के जन्मदाता भी हैं। वर्षा ही पानी का प्रमुख स्रोत है। वर्षा और जंगलों में परस्पर चोली-दामन जैसा रिश्ता है।

दक्षिण भारत की अधिकतर नदियों के उद्‍गम स्थान घने जंगल ही हैं। जंगल जल को हमारे उपयोग, पीने और सिंचाई के सुरक्षित भाण्डागार की तरह अपनी जड़ों द्वारा सँभाल लेते हैं। ये मिट्टी के कटान को भी रोकते हैं। भारत सरकार के वन आँकड़े बताते हैं कि पिछले कुछ दशकों में जंगली क्षेत्र लगातार घट रहा है। धरती भूरी और वृक्ष रहित होती जा रही है। भूक्षरण की समस्या में भी निरन्तर वृद्धि हो रही है। भू-विशेषज्ञ कमला चौधरी ने चेतावनी दी है कि यही स्थिति रही तो आने वाले दो दशकों में गंगा का मैदान मरुस्थल बन सकता है। पर्यावरण विशेषज्ञों के अनुसार प्रतिवर्ष हजारों टन मिट्टी की ऊपरी परत वर्षा के पानी के साथ बह जाती है, जिसके कारण अभी तक देश

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की 10% कृषि योग्य भूमि वीरान हो चुकी है और इसमें निरन्तर वृद्धि हो रही है। यह क्षेत्र हमारी वास्तविक जरूरत का आधा अनाज पैदा कर सकता है। हमारी लगभग 45% भूमि भूक्षरण की चपेट में आ चुकी है। जिसे तुरन्त मृदा एवं जल संरक्षण उपचार की आवश्यकता है। भूक्षरण के कारण नदियों में भी गाद (silt) बढ़ती जा रही है। जिससे देश की प्रमुख नदी घाटी योजनाओं पर बुरा प्रभाव पड़ा है। ये योजनाएँ देश के लिए आधे से अधिक बिजली और एक चौथाई सिंचाई प्रदान कर रही हैं। जैसे-जैसे गाद द्वारा तबाही के आँकड़े सामने आ रहे हैं। वैसे-वैसे संभावित बर्बादी की आशंकाएँ और भयानक होती जा रही हैं। भाखड़ा बाँध के निर्माण के समय उसकी आयु 500 वर्ष आँकी गयी थी। विशेषज्ञों के अनुसार गाद की समस्या के कारण मात्र 60 वर्षों में ही उसकी आयु आधी रह गयी है।

सम्भावित खतरों को भाँपते हुए पर्यावरण विशेषज्ञ डॉ. एन. डी. ज्याल ने कठोर शब्दों में कहा है, 'दिल्ली और राज्य की राजधानियों के शीश महलों में बैठे लोग इस बात को जरा भी महसूस नहीं कर रहे कि हिमालय की ढलानों में गिरा एक वृक्ष या वहाँ का मामूली सा भूस्खलन भी मानवीय संकट को और गहरा कर जाता है।' वर्षों पूर्व आँकी गई डॉ. ज्याल की यह चिन्ता कितनी अर्थपूर्ण थी, इसका प्रमाण हैं- विगत वर्षों में हिमालयी क्षेत्र में हुई भू-स्खलन और बादल फटने की घटनाएँ, जो निरन्तर बढ़ रही हैं। वर्ष 2013 में केदारनाथ में हुए भू-स्खलन और बादल फटने से मची तबाही को शायद ही कोई भूल पाये।

शायद इतिहास से हम कोई सबक नहीं लेते। अपने ही हाथों उजाड़े राजस्थान की कहानी हम भूल गये हैं। किसी समय सब राज्यों का राजा 'सिरमौर' रहा राजस्थान कुछ सौ वर्षों में अपने हरे-भरे जंगलों के नष्ट हो जाने के कारण आज धूल उड़ा रहा है। इतिहास साक्षी है कि जिस भी सभ्यता ने अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिये प्रकृति का केवल दोहन किया, उसका संवर्धन और संरक्षण नहीं किया, उसका अन्त मरुस्थल के जन्म के साथ हुआ। वर्तमान में मरुस्थल कहे जाने वाले मोरक्को, अल्जीरिया और ट्यूनेशिया किसी समय रोमन शहनशाही के प्रसिद्ध अनाज क्षेत्र थे। मैसोपोटामिया, फिलिस्तीन, सीरिया और अरब के कुछ क्षेत्र उर, सुमेरिया, बेबीलॉन और असीरीया कई महान् बादशाहों के जाने-माने राज्य थे। कल का उपजाऊ

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परशिया आज का मरुस्थल है। सिकन्दर का हरा-भरा यूनान आज बंजर भूमि में तबदील हो चुका है। क्यों? क्योंकि इन सबने जंगलों के अन्धाधुन्ध कटान से अपनी धरती माँ के आँचल को तार-तार कर दिया। हमारी अपनी मोहनजोदड़ो और हड़प्पा सभ्यताओं का क्या हश्र हुआ?

कभी उपनिवेशवाद के जनक ब्रिटेन, फ्रांस और डच शासकों ने अपने क्षेत्रों में तो रेगिस्तान नहीं बनने दिये, किन्तु इन्होंने एशिया, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड और उत्तरी अमरीका की नौ आबादियों में प्राकृतिक सम्पदा का खूब दोहन किया। कीनिया, युगांडा और युथोपिया में वृक्ष-वनस्पतियों को इतनी बेरहमी के साथ काटा गया कि वहाँ की नील नदी के लिये ही खतरा पैदा हो गया। कभी दज़ला और फरात जैसी नदियों द्वारा सिंचित ईराक और असीरिया, जो मैसोपोटामिया के नाम से विख्यात सबसे हरे-भरे प्रदेश थे, जंगलों के उजड़ने और जल स्रोतों के सूखने के कारण आज रेगिस्तान बने हुए हैं।

ऐसी ही नासमझी के कारण राजस्थान की राजपूतानी रियासतें थार में तबदील हो गईं। आज राजस्थान को सर्वाधिक धूल वाला क्षेत्र माना जाता है। पिछले कुछ दशकों में यह रेगिस्तान 10% बढ़ गया है। निकट भविष्य में यही दशा गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक और आंध्रप्रदेश आदि राज्यों में भी पैदा हो जायेगी। क्योंकि अज्ञानता और मुनाफे के फेर में हमने प्रकृति की व्यवस्था में जबरदस्त दख़लअंदाज़ी की है। जंगलों का लगातार सफाया हो रहा है।

काश! कि हम जानते होते कि रेगिस्तान की छोटी-छोटी घास और कँटीली वनस्पतियाँ भी 179 से 543 मि. ग्रा. नमी एक दिन में उत्सर्जित करती है, जो थार की खुशक फिज़ा को नम बनाए रखने में अपनी अहम भूमिका निभाती है। जंगल का एक वर्ग किलोमीटर भू-भाग 20 से 50 हजार घन मीटर पानी अपनी जड़ों में हमारे लिये सँभाल कर रखता है। यह ऊर्जा के स्रोत हैं। औषधीय पौधों और कन्द-मूलों के भण्डार हैं। पशु-पक्षियों व करोड़ों जीव-जन्तुओं के आश्रयदाता हैं। नमी और अपने पत्तों की खाद से धरती माँ को तृप्त करते हैं। मृदा को ठण्डा, पोला और मित्र कीट प्रदान कर उसे उपजाऊ बनाते हैं। वायु का शोधन करते हैं। धरती के भूमिगत जल भण्डार में वृद्धि करते हैं। अपनी जड़ों का जाल बिछाकर मिट्टी को जकड़े रहते हैं और वर्षा जल के तेज बहाव के साथ बह जाने से रोकते हैं। मिट्टी की उपजाऊ परत जो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कृषि का आधार है, उसे बनाने और उसका संरक्षण करने में वृक्ष-वनस्पतियों का बहुत बड़ा योगदान है। बीती सदी में हमने प्रकृति के साथ जो खिलवाड़ किया है, उसके दुष्परिणाम हमारे सामने हैं। जितना उत्साह हमने उजाड़ने में दिखाया है, उससे दसगुना उत्साह पुनर्निर्माण में दिखाये बिना बात बनेगी नहीं। चयन हमें ही करना है-

प्रकृति के पालक या उसके विनाशक
वन रहित मरुस्थल या हरी-भरी धरती,
वृक्षों से संवाद या उनसे बेरुखी,
चहचहाते पक्षियों का कलरव या श्मशान की वीरानगी,
उपजाऊ भूमि के वरदान या वीरान रेगिस्तान,
कुदरत के अनुदानों से भरा दामन या खाली झोलियाँ
जल से भरे नदी-नाले या कंक्रीट के जंगल
नम ठण्डी हवाएँ या बदन झुलसाता तापमान
शुद्ध, सुगन्धित प्राणवायु या ज़हरीली हवाएँ
जन्म से लेकर श्मशान तक का साथ या...... ?
जल्दी करें इसका निर्णय आज ही...नहीं...अभी करना पड़ेगा,
क्योंकि...पहले ही बहुत देर हो चुकी है।

वृक्ष न रहे तो मनुष्य भी नहीं रहेगा। फिर यह बड़ी-बड़ी अट्टालिकाएँ किस काम की? प्रतिदिन लुप्त होती जाती वृक्ष-वनस्पतियों, जीव-जन्तुओं, पशु-पक्षियों की प्रजातियों की तरह मनुष्य भी लुप्त हो जायेगा। पहले ही वनों के कटान के कारण जीव-जन्तुओं, कीट-पतंगों आदि की 66,000 प्रजातियाँ खतरे में हैं, जिनमें से अधिकाँश लुप्त हो चुकी हैं।

कहीं ऐसा न हो जैसा कि हम अफ्रीका के सहारा रेगिस्तान के बारे में पढ़ते हैं। 'एक बहुत बड़ा वीरान....रेगिस्तान...वनस्पति रहित...तपती हुई भूमि...मृगतृष्णा....' यदि हम अभी भी नहीं सँभले तो 50 वर्ष बाद के विद्यार्थी भारत के विषय में भी कुछ ऐसा ही पढ़ा करेंगे।'20 वीं सदी के अन्त और 21 वीं सदी के प्रारम्भिक वर्षों तक भारत हरा-भरा और घनी आबादी वाला क्षेत्र होता था। यह दुनिया के अति आधुनिक और उन्नत कृषि वाले देशों में शामिल था। पर जनसंख्या की अनियंत्रित वृद्धि, नगरों, उद्योगों, बहुमंजिला इमारतों व

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अत्यधिक मुनाफे की होड़ ने जंगलों को निगल लिया। विकास के नाम पर अन्धाधुन्ध वन कटान हुआ। परिणामतः ऋतु चक्र गड़बड़ा गया। कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि। धीरे-धीरे वर्षा कम होती चली गई। भू-क्षरण और जल संकट बढ़ा। सूखा और अकाल पड़ने लगा। अन्ततः भूमि बंजर होकर थार मरुस्थल का हिस्सा बन गई। करोड़ों लोग भुखमरी का शिकार हो गये। आज यह उपमहाद्वीप मध्य ऐशिया के रेगिस्तान के साथ मेल खाता है। कहीं-कहीं नखलिस्तानों के आस-पास छोटे-छोटे गाँव हैं। यहीं थोड़ी-बहुत खेती होती है। लोग भेड़-बकरियाँ पालते हैं। यहाँ का मुख्य वाहन ऊँट है।'

संसार के अन्य देशों ने वन विनाश से होने वाली सम्भावित हानि को महत्त्व दिया है एवं हरीतिमा संवर्धन के लिए प्रभावशाली उपाय अपनाये हैं। स्कॉटलैण्ड के प्रसिद्ध वनस्पति विज्ञानी डॉ० रॉबर्ट चैम्बर्स के अनुसार "भूमि की उर्वरा शक्ति को घटने से रोकने, पशु-पक्षी सम्पदा को बचाने, बाढ़, सूखा, गर्मी, अकाल, महामारी के रूप में नजर आ रहे विनाश को रोकने के लिए वन सम्पदा का अभिवर्धन सबसे पहले जरूरी बात है। विशेषकर ट्रापिकल देशों को इस दिशा में पहल करनी चाहिए, क्योंकि पर्यावरण पर ही वहाँ की आर्थिक स्थिति अवलम्बित है।" जन-चेतना को जगाने का आह्वान करते हुए वे कहते हैं कि "इकॉलाजी किसी देश विशेष या महाद्वीप से सम्बन्धित नहीं है, वरन् सारे विश्व के नागरिकों को इसमें एकमत होकर सुझावपरक विधेयात्मक चिन्तन व कर्तव्य करना होगा।"

अन्य राष्ट्रों के प्रयास

दूसरे प्रगतिशील देशों ने कड़ाई के साथ वन-सम्पदा को नष्ट करने पर रोक लगा दी है। फिनलैण्ड में अब भी 66% भूमि में वन हैं। जापान जैसे औद्योगिक राष्ट्र, जहाँ कि ईंधन की अधिक आवश्यकता उद्योगों के लिए पड़ती है, में भी 62% क्षेत्रफल पेड़-पौधों से हरा-भरा है। रूस के कुल क्षेत्रफल के 34% तथा अमेरिका में 33% भाग में वन है।

जापान का भूक्षेत्र मात्र 3 करोड़ 61 लाख हैक्टेयर है, पर उसकी 2 करोड़ 50 लाख हैक्टेयर भूमि पर विशाल घने वृक्षों वाले जंगल हैं। उपलब्ध भूभाग पर ही कड़ी मेहनत कर जापानियों ने अपनी प्रति व्यक्ति वार्षिक आय 44170 रुपये तक पहुँचा दी है। इस राष्ट्र की कुल जमा पूँजी नौ हजार पाँच सौ चालीस अरब रुपये है, जो कि इस देश की समृद्धि का प्रतीक है। पर इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उसने अपनी वृक्ष सम्पदा एवं प्राकृतिक संसाधनों से छेड़खानी नहीं की है। समृद्धि, स्वास्थ्य एवं अनुशासन के धनी जापानी इसीलिए राष्ट्रीय चरित्र के क्षेत्र में बहुत ऊँचे हैं।

तस्मानिया ने भी इसी तरह समय रहते आँखें खोली हैं। वहाँ सतत वृक्षारोपण से 15 हजार एकड़ जमीन को रेगिस्तान के मुँह से निकाल लिया गया है। मध्य आस्ट्रेलिया में बूमेरा रेगिस्तान की कायापलट केवल एक व्यक्ति डेमास्ड फाइलिस ने ही कर डाली है। उस अकेले ने वहाँ 60,000 वृक्ष ऐसे लगाये हैं, जो अब 20 फीट से भी अधिक ऊँचे हो गये हैं। इस हरीतिमा ने वहाँ की जलवायु को आमूलचूल बदल डाला है।

चीन के मरुस्थली एवं निर्जन सूखाग्रस्त इलाकों का वातावरण ऐसा है, जहाँ रहने योग्य परिस्थितियाँ नहीं हैं। सिकियाँग प्रान्त के तवलामकान एवं कुरुबान अनुंगुत मरुभूमि तथा भाकोउस जैसे विशाल रेतीले मैदान में खच्चरों की मदद से तथा श्रमदान द्वारा करोड़ों घनमीटर अच्छी मिट्टी पहुँचाकर हरे-भरे जंगल खड़े कर दिये हैं। इस हरीतिमा के कारण ये स्थान न केवल रहने योग्य हो गये हैं, वरन् यहाँ से बहुमूल्य खनिज सम्पदा हस्तगत कर चीन ने अपनी राष्ट्रीय आय में वृद्धि भी की है। अपनी उत्तरी-पश्चिमी सीमा पर सुरक्षा हेतु एवं हरियाली वृद्धि के उद्देश्य से चीन ने अपनी विशाल दीवार के समान ही वृक्षों की एक नई दीवार ही खड़ी कर दी है, जो 6000 मील लम्बी है।

इस्राइल के निवासियों ने भी अपने सूखे रेगिस्तानी इलाकों को हरा-भरा करने का संकल्प लिया है। कभी रेगिस्तान माना जाने वाला इस्राइल आज ग्रीन डेज़र्ट के नाम से जाना जाता है। वहाँ के नागरिकों ने अपने दृढ़ संकल्प एवं कठोर परिश्रम से देश में जल लाकर और वृक्षारोपण कर इसे हरा-भरा कर दिया है। विश्व में सबसे कम वर्षा 7 इंच वार्षिक वाला यह क्षेत्र आज सबसे उमदा कृषि के लिए विश्व प्रसिद्ध बन गया है। जहाँ कभी भीषण मरुस्थलीय परिस्थितियाँ थीं और जन-जीवन एक-एक बूँद पानी का मोहताज हुआ करता था, वहाँ आज चारों ओर हरियाली छा गयी है। वहाँ 10 करोड़ पौधे प्रतिवर्ष नये लगाये जाते हैं। जिस प्रकार नन्हें शिशु की देखभाल की जाती है, उसी प्रकार उनकी देखरेख भी करते हैं; केवल पौधे लगाकर अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं मान लेते। कुल 20,700 वर्ग किलोमीटर फैले क्षेत्र में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से इस्राइल में 40% भूमि पर वन हैं। वहाँ की वार्षिक आय प्रति व्यक्ति 35280 रुपये है एवं समृद्धि की दृष्टि से यह राष्ट्र किसी भी सुपर पॉवर की तुलना कर सकता है। वहाँ के बच्चे-बूढ़े, सभी मिलकर हर रविवार को सरकारी प्रयासों से समतल हुई भूमि पर अपने हाथों से वृक्ष लगाते हुए बहुत ही गौरव अनुभव करते हैं। वैसे छिटपुट प्रयोग अपने देश में भी कई जगह हुए हैं। वृक्षारोपण की ओर लोगों की जागरूकता व रुझान बढ़ा है। गायत्री परिवार ने भी उल्लेखनीय कार्य किये हैं।

1. **बिहार प्रान्त के हजारीबाग जिले** में कभी एक किसान ने एक हजार आमों के बगीचे लगाये थे। वह जहाँ भी जाता, आम के वृक्ष लगाता। लोगों ने उसका नाम ही रख दिया, हजारी किसान। हजारी किसान के नाम पर ही उस क्षेत्र का नाम पड़ा 'हजारीबाग'। उससे प्रेरणा लेकर अन्य लोगों ने भी बाग लगाये। हजारी किसान द्वारा लगाये आम के बगीचे आज भी मीठे-रसीले फल दे रहे हैं।

2. **पूना के पास उर्लीकांचन** स्थान पर गांधीजी काफी समय तक रहे। वनवासियों द्वारा आर्थिक लाभ के लिए उजाड़े गये वनों से नंगे हुए पहाड़ों को देखकर वे दु:खी मन से कहने लगे, "काश! इन पर्वतों की सुषमा को फिर लौटाया जा सका होता, तो यह रमणीक स्थान ऐसा भयावह न लगता।" उनकी व्यथा को उनके प्रिय शिष्य मणिभाई देसाई ने समझा। उन्होंने अकेले ही इस अभियान को आरम्भ किया। बाद में अनेकों सहयोगी मिले। धीरे-धीरे "भारत कृषि उद्योग मण्डल" नामक एक निजी संस्था ने जन्म लिया एवं अब वहाँ घना जंगल है, जो प्राकृतिक सौन्दर्य एवं स्वास्थ्यवर्धक जलवायु के लिए जाना जाता है।

3. **एक आदर्श उदाहरण - पिपलान्त्री गाँव**- राजस्थान के राजसमन्द जिले का पिपलान्त्री गाँव पूरे देश का एक अनुपम उदाहरण बन चुका है। पर्यावरण प्रेमी श्री श्यामसुन्दर पालीवाल जी ने गाँव की वन-सम्पदा को कटते हुए नंगी होती पहाड़ियों को देखकर संकल्प लिया और गाँव को प्रचुर प्राकृतिक सम्पदाओं से भर दिया है। आज यह ग्राम 'आदर्श ग्राम', 'निर्मल ग्राम', 'पर्यटन ग्राम' के नाम से प्रशंसित हो रहा है। 5000 की आबादी वाले इस गाँव में अब हिमाचल जैसी हरियाली देखी जा सकती है। चरागाह क्षेत्र में 400 से अधिक केले के पेड़ लगाये जा चुके हैं और अब तक कुल 2 लाख 80 हजार

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पेड़ लगाये जा चुके हैं। 25 लाख से ज्यादा ऐलोवेरा के पौधे लगा चुके हैं। यहाँ रोपे हुए पौधे 100% जीवित रहते हैं, क्योंकि पेड़ों के चारों ओर थाँवले में ऐलोवेरा के एवं केले के पौधे लगा दिये जाते हैं। पाँच साल में 85 बीघा बंजर भूमि पर वृक्षारोपण किया जा चुका है। यहाँ बच्ची के जन्म होने पर खुशी मनाई जाती है। बच्ची के जन्म पर उनके माता-पिता के साथ मिलकर गाँव वाले 111 पेड़ लगाते हैं। और ग्राम पंचायत अपने निजी फण्ड से बच्ची के नाम 21000 रु. की राशि एफ. डी. करवा देती है। किसी की मृत्यु होने पर उनकी स्मृति में 11 पौधे लगा दिये जाते हैं।

4. एक अकेले व्यक्ति का कमाल- असम के श्री जाधव मुलइ पायेंग को सन् 2015 में 'पदम श्री' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सन् 1979 में वह गोलाघाट जिले में अरुणा चोपड़ी गाँव के पास ब्रह्मपुत्र नदी के तटीय क्षेत्र में 200 हेक्टेयर भूमि पर वृक्षारोपण की एक योजना में मजदूर के रूप में कार्य करने आया था। पाँच साल बाद, प्रोजेक्ट पूरा होने पर सब मजदूर वहाँ से चले गये, किन्तु मुलइ ने वहीं रहने का निश्चय किया। वह अकेले ही आसपास की भूमि में वृक्षारोपण करता रहा और लगभग 1000 हेक्टेयर भूमि को घने जंगल में तबदील कर दिया। सरकार को सन् 2008 में उसके इस काम के बारे में पता चला, जब हाथियों के एक झुण्ड ने अरुणा चोपड़ी गाँव में नुकसान पहुँचाया। सरकारी अधिकारी भी यह देखकर हैरान रह गये कि एक अकेले व्यक्ति ने इतना बड़ा घना जंगल खड़ा कर दिया।

श्री जादव पायेंग द्वारा लगाये गये इस जंगल को लोग 'मुलई का जंगल' कहते हैं। आज इस जंगल में 5 चीते, हिरणों के झुण्ड, हाथी आदि अनेकों वन्य पशु-पक्षी रहते हैं। श्री पायेंग ब्रह्मपुत्र के अन्य तटीय क्षेत्रों में भी ऐसा ही जंगल लगाना चाहते हैं। वह इसे अपना जीवन लक्ष्य मानते हैं।

5. वर्ष 1990 में गायत्री परिवार ट्रस्ट खरगोन को वनीकरण कार्यों के लिए प्रशासन द्वारा जिला स्तरीय प्रथम पुरस्कार दिया गया। जुलाई 1994 में गायत्री परिवार खरगोन को इन्दिरा प्रियदर्शिनी वृक्षमित्र पुरस्कार के लिए भी नामांकित किया गया।

6. अक्टूबर 1992 में सात एकड़ शासकीय भूमि पर आदिवासियों द्वारा वृक्षारोपण करने पर वृक्ष मित्र प्रशस्ति पत्र दिये गये। इसमें भी गायत्री परिवार की प्रमुख भूमिका रही।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

7. पिछले वर्षों में मध्यप्रदेश के परिजनों ने लगभग 75 छोटी-बड़ी पहाड़ियों को हरा-भरा किया है, उनका यह प्रयास सराहनीय एवं अनुकरणीय है। अन्य राज्यों में भी परिजन इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं।

8. सितम्बर 1994 में गायत्री परिवार के परिजन श्री भास्कर मोहड़ को महाराष्ट्र सरकार का वनराई पुरस्कार प्रदान किया गया।

9. 1995 में बुलन्दशहर के गायत्री परिवार के परिजनों ने 56 किमी. तक वृक्षारोपण किया। इस कार्यक्रम हेतु 300 कॉलेजों के छात्रों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी की। इसके बाद देश भर की प्रायः सभी शाखाएँ पर्यावरण संरक्षण अभियान में अपने-अपने ढंग से सक्रिय भूमिका निभा रही हैं, जिनके उल्लेखनीय समाचार प्रज्ञा अभियान पाक्षिक में छपते रहते हैं।

10. कलकत्ता गायत्री परिवार यूथ ग्रुप द्वारा स्कूल, कॉलेज एवं अन्य अनेक कम्पनियों के कैम्पस ग्राउण्ड में सामूहिक वृक्षारोपण का अभियान 250 रविवार (पिछले साढ़े 4 वर्षों से) से लगातार करते आ रहे हैं।

देश भर में ऐसे असंख्यों प्रयास चल रहे हैं, किन्तु यह सब ऊँट के मुँह में जीरे के समान ही हैं; क्योंकि, कहीं एक वृक्ष लगे और कहीं दूसरी जगह हजार कट जायें तो स्थिति नियंत्रण में नहीं रह सकती।

'बहुत सारे लोग पेड़ों को काटकर बीमार पड़ जाते है, उन्हें पता नहीं चलता है कि यह बीमारी उन्हें क्यों आयी है।'

-महावीर स्वामी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

5. वृक्ष सम्पदा घटने न दें

युद्ध स्तर पर कार्य प्रारम्भ करने से कम में काम नहीं चलेगा

भवानी प्रसाद मिश्र की कविता '**सतपुड़ा के घने जंगल**' की निम्नलिखित पंक्तियाँ हमें यह स्मरण दिलाती हैं कि किसी समय हमारे देश में कितने घने जंगल थे, जो शायद अब इतिहास बन चुके हैं।

नींद में डूबे हुए से, ऊँघते अनमने जंगल
बन सके तो धँसो इनमें, धँस न पाती हवा जिनमें
उतर कर बहते अनेकों, कल कथा कहते अनेकों,
नदी निर्झर और नाले, इन वनों ने गोद पाले।
लाख पंछी, सौ हिरण दल, चाँद के कितने किरण दल,
झूमते बन-फूल, फलियाँ, खिल रही अनगिनत कलियाँ,
हरित दूर्वा, रक्त किसलय, पूत पावन पूर्ण रसमय।
सतपुड़ा के घने जंगल, लताओं के बने जंगल।

वास्तव में, अपने देशवासियों ने सर्वाधिक अदूरदर्शिता का परिचय दिया है। कभी देश की 70% भूमि वनों से आच्छादित थी। पंजाबी ट्रिब्यून, 31 अगस्त 1997 के एक लेख अनुसार भारत सरकार के वातावरण और वन मंत्रालय के फॉरेस्ट सर्वे ऑफ इण्डिया (F. S. I.) द्वारा किये गये सर्वे के अनुसार देश के 19% क्षेत्र में ही वृक्ष हैं। देश के 105 जिलों में 33% भूमि वृक्षों से ढकी है, 54 जिलों में 19% से 33% और बाकी 217 जिलों में 1% से 19% तक धरती पर नाम मात्र ही वृक्ष दिखाई पड़ते हैं। कटते-कटते अब वह मात्र 17% शेष बची है। अनिवार्य पर्यावरण सन्तुलन सीमा से भी यह 16% कम है और यह कटान अब भी निरन्तर जारी है।

छिटपुट प्रयोगों से समस्या का हल नहीं होगा। हमारे देश में विगत कुछ वर्षों में हमारी आवश्यकताएँ बढ़ी हैं। जनसंख्या वृद्धि, औद्योगीकरण, सड़क निर्माण, भवन निर्माण अदि जैसे कार्यों में तीव्रता आई है। जिसके चलते करोड़ों वृक्ष प्रतिदिन कट रहे हैं। परिणामत: देश में मौसम चक्र प्रभावित हुआ है। पिछले कुछ वर्षों से लगातार किसी न किसी आपदा का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सामना करना पड़ रहा है। कहीं सूखा, कहीं बाढ़। कहीं अनावृष्टि, तो कहीं अतिवृष्टि। भू-स्खलन और बादल फटने जैसी घटनाएँ भी बढ़ी हैं। अचानक हुई भारी वर्षा के चलते केदारनाथ की भयंकर त्रासदी और मुम्बई, जम्मू, गुजरात, चेन्नई आदि नगरों में आई अप्रत्याशित भयंकर बाढ़ को शायद ही कोई भुला पाये।

उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश व अन्य कई राज्यों में विकास के नाम पर करोड़ों वृक्ष काटे गये हैं और काटे जायेंगे। इस स्थिति का कड़ाई से निरीक्षण करना होगा तथा सन्तुलन के लिए वृक्षारोपण जैसे जीवन रक्षक, पुनीत भौतिक और आध्यात्मिक लाभ देने वाले कार्य को अविलम्ब आरम्भ करना होगा। यदि कहीं वृक्ष काटना हमारी आवश्यकता है भी तो उसके एवज में किसी दूसरी जगह उससे दसगुनी संख्या में वृक्ष लगाये बिना पर्यावरण सन्तुलन स्थापित नहीं होगा। जैसे रेल पटरी, सड़क निर्माण जैसे कार्यों के लिये यदि वृक्ष काटने भी पड़ रहे हैं, तो उनके निर्माण के साथ ही दोनों ओर उचित दूरी पर वृक्ष लगाना भी अनिवार्य कार्य होना चाहिये। इससे जहाँ वातावरण शुद्ध होगा, सौंदर्य बढ़ेगा, वहीं गन्दगी फैलाने वालों से भी राहत मिलेगी और बेरोजगारों को रोजगार भी।

पर्यावरण सन्तुलन के लिए कुल भू-भाग के क्षेत्रफल का कम से कम 33% क्षेत्र वृक्ष-वनस्पतियों से ढँका होना चाहिए। इसकी पूर्ति तभी हो सकती है, जब हर आदमी औसतन 12 पेड़ लगाये। यों सरकार भी इस दिशा में कुछ काम कर रही है, पर उसी के भरोसे हाथ-पर-हाथ रखकर हमें नहीं बैठा रहना चाहिए, वरन् जन-स्तर पर भी जितना कुछ बन पड़े, अधिक से अधिक करने के लिए कटिबद्ध होना चाहिए।

वृक्षारोपण को देवाराधना जितना ही महत्त्व दें

हरियाली तो मानव जीवन की सहचरी है। जितना महत्त्वपूर्ण स्थान सहचरी का सामाजिक जीवन में होता है, उतना ही उसे भी मिलना चाहिए। दो कदम तो अनिवार्य रूप से उठाना ही चाहिए।

1. वृक्षारोपण की दिशा में अत्यधिक उत्साह दिखाया जाये। इसका कारगर तरीका यह भी हो सकता है कि हर परिवार अपने पारिवारिक सदस्यों की संख्या के हिसाब से वृक्षारोपण का दायित्व उठाये। पूर्वजों की स्मृति में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वृक्ष लगाना एक उच्च कोटि का श्राद्ध-तर्पण माना गया है। कोई माननीय व्यक्ति हमारे यहाँ आते हैं, तो उनके हाथों वृक्ष आरोपण की प्रथा है। इस प्रकार विवाह, पुत्र-जन्म, परीक्षा में उत्तीर्ण होने, कोई आर्थिक लाभ होने के उपलक्ष्य में वृक्ष लगाने का पुण्य कृत्य किया जाये, तो बहुत सराहनीय समझा जायेगा।

2. यह उत्साह रोपण तक ही सीमित होकर न रह जाये। पेड़ लगाने के बाद खाद, पानी, निराई-गुड़ाई से उनकी देखभाल की जाती रहे, तो चारों ओर हरियाली का साम्राज्य छा सकता है। दूसरे वृक्षों को सूखने पर या अनिवार्य होने पर ही काटा जाये। इस सम्बन्ध में सामूहिक चेतना जगायी जाये, जिससे जन साधारण हरीतिमा का महत्त्व समझे। वृक्षों की प्राप्त सम्पदा का दुरुपयोग न हो, इसके लिए भी शासकीय नीति पर नहीं, सामाजिक एवं नैतिक अनुशासन पर ही निर्भर रहना होगा। पूर्व परम्परा हमारे देश की सांस्कृतिक धरोहर है। हरियाली तीज और श्रावणी अमावस्या पर नये वृक्ष लगाने की चिरकालीन परम्परा रही है। इस कार्य को यदि हर गाँव में एक छोटी नर्सरी बनाकर वहाँ से जनोपयोगी, घनी हरीतिमा वाले पौधे वितरित करने के कार्य से जोड़ा जा सके, तो चारों ओर हरियाली का साम्राज्य छा सकता है।

समाज सेवा, मानव जाति की सेवा में जो धन की, बुद्धि की कमी को बाधक मानते और अपनी असमर्थता व्यक्त करते हैं, वे भी वृक्षारोपण द्वारा उस पुण्य के भागीदार बन सकते हैं, जो धन दान और ज्ञान दान के द्वारा अर्जित किया जाता है। इसे साधना से मिलने वाले पुण्य फलों के ही समतुल्य मानकर अपनाया जा सकता है। पर्यावरण सन्तुलन में वृक्षारोपण द्वारा सहयोग दे देने का अर्थ होगा, प्रकारान्तर से समस्त मनुष्य जाति के लिए, सुख और समृद्धि के लिए सुदृढ़ आधार खड़ा कर देना। इस पुनीत कार्य को हर कोई हर परिस्थिति में रहते हुए कर सकता है। किसी समय धनी-मानी लोग तालाब, बावड़ी आदि खुदवाते थे व उसे विशेष पुण्य का कार्य मानते थे। आज पुनः उसी की आवश्यकता है।

जिनके पास समय नहीं, पर धन है। जो लोग स्वयं श्रम करके वृक्ष नहीं लगा सकते, वे पैसा देकर दूसरों का श्रम खरीद सकते हैं और यह कार्य दूसरों के माध्यम से करा सकते हैं। इस प्रकार वे दोहरे पुण्य के भागीदार बन सकते हैं। हर देश के चार भीतरी दुश्मन होते हैं- गरीबी, बेकारी, अनपढ़ता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और रोग। करोड़ों बेरोजगार लोगों को बंजर, खाली जमीन पर वृक्ष लगाने का काम दिया जा सकता है। इससे जहाँ धरती मरुस्थल होने से बचेगी, पर्यावरण का संरक्षण होगा, वहीं बेरोजगार भूखों मरने और बेकारी के कारण चोर, डाकू बनने से भी बच जायेंगे। अमीर लोग बैंकों में पैसा जमा करके रखने की अपेक्षा पर्यावरण संरक्षण की दिशा में अपना उत्साह दिखायें। इस प्रकार किसी बेरोजगार को रोजगार देकर जहाँ वे उसके परिवारजनों के अपरोक्ष सहायक बनेंगे, पर्यावरण संरक्षक बन सकेंगे और वहीं इस पुनीत कार्य के फलस्वरूप वे दुगुने, तिगुने पुण्य के भागीदार भी बनेंगे।

वृक्ष लगा रहे एक बूढ़े व्यक्ति से एक राहगीर ने पूछा, '**बाबा**, आप यह वृक्ष क्यों लगा रहे हैं ? जब तक यह फल देने लायक होगा, तब तक तो आप शायद जीवित भी नहीं रहेंगे, फिर आप इतनी मेहनत क्यों कर रहे हैं ?' उस वृद्ध ने कहा,'बेटा, मेरे बुजुर्गों ने वृक्ष लगाये तो मैंने उनके फल चखे। अब मैं वृक्ष लगा रहा हूँ, ताकि आने वाले समय में मेरे पौत्र, प्रपौत्र उनका फल खा सकें। '**दादा लगाये पोता खाये**' यह उक्ति कदाचित् इसी तथ्य को ध्यान में रखकर बनी होगी। आज हम जो कुछ भी कर रहे हैं, भविष्य में वह हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिये विरासत बन जायेगी।

महाकवि एलेक्जेण्डर ने बड़े भावभरे शब्दों में कहा है कि "अपनी स्मृति पीछे छोड़ जाना चाहते हो, तो भवन बनाने की अपेक्षा वृक्ष लगाने पर अधिक ध्यान दो। वे चिरस्थायी हैं।"

भूतपूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति फ्रेंकलिन रूजवेल्ट का कथन है- "एक राष्ट्र अपनी भूमि को यदि नष्ट करता है तो अपने को ही नष्ट करता है। जंगल हमारी भूमि के फेफड़ों की तरह हैं, जो हमारी वायु को शुद्ध करते हैं। वे हमारी जनता को ताजी हवा देकर बलशाली बनाते हैं।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

६. भारतीय संस्कृति में वृक्षों का महत्त्व

ऋग्वेद को भारतवर्ष का प्रथम ग्रन्थ माना जाता है। उस समय हमारी पृथ्वी प्राकृतिक सम्पदा और सौन्दर्य से मालामाल थी। इस विलक्षण और अद्वितीय ग्रन्थ में ऋषि परमात्मा की अनुपम रचना प्रकृति के बारे में बात करता है। इस ग्रन्थ में भूमि, जल, वनस्पति, आकाश, सूर्य, चाँद, तारों के रहस्यमय जगत् का वर्णन है। इसमें प्रकृति के सौन्दर्य और उसके अनुदानों की वन्दना की गई है। ऋग्वेद में ऋषि ने प्रकृति के संरक्षण को मनुष्य का धार्मिक कर्तव्य बताया है। भारतीय सभ्यता का स्वर्णिम काल कहे जाने वाले इस वैदिक युग में वृक्षों को प्रत्यक्ष देवता और जंगलों को तीर्थ की उपाधि दी गई है। भारतीय आर्ष ग्रन्थों में तो वृक्ष को तरुपुत्र कहकर पुत्र की संज्ञा दी गई है। एक वृक्ष लगाना दस गुणवान् पुत्रों के जन्म से भी अधिक पुण्यदायी माना गया है। क्यों न हो, कवि की इन पंक्तियों में कितना गहरा मर्म छिपा है-

जीते भी लकड़ी, मरते भी लकड़ी, देख तमाशा लकड़ी का।

वास्तव में वृक्ष और मनुष्य का रिश्ता अटूट है। वृक्ष, बचपन में छोटे से खिलौनों से लेकर बुढ़ापे में लाठी के रूप में मनुष्य का साथ निभाता है। अन्त में मृत्यु के समय लकड़ी ही उसे जलाने या दफनाने के काम आती है। पालने से लेकर अर्थी तक और फिर चिता तक यह साथ निभता है।

उस काल में वृक्ष एवं वनों की बहुतायत थी, फिर भी हमारे ऋषियों ने वृक्षों की महत्ता को स्वीकार किया और वह भी इस रूप में, कि उन्हें अपनी सन्तान से अधिक महत्त्व देने का शिक्षण दिया। आज जब जंगल और वृक्ष प्राचीनकाल की तुलना में कुछ भी नहीं हैं, तब आज के सन्दर्भ में किसी ऋषि का शायद यही निर्धारण होगा कि अब वृक्ष को सन्तान ही नहीं, साक्षात् ईश्वर के रूप में देखा जाये, वृक्षों को उपभोक्ता वस्तु के रूप में देखने की प्रवृत्ति को बन्द किया जाये और वृक्ष सेवा - सृष्टि सेवा, वृक्ष रक्षा - सृष्टि रक्षा एवं वृक्ष पूजा - सृष्टि पूजा के सिद्धान्तों को लोगों के जीवन में शामिल किया जाये।

रामायण तथा महाभारत काल में वृक्षों की देख-रेख के लिये विशेष प्रबन्ध व्यवस्था का भी उल्लेख मिलता है। 300 बी. सी. में चन्द्रगुप्त मौर्य के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राज्यकाल में कौटिल्य के अर्थशास्त्र में वृक्षों की भी प्रबन्ध प्रणाली का वर्णन है। उस समय में भी वनमंत्री और अन्य कर्मचारियों द्वारा जंगलों की देखभाल की जाती थी। जंगल को नुकसान पहुँचाने और वन्य-पशुओं का शिकार करने पर सजा भी दी जाती थी। सम्राट् अशोक के काल में भी सड़कों के किनारे वृक्ष लगाने का नियम था। मुगल बादशाह अकबर ने भी नहरों के किनारे वृक्ष लगाने के कार्य को विशेष महत्त्व दिया था।

भगवान् बुद्ध कहते हैं- "जंगल के वृक्ष असीम दया की ऐसी संस्था होते हैं, जो संस्था अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिये मनुष्य से किसी चीज की माँग नहीं करती। यह वृक्ष बिना भेद-भाव के सभी को छाया और सुरक्षा प्रदान करते हैं, यहाँ तक कि उस कुल्हाड़ी धारक को भी, जो उसी को नष्ट करने पर तुला होता है।" भगवान् बुद्ध का उपदेश है कि प्रत्येक व्यक्ति जैसे-जैसे उसकी उम्र बीतती जाये, हर पाँचवें वर्ष एक वृक्ष जरूर लगाये। इस प्रकार यदि कोई व्यक्ति 100 वर्ष जियेगा तो वह 20 वृक्ष लगायेगा।

युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने भी वृक्षों का महत्त्व बताते हुए एवं आज के समय में उनके अन्धाधुन्ध कटान से उत्पन्न समस्याओं का एक मात्र समाधान वृक्षारोपण बताया है। उन्होंने लिखा है कि केवल 33% वनाच्छादित भूमि का लक्ष्य प्राप्त करना हो, तो भी देश के प्रत्येक व्यक्ति के हिस्से कम से कम 12 वृक्ष तो आते ही हैं। प्रायः सभी सन्तों-महापुरुषों ने वृक्षारोपण और उनके संरक्षण पर जोर दिया है। भारत में लगभग सभी धर्मों में अपने गुरु व इष्ट की स्मृति स्वरूप वृक्ष अथवा बाग लगाने की परम्परा रही है।

पंचवटी

पूर्व में पीपल + पश्चिम में बरगद + उत्तर में बिल्व + दक्षिण में आँवला और आग्नेय दिशा में सीता अशोक इन पाँच वृक्षों के समूह को पंचवटी कहते हैं। ये पाँचों वृक्ष अपने औषधीय गुणों के कारण भारतीय समाज में अपना विशेष महत्त्व रखते हैं। पाँच तत्त्वों- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश से सृष्टि का निर्माण हुआ है। मानव शरीर को पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, त्वचा, चक्षु, नासिका, जिह्वा, कान एवं पाँच कर्मेन्द्रियाँ पूर्ण करती हैं। ठीक इसी प्रकार पंचवटी की यह पाँच प्रजातियाँ पर्यावरणीय पूर्णता की प्रतीक हैं। कभी देश भर में गाँव-गाँव में इन्हें लगाने का प्रचलन था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तीर्थंकर वाटिका

जैन धर्म के हर चक्र (विशिष्ट काल अवधि) में 24 तीर्थंकर होते हैं, वर्तमान चक्र में 24 तीर्थंकर हो चुके हैं। तपस्या के क्रम में सभी तीर्थंकरों को विशुद्ध ज्ञान (कैवल्य ज्ञान) की प्राप्ति किसी न किसी वृक्ष की छाया में प्राप्त हुई थी। उन सभी वृक्षों को केवली वृक्ष कहा जाता है।

तीर्थंकर केवली वृक्ष-		हिन्दी नाम	वैज्ञानिक नाम
1	ऋषभनाथ	वट वृक्ष	फाइकस बन्गालेन्सिस
2.	अजितनाथ	चितवन, सप्तवर्णी	एलस्टोनिया स्कोलेरिस
3.	सम्भवनाथ	साल, साखू	शोरिया रोबस्टा
4.	अभिनन्दन	चीड़	पाइनस राक्सबर्घाइ
5.	सुमतिनाथ	पियंगु	केलीकार्पा मेक्रोफिला
6.	पदमनाथ	पियंगु	केलीकार्पा मेक्रोफिला
7.	सुपार्श्वनाथ	सिरस	अलबिजिया लीबेक
8.	चन्द्रप्रभनाथ	नागकेसर	मेसुआ फेरिया
9.	पुष्पदन्त	बहेड़ा	टरमिनेलिया
10.	शीतलनाथ	बिल्व, बेल	ईगल मारमिलोस
11.	श्रेयांसनाथ	तेंदू	डायोस्पाइरस मिलानोजाइलान
12.	वासुपूज्य	कदम्ब	एन्थोसिफेलस कदम्बा
13.	विमलनाथ	जामुन	साइजीजियम क्यूमिनाई
14.	अनन्तनाथ	पीपल	फाइकस रैलीजियोसा
15.	धर्मनाथ	दधिपर्ण, कैंथा	फेरोनिया एलीफैण्टम
16.	शान्तिनाथ	तून	सिड्रैला तूना
17.	कुंथुनाथ	तिलक	वेन्डलेन्डिया एक्सर्टा
18.	अरहनाथ	आम	मैन्जीफेरा इण्डिका
19.	मल्लिनाथ	अशोक	सराका इण्डिका
20.	मुनिसुव्रतनाथ	चम्पा	माइकेलिया चम्पाका
21.	नमीनाथ	मौलश्री	मोमोसॉप्स एलेन्जी
22.	नेमीनाथ	बाँस	बैम्बू प्रजाति
23.	पार्श्वनाथ	देवदार	सीडस देवदारा
24.	महावीर	साल	शोरिया रोबस्टा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरु के बाग

सिक्ख धर्म में वृक्षों का अत्यधिक महत्त्व है, वृक्ष के अंग-प्रत्यंग को देवता रूप में देखा गया है। गुरु ग्रन्थ साहिब में वाणी अंकित है:

ब्रहमु पाती बिसनु डारी फूल संकरदेउ।
तीनि देव प्रतखि तोरहि करहि किसकी सेउ॥

अर्थात् - हे मालिन! पूजा के लिए तुम जो ये पत्तियाँ, शाखा और पुष्प तोड़ रही हो, इसमें ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों देवताओं का निवास है। पत्तियाँ ब्रह्मा हैं, शाखाएँ विष्णु हैं और स्वयं शंकरदेव पुष्प हैं। इस तरह तुम इन तीनों प्रत्यक्ष देवों को तो तोड़ डालती हो, तो फिर पूजा किसकी करती हो।

-श्री गुरु ग्रन्थ साहब 2-1-14। (पृ. 476)

सिक्ख पंथ के नौवें गुरु श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी जब आसाम प्रांत के चार साल के दौरे पर गये, तो मार्ग में जिस-जिस क्षेत्र में उन्होंने वृक्षों की कमी देखी, वहाँ-वहाँ वे वृक्ष लगवाते हुए गये।

सिक्ख धर्म में गुरु कार्य, सेवा, सत्संग, लंगर आदि में उपयोग आने वाले धर्म स्थलों के पास स्थित वृक्ष समूहों को गुरु के बाग कहा जाता है। गुरु के बाग आज भी बहुत प्रसिद्ध हैं। अमृतसर में ऐरोड्रम रोड पर स्थित 'गुरु के बाग' जिसके बारे में कहा जाता है कि लड़ाई के समय सिक्ख सैनिकों का जो लंगर चलता था, उसमें विविध आवश्यकताओं की पूर्ति इस बाग से होती थी।

सिक्ख धर्म में गुरुद्वारों, सराय, कुओं और सरोवरों के निकट विविध प्रकार के उपयोगी वृक्षों के रोपण की परम्परा रही है। स्वयं गुरु साहिब वृक्षों की छाया में बैठकर सेवा कार्यों की देख- रेख करते थे। दीवान लगाकर उपदेश देते थे। भजन-कीर्तन, गायन का आनन्द लेते थे।

पीपल, रीठा, टाली (शीशम), बेर सिक्ख गुरुओं के जीवन से जुड़े वे वृक्ष हैं, जो महान् गुरुओं के सान्निध्य में आकर हमेशा के लिए धन्य हो गये। इन वृक्षों का स्थान विशेष के साथ सिक्खी इतिहास में ऐतिहासिक महत्त्व है।

बुद्ध वाटिका

बुद्ध वाटिका में भगवान् बुद्ध के जीवन से जुड़े वृक्षों का रोपण किया जाता है। **पीपल (बोधिवृक्ष)**- इस वृक्ष के नीचे ध्यान करते हुए भगवान् बुद्ध को वैशाख पूर्णिमा की रात्रि में बोधि की प्राप्ति हुई थी। हिन्दू और बौद्ध

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दोनों ही धर्मों का यह सबसे अधिक सम्माननीय पवित्र वृक्ष है। गया, बिहार, स्थित भगवान् बुद्ध के उस मूल बोधि वृक्ष की शाखा श्रीलंका में रोपित की गयी थी। उसी वृक्ष की शाखा से तैयार वृक्ष आज विश्व के अनेक बौद्ध स्थलों की शोभा बढ़ा रहे हैं, जिसका एक वृक्ष सारनाथ में भी स्थापित है। भगवान् बुद्ध के शिष्य जहाँ भी गये, अपने साथ बोधिवृक्ष की शाखा लेकर गये और वहाँ उसे रोपित कर दिया। हिन्दू मान्यता में इस वृक्ष को भगवान् विष्णु का रूप माना जाता है। इस वृक्ष का वैज्ञानिक नाम फाइकस रिलिजिओसा है।

बुद्ध वाटिका में लगाये जाने वाले वृक्ष

पीपल, साल, बरगद, पाकड़, जामुन, करेरि, आम, आँवला, शीशम, ताड़, बाँस, नीम, चीड़, खिरनी (राजयतन, वै.नाम- मैनिलकारा हेक्जेन्ड्रा)

ये सभी भगवान् बुद्ध से जुड़े विशेष ख्याति प्राप्त वृक्ष हैं। भगवान् बुद्ध के जीवन की सभी महत्त्वपूर्ण घटनायें वृक्षों की छाया में घटीं। जन्म, साल वन में एक वृक्ष की छाया में। प्रथम समाधि जामुन वृक्ष की छाया में। बोधि प्राप्ति पीपल वृक्ष की छाया में और महानिर्वाण साल वृक्ष की छाया में हुआ। यही नहीं गृह त्याग से महानिर्वाण तक का लगभग 52 वर्ष का पूरा जीवनकाल वन एवं वृक्षों के सान्निध्य में ही बीता। भ्रमण के दौरान भी वे सामान्यतया वन या बाग में ही रुकते थे। भोजन के उपरान्त वे सदैव ध्यान के लिए वन में चले जाते थे। प्रात:कालीन ध्यान के बाद वन-वृक्षों के बीच भ्रमण करते हुए चलित- ध्यान करना उनका नित्य का नियम था।

इन वृक्षों को बौद्ध धर्म स्थलों में बुद्ध वाटिका के रूप में रोपण करने से लोगों में बौद्ध धर्म- ज्ञान एवं साधना लाभ में वृद्धि होगी। एक बोर्ड इत्यादि पर इन वृक्षों से जुड़ी भगवान् बुद्ध के जीवन काल की महत्त्वपूर्ण घटनाओं का विवरण अवश्य देना चाहिये।

मसीही वाटिका

ईसाई मत के अनुसार परमेश्वर ने जब आदम को बनाया तो उसका प्रारम्भ भी वाटिका से ही हुआ, जिसको आदम की बगिया (गार्डन ऑफ इडेन) के नाम से जाना जाता है। इस बाग में फलदार वृक्षों के अतिरिक्त पशु-पक्षियों की उपस्थिति का भी वर्णन है। बाइबिल के प्रारम्भ में इसका भी उल्लेख है कि परमेश्वर के द्वारा पैदा किये गये वृक्ष, झाड़ियाँ और घास, जो फल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तथा बीज प्रदान करते हैं, वे मानव समुदाय के लिए शुभ हैं। बाइबिल के आधार पर परमेश्वर ने सम्पूर्ण पृथ्वी की रचना छः दिनों में वचन मात्र से की तथा तीसरे दिन ही परमेश्वर ने सम्पूर्ण वनस्पतियों का निर्माण किया। बाइबिल में अनेकों वृक्ष- वनस्पतियों का वर्णन मिलता है तथा इनके आवश्यकतानुसार उपयोग एवं लाभ के बारे में भी बताया गया है।

बाइबिल में वर्णित कुछ वृक्ष-वनस्पतियाँ

प्रचलित नाम	बाइबिलिक नाम	वैज्ञानिक नाम
1. अञ्जीर	तीना	फाइकस कैरिका
2. अनार	रिम्मान	प्युनिका ग्रेनेटम
3. मेलो	मुलाव	एट्रीप्लेक्स
4. विलो	विलो	सैलिक्स
5. खजूर	इलाट, तमार	फोनिक्स डक्टाइलोफेरा
6. अंगूर	जीफेन	वाइटिस विनिफेरा
7. मेहँदी	कोफर	लासोनिया इनरमिस
8. काला शहतूत	साइकामिन	मोरस नाईग्रा
9. नरकुल	रीड	फ्रैगमाइटिस, करका
10. घृतकुमारी	एलवा	एलोय वेरा
11. अरण्ड	क्यूक्यान	रिसिनस कम्यूनिस
12. झाऊ	टेमेरिक्स	टेमेरिक्स प्रजाति
13. काली सरसों	सिनापी	ब्रैसिका नाइग्रा
14. बेर	स्पाइनी	जिज़ीफस स्पाइना-क्रिस्टी
15. पॉपुलर	पापलर	पापुलस अल्बा, पापुलस यूफ्रेटिका

कुरानी वृक्ष वाटिका

कुरान में दिये गये पौधों का बगीचा लगाना कुरानी वृक्ष वाटिका कहलाता है। यूँ तो सारे पेड़-पौधे 'खालिके अरजो, समा' (ईश्वर) के ही पैदा किये हुए हैं, लेकिन कुछ पेड़-पौधों का वर्णन अल्लाह ने स्वयं अपनी पुस्तक 'कुरान-मजीद' में किया है, जिसके कारण उन पेड़-पौधों का महत्त्व बढ़ जाता है। इनको लगाना इनकी सुरक्षा करना और इनकी देखभाल करना पुण्य का कार्य है। इनसे पर्यावरण भी शुद्ध होता है, यह स्वास्थ्य के लिये लाभदायक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही नहीं; बल्कि विभिन्न रोगों में दवा की तरह लाभदायक हैं और इनसे आर्थिक लाभ भी होता है।

हजरत मोहम्मद साहब ने फरमाया है-"आज से मक्के की धरती पर न तो किसी इनसान का खून होगा और न ही किसी जानवर का शिकार किया जायेगा और किसी हरे-भरे दरख़्त को भी नहीं काटा जायेगा। आवश्यकतानुसार सिर्फ इज़खिर घास काट सकते हो, कोई दूसरा हरा-भरा वृक्ष नहीं।"

कुरान में दिये गये कुछ पेड़-पौधों का वर्णन इस प्रकार है-

प्रचलित नाम	अरबी नाम
खजूर	नख्ल, तमर
जैतून	जैत, अल-जैतून
अंगूर	एनब
अनार	रुम्मान
अञ्जीर	तीना
बेरी	सिदरह
पीलू	शजरे मिसवाक
मेहँदी	मेहँदी, हिना
बबूल	तलहा
तुलसी	रेहान

कुरान की सूरह नहल- 10-11 में उल्लेख है- "अल्लाह वही है, जिसने पानी बरसाया, जिससे तुम्हें पीने को मिलता है और जिससे सब्ज़ाज़ार पैदा होते हैं और जिनमें तुम मवेशी चराते हो और उसी से तुम्हारे लिये खेती उगाते हैं। साथ ही जैतून, खजूर, अंगूर हर किस्म के फल मिलते हैं। बेशक इसमें बड़ी निशानी है, उन लोगों के लिए जो सोचने की सलाहियत (योग्यता) रखते हैं।"

नवग्रह वाटिका

ज्योतिष विज्ञान में जैसे प्रत्येक ग्रह के लिये अलग-अलग धातु और रत्न निर्धारित हैं, उसी प्रकार शास्त्रों में वृक्ष-वनस्पतियों का भी ग्रहों के साथ सम्बन्ध माना गया है। ग्रहों की कृपा प्राप्त करने, उनकी प्रसन्नता एवं शान्ति के लिये उन वनस्पतियों की वाटिका लगाने, उनकी सेवा करने व उनकी समिधा द्वारा यज्ञ करने का विधान है। जैसा कि गरुड़ पुराण के निम्न श्लोक में वर्णित है-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अर्कः पलाशः खदिरश्चापामार्गोऽथ पिप्पलः।
औडम्बरः शमी दूर्वा कुशश्च समिधः क्रमात्।।

अर्थात्- आक, पलाश, खदिर, अपामार्ग, पीपल, गूलर, शमी, दूब और कुश यह सभी क्रमशः नवग्रहों की समिधायें हैं। नवग्रह अनुसार वनस्पतियों की सूची इस प्रकार है-

	ग्रह	संस्कृत नाम	वैज्ञानिक नाम	हिन्दी नाम
1.	सूर्य	अर्क	कैलोट्रपिस प्रोसेरा	आक
2.	चन्द्र	पलाश	ब्यूटिया मोनोस्पर्मा	ढाक
3.	मंगल	खदिर	अकेसिया कटेचू	खैर
4.	बुध	अपामार्ग	अकाइरेन्थस एस्पेरा	लटजीरा
5.	बृहस्पति	पिप्पल	फाइकस रिलीजिओसा	पीपल
6.	शुक्र	औडम्बर	फाइकस ग्लोमरेटा	गूलर
7.	शनि	शमी	प्रोसोपिस सिनरेरिया	छ्योकर
8.	राहु	दूर्वा	पाइनोडान डेक्टाइलान	दूब
9.	केतु	कुश	डेस्मोस्टेचिया बाईपिन्नेटा	कुश

आयुर्वेद ग्रन्थों में नवग्रह से सम्बन्धित जिन वनस्पतियों का उल्लेख मिलता है, वे इस प्रकार हैं- सूर्य-बिल्व, चन्द्रमा-खिरनी, मंगल-नागजिन्दा, बुद्ध- विधारा, गुरु- नारंगी, शुक्र- अरण्डी, शनि- बिच्छेल, राहु- चन्दन, केतु- असगन्ध।

राशि वाटिका

ज्योतिष विज्ञान में नवग्रहों की ही तरह प्रत्येक राशि से भी वृक्ष-वनस्पतियों का सम्बन्ध बताया गया है। 12 राशियों का सम्बन्ध उनके स्वामी ग्रह के आधार पर नवग्रह के 9 वृक्षों के साथ जोड़ा गया है। इस वाटिका में वृक्षों का रोपण आयताकार स्थान को 12 भागों में बाँटकर अथवा एक वृत्त में वृत्त की परिधि को 30° 20'' अक्षांश में 12 बराबर भागों में बाँटकर किया जाता है।

12 राशियाँ व उनसे सम्बन्धित वृक्षों के नाम इस प्रकार हैं-

1. मेष - खैर 2. वृषभ - गूलर 3. मिथुन - अपामार्ग 4. कर्क - पलाश 5. सिंह - मदार 6. कन्या - दूर्वा 7. तुला - गूलर 8. वृश्चिक - खैर 9. धनु - पीपल 10. मकर - शमी 11. कुम्भ - शमी 12. मीन - कुश।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वास्तु वाटिका

12 राशियों के ही समान सभी दिशाओं के भी स्वामी वृक्ष माने गये हैं। इनके एक स्थान पर क्रमशः दिशानुसार रोपण को वास्तु वाटिका कहा जाता है। इस वाटिका के निर्माण में वृक्षों का रोपण आयताकार स्थान को 9 भागों में बाँटकर किया जाता है।

8 दिशाएँ एवं उनसे सम्बन्धित वृक्षों के नाम इस प्रकार हैं-

1. वायव्य – इमली 2. उत्तर – बेल 3. ईशान – आँवला 4. पूर्व– बरगद 5. आग्नेय – अनार 6. दक्षिण– गूलर 7. नैर्ऋत्य– कचनार 8. पश्चिम – पीपल एवं बीच में तुलसी का पौधा लगाया जाता है।

नक्षत्र वाटिका

नक्षत्र वाटिका– जिस तरह पृथ्वी के धरातल को भूगोलविद 36° की अक्षांश रेखाओं में चिन्हित करते हैं, उसी तरह भारतीय ऋषियों ने धरती के ऊपर आकाश को भी 27 बराबर भागों में बाँटा है। इसके हर एक भाग को एक नक्षत्र कहते हैं। इन 27 नक्षत्रों के 27 पेड़ों से सम्बन्ध माना गया है। इस प्रकार भारत में प्रत्येक नक्षत्र से सम्बन्धित वृक्षों का रोपण कर नक्षत्र वाटिका लगाने की भी परम्परा है। इस वाटिका में वृक्षों का रोपण एक वृत्त (गोलाकार) के रूप में वृत्त की परिधि को 13° 20'' (कला) अक्षांश में 27 बराबर भागों में बाँटकर किया जाता है।

27 नक्षत्रों एवं उनसे सम्बन्धित वृक्षों के नाम इस प्रकार हैं-

क्र.	नक्षत्र	हिन्दी नाम	वैज्ञानिक नाम
1.	अश्विनी	कुचिला	Strychnos nux-vomica
2.	भरणी	आँवला	Phyllanthus emblica
3.	कृत्तिका	गूलर	Ficus racemosa
4.	रोहिणी	जामुन	Syzygium cuminii
5.	मृगशिरा	खैर	Acacia catechu
6.	आर्द्रा	कृष्ण काला तेंदू	Diospyros melanoxylon
7.	पुनर्वसु	बाँस	Bamboo
8.	पुष्य	पीपल	Ficus religiosa

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

9.	आश्लेषा	नागकेसर	Mesua nagassarium
10.	मघा	बरगद	Ficus benghalensis
11.	पू.फाल्गुनी	पलाश, ढाक	Butea monosperma
12.	उ.फाल्गुनी	पाकड़	Ficus virens
13.	हस्त	रीठा	Sapindus mukorrossi Gaertn
14.	चित्रा	बेल	Aegle marmelos
15.	स्वाति	अर्जुन	Terminalia arjuna
16.	विशाखा	कंटारी	Flacourtia indica
17.	अनुराधा	मौलश्री	Mimusops elengi
18.	ज्येष्ठा	चीड़	Pinus roxburghii Sarg.
19.	मूल	साल	Shorea robusta
20.	पूर्वाषाढ़ा	जलवेतस	Salix tetrasperma
21.	उत्तराषाढ़ा	कटहल	Artocarpus heterophyllus
22.	श्रवण	मदार	Calotropis Procera
23.	धनिष्ठा	शमी	Prosopis cineraria
24.	शतभिषा	कदम्ब	Anthocephalus chinensis
25.	पू. भाद्रपद	आम	Mangifera indica
26.	उ. भाद्रपद	नीम	Azadarichta indica
27.	रेवती	महुआ	Madhuca indica

हरिशंकरी

पीपल, बरगद एवं पाकड़ अथवा पीपल, बरगद एवं पलाश के सम्मिलित रोपण को हरिशंकरी कहते हैं। हरिशंकरी का अर्थ है- विष्णु और शंकर की छायावली (हरि= विष्णु, शंकर= शिव) हिन्दू मान्यता में पीपल को विष्णु व बरगद को शंकर का स्वरूप माना जाता है। मत्स्य पुराण के अनुसार पार्वती जी के शापवश विष्णु- पीपल, शंकर- बरगद एवं ब्रह्मा-पाकड़ वृक्ष बन गये। पौराणिक मान्यता में पाकड़ वनस्पति जगत् का अधिपति एवं नायक है तथा याज्ञिक कार्यों हेतु श्रेष्ठ छाया वृक्ष है। इस प्रकार हरिशंकरी की स्थापना एक परम पुण्य व श्रेष्ठ परोपकारी कार्य है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

त्रिवेणी

पीपल +बरगद + नीम के सम्मिलित रोपण को त्रिवेणी कहा गया है।

पीपल- इसे संस्कृत में पिप्पल- अर्थात् इसमें जल है, बोधिद्रुम- बोधि प्रदान करने वाला वृक्ष, चलदल- निरन्तर हिलती रहने वाली पत्तियों वाला, कुंजराशन -हाथी का भोजन, अच्युतावास- भगवान् विष्णु का निवास, पवित्रक- पवित्र करने वाला, अश्वत्थ- यज्ञ की अग्नि का निवास स्थल कहा गया है।

चिड़ियाँ इसके फलों को खाकर इसके बीज सहित जहाँ मल त्याग करती हैं, वहाँ थोड़ी सी भी नमी प्राप्त होने पर यह अंकुरित होकर जीवन संघर्ष करता है। दूर- दूर तक जड़ें फैलाकर जल प्राप्त कर लेना इसकी ऐसी दुर्लभ विशेषता है, जिसके कारण इसका नाम पिप्पल-अर्थात् इसमें जल है, रखा गया है। वैज्ञानिक भी इसे पर्यावरणीय दृष्टि से अत्यधिक महत्त्व का वृक्ष मानते हैं। इसके पके फल मीठे और पौष्टिक होते हैं। औषधीय दृष्टि से पीपल शीतल, रुक्ष, वर्ण को उत्तम बनाने वाला एवं पित्त, कफ, व्रण तथा रक्तविकार को दूर करने वाला है। इस वृक्ष में भगवान् विष्णु का निवास माना जाता है। इस वृक्ष के रोपण, सिंचन, परिक्रमा, नमन- पूजन करने से हर तरह से कल्याण होता है और सभी दुर्भाग्यों का नाश होता है। जलाशयों के किनारे इस वृक्ष के रोपण का विशेष पुण्य बताया गया है, इसकी पत्तियों में चूना अधिक मात्रा में होता है जो जल को शुद्ध करता है। वृक्षायुर्वेद के अनुसार घर के पश्चिम में स्थित पीपल शुभ होता है।

बरगद- यह सदाहरित विशालकाय छाया वृक्ष है, जो पूरे भारत में पाया जाता है। इसकी शाखाओं से जड़ें निकल कर लटकती हैं, जो जमीन में प्रवेश करने के बाद अपनी शाखा को अपने माध्यम से पोषण एवं आधार प्रदान करने लगती हैं। इस प्रकार बरगद वृक्ष का विस्तार बढ़ता जाता है। इस कारण यह अक्षयकाल तक जीवित रहने की क्षमता रखता है। अत: अत्यधिक पुराने बरगद वृक्षों को प्राचीन काल में अक्षय वट कहा जाता था। इसकी छाया घनी होती है। इसके फलों को मानव एवं पशु-पक्षी खाते हैं, जो शीत और पौष्टिक गुणयुक्त होते हैं। इसके दूध को कमर दर्द, जोड़ों के दर्द, सड़े हुए दाँत का दर्द, बरसात में होने वाले फोड़े-फुन्सियों पर लगाने से लाभ मिलता है। इसकी छाल का काढ़ा बहुमूत्र में तथा फल मधुमेह में लाभप्रद है। इस वृक्ष में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भगवान् शंकर का निवास माना जाता है। वृक्षायुर्वेद के अनुसार घर के पूरब में स्थित बरगद वृक्ष सभी कामनाओं की पूर्ति करने वाला होता है।

पाकड़ – यह लगभग सदा हराभरा रहने वाला वृक्ष हैं, जो जाड़े के अन्त में थोड़े समय के लिये पतझड़ में रहता है। इसका छत्र काफी फैला हुआ और घना होता है, इसकी शाखायें जमीन के समानान्तर काफी नीचे तक फैल जाती हैं। जिससे घनी शीतल छाया का आनन्द बहुत करीब से मिलता है। यह बहुत तेज बढ़कर जल्दी छाया प्रदान करता है। शाखाओं या तने पर जटा मूल चिपकी या लटकी रहती है। फल मई-जून तक पकते हैं और वृक्ष पर काफी समय तक बने रहते हैं। गूलर की तुलना में इसके पत्ते अधिक गाढ़े रंग के होते हैं, जो सहसा काले प्रतीत होते हैं, जिसके कारण इस वृक्ष के नीचे अपेक्षाकृत अधिक अँधेरा प्रतीत होता है। यह घनी और कम ऊँचाई पर छाया प्रदान करने के करण सड़कों के किनारे विशेष रूप से लगाया जाता है। इसकी शाखाओं को काटकर रोपित करने से वृक्ष तैयार हो जाता है।

औषधीय दृष्टि से यह शीतल एवं व्रण, दाह, पित्त, कफ, रक्त विकार, शोथ एवं रक्तपित्त को दूर करने वाला है। मत्स्यपुराण के अनुसार इसे वन-वृक्षों का अधिपति बताया गया है। नारदपुराण के अनुसार ब्रह्मा ने विश्व में साम्राज्यों का बटवारा करते समय पाकड़ को वनस्पतियों का राजा नियुक्त किया। यज्ञ कर्म के लिए इस वृक्ष की छाया श्रेष्ठ मानी जाती है। वृक्षायुर्वेद के अनुसार घर के उत्तर में पाकड़ लगाना शुभ होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

7. आर्ष ग्रन्थों में वृक्षों का महत्त्व

भारतीय संस्कृति जनहित में किये गये कार्यों को पुण्यदायी माना गया है, जैसे- कुआँ और जलाशय खुदवाना, विद्यालय, धर्मशाला और मन्दिर बनवाना, वृक्षारोपण करना आदि; क्योंकि ये सब व्यक्ति के मरने के बाद भी संसार का कल्याण करते रहते हैं। ऐसी मान्यता है कि इससे परलोकगत आत्मा को इसका पुण्य मिलता रहता है और उसे शान्ति मिलती है। इन सबमें भी वृक्षारोपण की महिमा सर्वोपरि है; क्योंकि इनसे संपूर्ण सृष्टि को लाभ मिलता है।

स्कन्दपुराण में कहा गया है-

ईश्वरः सर्वभूतानां कृपया वृक्षमाश्रितः। (6.24.24)

अर्थात्- ईश्वर सभी प्राणियों पर कृपा करने के लिए वृक्षों में निवास करते हैं।

गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है-

अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां... -गीता, 10.26

अर्थात् - सभी वृक्षों में मैं पीपल हूँ।

भारतीय आर्ष ग्रन्थों में वृक्षों को तरुपुत्र/तरुमित्र कहा गया है।

तरु का शाब्दिक अर्थ है, तारने वाला। वृक्षों को तरु अर्थात् रोपणकर्ता को तारने वाला कहा गया है। इस नामकरण से ऋषियों ने सिद्ध करने का प्रयास किया है कि वृक्ष व्यक्ति को सद्गति दिलाने में पुत्र और भगवान् की तरह हैं। ऋषि इस रहस्य को जानते थे कि वृक्ष-वनस्पति ही पृथ्वी के जल भण्डार को अक्षुण्ण बनाये रखती है। यह वह अमूल्य धरोहर है, जिस पर मानवीय जीवन का अस्तित्व टिका हुआ है। जैसे पुत्र वंश वृद्धि में सहायक है, उसी प्रकार वृक्ष भी अपने फल-फूलों व अन्य गुणों से प्रकृति का एवं पृथ्वी पर उपस्थित पशु-पक्षियों, जीव-जन्तुओं एवं हर प्रकार के जीवन का संरक्षण करते हैं; इसीलिये उन्होंने दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष की संज्ञा दी है।

अपने आस-पास या वीरान में स्थित किसी विशालकाय बरगद, पीपल, गूलर, पाकड़ आदि के एक वृक्ष से प्रतिदिन भोजन, छाया, आश्रय और सुरक्षा पाने वालों की संख्या की कल्पना करें। स्थूल अनुमान में भी यह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संख्या हजारों-लाखों के लगभग होगी, किन्तु एक सूक्ष्म जीव विज्ञानी की दृष्टि में यह संख्या करोड़ों-अरबों तक चली जायेगी। अध्यात्मज्ञानी इन पर असंख्य अदृश्य आत्माओं के आश्रय लेने की बात कहते हैं। पुराणकार तो यहाँ तक कहते हैं कि इन वृक्षों के पुष्पों से देवताओं को सेवा मिलती है, वर्षा होने पर वृक्ष से गिरने वाले जल से पितरों को तृप्ति मिलती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि एक वृक्ष द्वारा किये जाने वाले परोपकार का हजारवाँ हिस्सा भी मनुष्य अपने दैनिक उपार्जन से नहीं कर पाता। अतः शास्त्रों में इन परोपकारी वृक्षों को रोपित करने, पाल-पोस कर बड़ा करने, जल देने व सुरक्षा करने को असीम पुण्यदायी कृत्य बताया गया है। वास्तव में परोपकारी वृक्षों के रोपण, सेवा, रक्षा में जो कोई भी व्यक्ति जिस किसी भी तरह से सहयोग करता है, उसे इस वृक्ष से भोजन, छाया, आश्रय पाने वाले प्राणियों एवं आत्माओं का आशीर्वाद और पर्यावरण सेवा के पुण्य का फल मिलता है और यह पुण्य तब तक सतत मिलता रहता है, जब तक वृक्ष अस्तित्व में रहता है। इसीलिए शास्त्रों में वृक्षों को पुत्र रूप में मानने का विधान बताया गया है।

इन परोपकारी वृक्षों के विनाश का कारक बनने वालों या उनके पतन में किसी भी प्रकार सहयोग देने वालों को भी सावधान हो जाना चाहिए। इनकी हत्या से जिन लाखों दृश्य-अदृश्य प्राणियों और आत्माओं का भोजन, पानी, छाया, सुरक्षा एवं आश्रय छिन जाता है, उनकी आह क्या उनको कभी सुख से बैठने देगी ? शायद नहीं।

1. मत्स्यपुराण में कहा गया है-

दशकूपसमो वापी दशवापीसमोह्रदः।
दशह्रदसमः पुत्रो दशपुत्रसमः द्रुमः॥

– विधान पारिजात खण्ड 4 अध्याय 49

अर्थात्- एक कुएँ के निर्माण से व्यक्ति को इतना पुण्य प्राप्त होता है कि वह उतने वर्ष स्वर्ग में रहता है, जितनी कि उस कुएँ में पानी की बूँदें हैं। दस कुओं के निर्माण में जो पुण्य प्राप्त होता है, वह एक तालाब के निर्माण के समान है और दस तालाबों के निर्माण में जो पुण्य प्राप्त होता है, वह एक ह्रदः, विशाल सरोवर, झील के निर्माण के समान है। जो दस विशाल सरोवर बनवाये, उसका पुण्य एक नेक और गुणवान् पुत्र के जन्म के समान है तथा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दस नेक और गुणवान् पुत्रों से जो पुण्य मिलता है, वह एक वृक्ष के रोपण के समान है।

2. महाभारत में कहा गया है–

अतीतानागतौ.........धर्म्मतः शुभाः। –हेमाद्रि दानखण्ड, अध्याय–13

वृक्ष रोपने वाला अपने अतीत और वर्तमान दोनों पितृवंशों का उद्धार करता है। अतः वृक्षों का रोपण करना चाहिए। पुष्पित और फलवान् होकर वृक्ष मानवों को फल प्रदान करते हैं। वृक्ष की पुत्रवत् रक्षा करने पर वृक्ष इस लोक एवं परलोक में उनका उद्धार करते हैं। इसीलिए यश तथा धन चाहने वाले सदा बावड़ी, जलाशय के किनारे वृक्ष का रोपण करें एवं उनका पुत्रवत् पालन करें।

3. रामायण एवं महाभारत में वृक्ष को तरुपुत्र/तरुमित्र कहा गया है–

पुन्नाम्नो नरकाद्यस्मात् .....पाति सर्व्वतः। – रामायण 2.107.12

पुन्नाम्नो नरकाद्यस्मात् .....स्वयमेव स्वयम्भुवा। – महाभारत 1.74.37

पुत्र पितरों का 'पुत्' नामक नरक से उद्धार करता है, इसीलिये उसे पुत्र कहा गया है। वही पुत्र है, जो पितरों की सब ओर से रक्षा करता है। तरुपुत्र उसी सत्कर्मी सन्तान के समान है, इसीलिए स्वयं ब्रह्मा ने इन्हें पुत्र की संज्ञा दी है।

'पुत्' नामक घोर नरक का वर्णन वामन पुराण के 58वें अध्याय में दिया गया है, जिसमें सोलह प्रकार के पाप आते हैं। सन्तान के सत्कर्मों के बल पर ही पितर उस नरक से छुटकारा पा सकते हैं। पद्म पुराण में कहा गया है कि सन्तान के कुमार्गगामी होने पर पितर घोर नरक में पड़ते हैं और उसमें रहते हुए बार–बार शाप देते हैं। जैसे खराब नाव से जल को पार करने से मूर्ख डूब जाते हैं, उसी तरह कुपुत्र होने से पिता गहरे अन्धकार में डूब जाते हैं। इसीलिए ऋषियों ने आत्मोत्थान एवं सद्गति प्राप्ति की दृष्टि से सन्तान की तुलना में वृक्ष को पुत्र रूप में स्वीकार करने का उपाय बताया है।

4. पद्मपुराण में कहा गया है –

अपुत्रस्यच.......शेषः। –विधान पारिजात, खण्ड 4 अ. 206

पुत्र के रूप में वृक्ष लगाने वाले पुत्र हीन को वृक्ष सुख प्रदान करते हैं। वृक्षों को तर्पण करने से तीर्थ में तर्पण हो जाता है। इस लोक और परलोक में ये धर्मपुत्र कहे जाते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

5. अग्निपुराण में कहा गया है–

तस्मात् सुबहवो......मुनिवद्देषवर्जितः।।

उन्नति की इच्छा रखने वाले अनेक वृक्षों को लगायें। उनका पुत्र के समान पालन–पोषण करें। वे धर्म के द्वारा पुत्र कहे गये हैं। धर्म से विमुख जन इस मर्त्यलोक में केवल स्वार्थ के वशीभूत हैं। वृक्ष को पुत्र रूप में जिन्होंने वरण किया, वे दूसरों के लिए अनुकरणीय हैं। वृक्ष, पत्ते, पुष्प, फल, पहनने हेतु वस्त्र और लकड़ी के द्वारा दूसरों का उपकार एवं पितामहों का उद्धार करते हैं। वृक्षों को काटने वाले के उपस्थित होने पर भी वे उसे मुनि के समान द्वेष रहित होकर छाया, पुष्प और फलादि से उनकी सेवा करते हैं।

6. नन्दिपुराण में तरुपुत्र–

तरुपुत्रन्तु.......पदं शुभं। –विधान पारिजात, खण्ड 4 अ. 206

जो व्यक्ति विधिपूर्वक अग्नि का स्थापन करके पुत्र के रूप में वृक्ष का रोपण और उत्सर्ग करता है, वह सम्पूर्ण महापातकों से अधोगति में पड़ी हुई अपनी तीन पीढ़ियों का उद्धार करता है। वह व्यक्ति अपने पितरों के साथ नरक से मुक्त होकर प्रजापति के लोक में अर्थात् पितृलोक में जाता है।

7. विष्णु स्मुति में तरुपुत्र–

वृक्षारोपयितुर्वृक्षाः ......उदकेन पितृन्।।

–विष्णुस्मृति : पं. श्रीराम शर्मा आचार्य रचित वाङ्मय सं. 34

जो वृक्षारोपण करता है, उसके द्वारा रोपित वृक्ष परलोक में पुत्र होते हैं। वृक्ष प्रदाता उस वृक्ष के फूलों से देवताओं को प्रसन्न करता है, मेघ के बरसने पर छाया के द्वारा अभ्यागतों को तथा जल से पितरों को प्रसन्न करता है।

8. वाराहपुराण में कहा गया है–

यथा.......नरकादुद्धरन्ति। (37)

सांवत्सरं.......तत्त्वविदो विदुः। (41) –वाराह पुराण अ. 170

जैसे सुपुत्र कुल का उद्धार करता है, उसी प्रकार कठिन नियम और प्रयत्न से लगाये गये वृक्ष अपने स्वामी का उद्धार करते हैं। वृक्ष प्रतिवर्ष फलों द्वारा माता–पिता (अपने लगाने वाले) का उपकार करते हैं। तत्त्वविदों का कहना है कि मनुष्य द्वारा लगाये गये वृक्ष उसके पुत्र तुल्य होते हैं।

9. तरुपुत्र के प्रति संवेदनशीलता–

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राचीनकाल में वृक्ष को पुत्र रूप में धारण करने वाले लोग इस वृक्ष की सेवा और सुरक्षा के प्रति कैसा दृष्टिकोण रखते थे। यह कालिदास कृत रघुवंश महाकाव्य द्वितीय सर्ग में सिंह द्वारा राजा दिलीप की वार्ता से स्पष्ट है। सिंह राजा दिलीप से कहता है-

अमुं पुरः ....मातुः पयसां रसज्ञः।

अर्थात्-हे राजन्! तुम सामने खड़े देवदारु का पेड़ देख रहे हो। शिवजी व माता पार्वती जी ने इसे अपना पुत्र माना है। माता पार्वतीजी ने अपने स्वयं के दूध से सिंचन कर इसे इतना बड़ा किया है।

कण्डूयमानेन........ असुरास्त्रै।

एक बार किसी जंगली हाथी ने अपनी कनपटी को रगड़ते हुए इस देवदारु की छाल को थोड़ा सा छील दिया तो पार्वती जी ने वैसा शोक किया था, जैसा कि उन्होंने अपने पुत्र कार्तिकेय के असुरास्त्रों से घायल होने पर किया था।

10. बृहत् संहिता में वृक्ष काटने से पूर्व उसकी पूजा एवं उससे क्षमा याचना का विधान दिया गया है-

भारतीय मान्यता में वृक्ष काटने से पूर्व उसकी पूजा की जाती थी और उस पर आश्रित आत्माओं से क्षमा याचना की जाती थी। उसका विधान कुछ इस प्रकार है- "**वृक्ष काटने से एक दिन पूर्व खीर, लड्डू, भात, दही आदि भक्ष्य वस्तु, मधु, पुष्प और सुगन्धित द्रव्यों से वृक्ष की पूजा करें। रात में देवता, पितर, पिशाच, राक्षस, नाग, सुरगण, गणेश आदि (भूत, प्रेत, सिद्ध, विद्याधर और गन्धर्व)की पूजा करके वृक्ष को स्पर्श करें और प्रार्थना करें- हे वृक्ष! अमुक कार्य के लिए कल्पित किये गये आपको नमस्कार करता हूँ। विधिपूर्वक इस पूजा को ग्रहण करें तथा इस वृक्ष पर जो प्राणीगण निवास करते हैं, वे सब विधिपूर्वक इस पूजा को ग्रहण करके कहीं अन्यत्र निवास स्थान कल्पित करें, आज वे सब क्षमा करें। उन सबको मैं नमस्कार करता हूँ।**"

-देखें बृहत् संहिता अध्याय 59, श्लोक 8-12

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

८. तरुसिञ्चन

वृक्षों को जल-दान का महत्त्व

जल की पर्याप्तता पौधों के भोजन निर्माण पर दो तरह से प्रभाव डालती है, एक तो कार्बन डाईऑक्साइड के साथ रासायनिक अभिक्रिया कर भोजन निर्माण एवं दूसरे स्टोमेटा को पर्याप्त जल दबाव से खोले रखना, जिससे पत्ती में बाहर से कार्बन डाईऑक्साइड आती रहे। डी. थोडे नामक वैज्ञानिक ने सूरजमुखी के हलके मुरझाए और पूर्ण तृप्त पौधों के भोजन निर्माण में दस गुने का अन्तर पाया। ओ. बर्नबेक ने पाया कि स्टोमेटा खुले रहें, तो भी पानी की कमी पौधे में भोजन बनाने की गति को बहुत धीमी कर देती है। पेड़-पौधों के लिए जल की आवश्यकता पर अध्ययन करने वाले प्रसिद्ध वैज्ञानिक टी. टी. कोल्जोवस्की ने पाया कि वृद्धिकाल में पौधों को पानी न मिलने से बढ़त की बहुत हानि होती है, इस कमी का कुप्रभाव पौधों की अगले वर्ष की बढ़त पर भी पड़ता है। एन. एफ. चिल्डर्स नाम के वैज्ञानिक ने अपने शोध में पाया कि मुरझाया सेब वृक्ष सामान्य सेब वृक्ष की तुलना में मात्र 15 प्रतिशत भोजन बना पाता है, मुरझाये पौधे में पर्याप्त पानी देने के बावजूद सामान्य वृद्धि 2 से 7 दिन में आ पाती है, जो यह बताती है कि पानी की कमी पौध में कुछ संरचनात्मक विकृतियाँ भी ला देती है।

तरुसिंचन का महत्त्व

वृक्षों की सेवा में जल से सिंचन का स्थान सर्वोपरि है। उसमें भी ग्रीष्म ऋतु में थाँवला (थाला) बनाकर जल दान को विशेष पुण्यदायक माना गया है। गर्मी के महीने वृक्ष-वनस्पतियों एवं पशु-पक्षियों के लिए कठिनाई भरे होते हैं। पर्याप्त जल पाने से वृक्ष के जीवन की रक्षा होती है, वे तेजी से बढ़ते हैं और पर्यावरण सुधरता है। इन पर आश्रित प्राणियों को, पशु-पक्षियों को नमी से भरी पर्याप्त भोज्य सामग्री मिल जाती है। जल देने से वृक्षों में पर्याप्त शीतलता छाई रहती है, जिससे पशु-पक्षियों तथा विशेषकर उनके अण्डे-बच्चों की लू की लपटों से रक्षा होती है। पेड़-पौधों के थाँवलों में भरे गये जल से अन्य पशु-पक्षियों को पीने का पानी मिल जाता है। इस तरह पेड़-पौधों को जल देने से व्यक्ति को प्राणिजगत् का आशीर्वाद मिलता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानवीय चेतना पर शोध करने वाले ऋषियों का मानना है कि तरुसेवा में व्यक्ति जो श्रम और पुरुषार्थ व्यय करता है, उससे उसका पाप क्षीण होता है, पुण्य बल बढ़ता है। इसके प्रभाववश उसके सभी प्रकार के दुःख-दुर्भाग्य दूर होते हैं। स्कन्द पुराण 6.247 में लिखा है कि पीपल वृक्ष की पूजा एवं सिंचाई सभी प्राणियों को सुख देने वाली, सभी प्रकार के कष्ट और पाप हरने वाली है।

कई धर्मों में वृक्षों को देवता के रूप में पूजा जाता है। देने वाले को देवता कहते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में देखें तो वृक्ष का हर क्षण परोपकारी है। वृक्ष हमारे प्रत्यक्ष देवता हैं। ऋषि-मनीषियों ने इसीलिए वृक्षों की पूजा करने और उन्हें जल अर्पित करने का विधि-विधान निर्धारित किया है। तुलसी स्वास्थ्य की दृष्टि से अमृततुल्य है, इसीलिए हर रोज तुलसी के थाँवले पर दीपक जलाकर प्रार्थना करने और जल देने का विधान है। इसके साथ ही अलग-अलग पर्वों पर अलग-अलग वनस्पतियों के पूजन का विधान है। पूजन का अर्थ है- उनके उपकारों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना। उनके गुणों को अपनाने का प्रयत्न करना।

उपासना का विज्ञान कहता है कि हम मन से जिसके करीब बैठते हैं उसके गुण हमारे अन्दर विकसित होने लगते हैं। वृक्षों को जल देने का आध्यात्मिक ही नहीं, वैज्ञानिक महत्त्व भी है। कुछ लोग अन्धविश्वास कहकर शास्त्र में लिखी बातों का मजाक उड़ाते हैं और उनकी उपेक्षा करते हैं, तो कुछ लोग मात्र कर्मकाण्ड में ही उलझकर रह गये हैं और लकीर पीटते रहते हैं। प्रायः देखा गया है कि लोग मन्दिरों में जाकर तुलसी में जल चढ़ाते रहते हैं, भले ही वह गमले से बाहर ढुलक रहा हो और पास में लगा दूसरा पौधा सूख रहा हो; पर उसमें जलदान का उन्हें तनिक भी ध्यान नहीं आता।

जेठ में गरमी से झुलसते बरगद की सिंचाई के लिए वटसावित्री व्रत निर्धारित है। यह व्रत त्रयोदशी, चतुर्दशी एवं अमावस्या तीन दिन में पूरा होता है। तीन दिन तक बरगद को खूब जल से सींचा जाता है; किन्तु लोग लोटा भर जल अर्पित करते हैं और केवल पूजन में लग जाते हैं। कुछ लोग तो इस दिन इस वृक्ष की डाल काटकर उसे गमले में रोपित कर पूजा करते एवं जल देते हैं। पूजन समाप्त होने पर अन्य पूजन सामग्री के साथ विसर्जित कर देते हैं। किसी का गला काटकर उसके मुँह में पानी देने से क्या कभी कोई खुश हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकता है ? कभी नहीं। इन मूढ़ मान्यताओं से ऊपर उठ कर इनके वास्तविक विज्ञान को समझना और तदनुसार व्यवहार करना चाहिये।

ऋषियों द्वारा दिये गये विधानों में वास्तव में वैज्ञानिक रहस्य ही छिपे हैं, जिन्हें उन्होंने धार्मिक स्वरूप में प्रस्तुत किया है। चन्दन की सुगन्ध से त्वचा को लाभ मिलता है, इसी प्रकार आम, अमरूद, नीम, पीपल आदि सभी वृक्षों की अपनी-अपनी सुगन्ध और तरंगें होती हैं, जो उनके सान्निध्य में रहने वालों को उनका लाभ पहुँचाती हैं। सभी वृक्ष-वनस्पतियों का कुछ न कुछ औषधीय महत्त्व भी है। उनके फल-फूल खाने से ही नहीं; बल्कि उनकी छाया और उनके सान्निध्य में रहने से भी कई प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक लाभ प्राप्त होते हैं, जिससे व्यक्ति को सुख और आरोग्य की प्राप्ति होती है। एक उद्देश्य शायद यह भी रहा होगा कि किसी भी प्रकार मनुष्य सभी प्रकार के वृक्षों का रोपण करे और नियमित रूप से जल का सिंचन कर उनकी रक्षा भी करे। कर्मफल के सिद्धान्त के अनुसार हमारे द्वारा किये गये परोपकार के कार्यों से हमारे क्रियमाण और सञ्चित दुष्कर्मों का नाश होता है। साथ ही हमारे प्रारब्ध कर्म भी नष्ट होते हैं। इसी को शास्त्रों में प्रकारान्तर से मनोकामनाओं की पूर्ति कहा गया है। वृक्षों का सिंचन करने से विविध मनोकामनाओं की पूर्ति होती है। यहाँ इसके कुछ उदाहरण संक्षेप में दिये जा रहे हैं-

1. सुन्दर-पवित्र-व्यक्तित्त्व, सुख-सौभाग्य की प्राप्ति-

केले के वृक्ष का भावनापूर्वक सिञ्चन करने से पूरे परिवार को सुन्दर, पवित्र व्यक्तित्त्व प्राप्त होता है, परिवार में श्रेष्ठ अनुकरणीय सच्चरित्रता, सरलता व सरसता विकसित होती है। इसका विस्तृत विधान और उसके फल का वर्णन भविष्योत्तर पुराण से लेकर हेमाद्रि की 'चतुर्वर्ग चिन्तामणि' और 'व्रतराज' पुस्तक में दिया गया है।

2. दुर्गन्ध-दुर्भाग्य का नाश-

शरीर से आने वाली दुर्गन्ध और दुर्भाग्य के विनाश के लिए ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी को श्वेत आम, लाल कनेर व सपुष्प नीम को जल से सिंचित कर पूजा करने का विधान भविष्योत्तर एवं नारदपुराण में दिया गया है, ये तीनों वृक्ष सूर्य भगवान् को प्रिय हैं, अतः इनको पूजा भाव से सींचने से सब प्रकार का दुर्भाग्य और दुर्गन्ध सदा के लिए दूर हो जाते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

3. दुर्लभ वर की शीघ्र प्राप्ति-

भविष्य पुराण के उत्तर पर्व सोलहवें अध्याय में महुए की पूजा द्वारा कन्या के लिए दुष्प्राप्य दुर्लभ वर प्राप्त करने का व्रत बताया गया है। जो कन्या इस उत्तम तृतीया (मधूक तृतीया) व्रत को करती है, वह तीनों लोकों में दुष्प्राप्य भगवान् विष्णु के समान पति प्राप्त करती है। पुराण के अनुसार समुद्र मन्थन से महुआ वृक्ष उत्पन्न हुआ, जिस पर भगवती गौरी ने अपनी जया, विजया सखियों सहित आश्रय ग्रहण किया। मधूक तृतीया व्रत फाल्गुन मास की शुक्ल तृतीया को किया जाता है, जिसमें पवित्रता एवं व्रतपूर्वक विविध वस्तुओं से महुए के वृक्ष की पूजा की जाती है। "हे माँ गौरी! आप मुझे सौभाग्य प्रदान करें। आप मेरे दुर्भाग्य का शमन करें, दूसरे जन्मों में भी मेरा सौभाग्य अखण्डित रहे। आप सर्वदा मुझ पर प्रसन्न रहें।" ऐसी प्रार्थना करते हुए इस मन्त्र का उच्चारण करें -

ॐ भूषिता देवभूषा च भूषिका ललिता उमा।
तपोवनरता गौरी सौभाग्यं मे प्रयच्छतु॥
दौर्भाग्यं मे शमयतु सुप्रसन्नमनाः सदा।
अवैधव्यं कुले जन्म ददात्वपरजन्मनि॥

4. रोग नाश-

विधान पारिजात में अद्‌भुत सागर के सन्दर्भ से समस्त रोग, विपत्ति दुःख व भयों के नाश के लिए पीपल वृक्ष की श्रद्धापूर्वक सेवा, परिक्रमा करने का विधान विस्तार से दिया गया है। इसके अनुसार पीपल की सेवा करने से क्षय रोग, मिर्गी, कोढ़, प्रमेह, विभिन्न प्रकार के ज्वर, उदर रोग, मूत्रकृच्छ, ग्रह ग्रस्तता, फोड़े आदि विभिन्न रोग नष्ट हो जाते हैं।

भविष्योत्तर पुराण में कहा गया है कि जो मनुष्य अशक्त होने पर भी चातुर्मास में प्रतिदिन घड़े के जल से पीपल की जड़ को एकाग्र मन से सिंचन करता है, उसके सभी पाप, दुःख और रोग नष्ट हो जाते हैं तथा घर-परिवार भी समृद्धि पाता है। जो चातुर्मास में इस वृक्ष की जड़ का सिंचन करता है, उसे सभी दुर्लभ फल प्राप्त होते हैं।

5. वाञ्छित सन्तान की प्राप्ति-

जब सन्तान जन्मने से पूर्व या जन्म लेते ही मर जाती हो, अथवा गुणवान् सन्तान प्राप्त करने की कामना हो, तब विधानमालाग्रन्थ में वर्णित

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विधि से पीपल वृक्ष की पूजा करने एवं उसे जल देने से कामना की पूर्ति होती है। शुक्रवार और प्रदोष को दिन भर उपवास कर पति-पत्नी शाम को पीपल वृक्ष के पास जाकर एकाग्रचित्त होकर इस भाव से प्रार्थना करें कि 'हे बोधिवृक्ष! हे महावृक्ष! हे महापापनाशक! भगवद्स्वरूप जगत्पिता आप हमें क्षमा करें।'

इस प्रकार प्रार्थना कर प्रदक्षिणा कर वृक्ष के थाँवले में जल भरकर अपने घर आयें। रात्रि को गले में तुलसी की माला पहन कर बन्द नेत्रों से भगवान् का स्मरण कर ब्रह्मचर्यपूर्वक भूमि पर सोयें। प्रातःकाल उठकर गंगाजल एवं तिल से स्नान कर सदम्पती आदरपूर्वक पीपल वृक्ष के पास बैठकर विष्णु सहस्रनाम का जप करें। उसके बाद वृक्ष के चारों तरफ एवं ऊपर-नीचे जल छिड़ककर वहाँ पुष्प, चन्दन अर्पित करें और पीपल पर केसर-कुंकुम का लेपन करें, फिर थाँवले में जल, दूध, दही, घी और मधु डालें। इसके बाद आचार्य का वरण कर हवन करें। हवन के बाद पीपल वृक्ष को सूत से घेरें, गन्ध पुष्प अक्षत से वृक्ष की आरती करें। प्रार्थना करें- 'हे बोधिवृक्ष! महावृक्ष! महापापनाशक! हमें सन्तति दें तथा जीवित सन्तान दें।' इस प्रकार वृक्ष को प्रार्थना और प्रणाम करके आचार्य को भोजन करायें। भगवान् के 24 नामों का स्मरण करें। इस श्रेष्ठ विधि से पीपल का पूजन करने से अक्षय गुणों से युक्त सन्तान प्राप्त होती है।

6. पापनाश एवं सौभाग्य प्राप्ति-

पौराणिक मान्यता के अनुसार सोमवती अमावस्या के दिन पीपल के मूल में लक्ष्मी सहित विष्णु की पूजा करते हुए पीपल को जल से सींचना चाहिए और उसकी परिक्रमा करनी चाहिए, इससे सब पापों एवं दुर्भाग्य का नाश होता है व परम सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

7. पितरों का आशीर्वाद-

पीपल, आम, आँवला एवं तुलसी में पितरों की कामना करके सिंचन करने से वह जल पितरों को प्राप्त होता है। आम को सींचने वाला पितरों को प्रिय होता है। इस प्रकार एक क्रिया से दो कार्य सिद्ध होते हैं। आँवले की जड़ में जल अर्पण करने से पिता, पितामह एवं पुत्रहीन सगोत्री पितर सब उस अक्षय जल का पान कर तृप्त होते हैं। श्रीहरिभक्तिविलास के 13 वें विलास में यह धात्रीसिंचन फल और विस्तार से कहा गया है, यथा-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पिता पितामहाश्चान्ये ...... कुर्य्याज्जागरणं व्रती ॥

अर्थात्- पिता, पितामह, पुत्रहीन सगोत्री, वृक्षयोनि-कीटयोनि में गये, रौरव व महारौरव नरक में पड़े त्रियोनि में गये एवं ब्रह्माण्ड मध्य में स्थित, पिशाच और प्रेत रूप को प्राप्त आत्माएँ आँवले की जड़ में मेरे द्वारा दिये गये दूध/जल को पीयें तथा वे लोग आँवले की जड़ के सिंचन से तृप्त हों। इस प्रकार आँवले का एक सौ आठ बार सिंचन करने के बाद वृक्ष की प्रदक्षिणा करके जागरण व्रत करें। 'धर्मसिन्धु' के वैशाख मास कृत्य में कहा गया है कि- "वैशाख माह में प्रात: स्नान कर बहुत से जल द्वारा पीपल की जड़ को सींचें। अनेक प्रदक्षिणा करें, तो कुल का तारण होता है।" मृतक की तेरहवीं समाप्त होने के बाद मृतक आत्मा की तृप्ति के लिये अश्वत्थ पूजन किया जाता है। जिससे तीन सौ साठ घड़े जल से अर्थात् वर्ष भर तक उसे सींचने का संकल्प लिया जाता है। बृहद् धर्मपुराण के अनुसार चातुर्मास एवं चैत्र मास में बेल सिंचन से पितरों को तृप्ति होती है। इन दिनों में बेल वृक्ष का सिंचन करने पर वृक्ष जिस प्रकार स्निग्ध (उल्लसित) हो जाता है, उसी तरह जलदाता के पितर भी स्निग्ध हो जाते हैं।

8. प्रेतात्माओं को तृप्ति देने का पुण्य-

मत्स्यपुराण में कहा गया है कि मृत्यु के पश्चात् प्रेतात्मा बारह दिनों तक अपने गृह, पुत्र और पत्नी की तरफ देखती है, अत: उसकी समस्त जलन को शान्त करने, मार्ग की थकावट का विनाश करने के निमित्त दस रात तक आकाश में (पीपल वृक्ष में बँधा हुआ) जल घट रखना चाहिए। इसीलिए मृतक का दाह संस्कार पूरा करने के बाद प्रेत आत्मा को तृप्ति देने के लिए जल से भरा घड़ा पीपल वृक्ष पर लटकाया जाता है, जिससे बूँद-बूँद कर जल पीपल की जड़ पर गिरता रहता है। द्वितीय दिन से दस रात्रिपर्यन्त प्रात:-सायंकाल में पीपल के समीप जल और दीपक का दान देना चाहिए।

मान्यता है कि जीवात्मा समुचित अन्त्येष्टि संस्कार के बाद प्रेत योनि से मुक्त हो जाती है, किन्तु ऐसे लोग जो अकाल मृत्यु को प्राप्त होते हैं, उनकी जीवात्मा, जीव की स्वाभाविक मृत्यु की अवधि तक प्रेत अवस्था में किसी वृक्ष आदि पर रहती है। इन्हें प्यास अधिक सताती है। महाकवि तुलसीदास के बारे में कहा जाता है कि जिन दिनों वे भगवान् राम के दर्शन को बेचैन थे, उन दिनों अनजाने में वे शौच के बाद बचे जल को बबूल की जड़ में डाल देते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इससे बबूल के पेड़ पर रहने वाला एक प्रेत बहुत प्रसन्न हुआ तथा सामने प्रकट होकर तुलसीदास जी को हनुमान् जी के दर्शन की विधि बताई थी।

9. ग्रह शान्ति-

शनि ग्रह की शान्ति के लिए पीपल या शमी वृक्ष को जल देने के लाभ से हर कोई परिचित है। भारतीय मान्यता में हर ग्रह के लिए एक वनस्पति प्रजाति निर्धारित है। जिसकी समिधा से हवन करने से सम्बन्धित ग्रह की शान्ति होती है। विभिन्न ग्रहों की शान्ति के लिए निर्धारित समिधा वनस्पतियाँ निम्नानुसार हैं- सूर्य-आक, चन्द्र-पलाश, मंगल-खैर, बुध-अपामार्ग, बृहस्पति-पीपल, शुक्र-गूलर, शनि-शमी, राहु-दूब, केतु-कुश। नारदपुराण में कहा गया है कि जब जिस नक्षत्र में शनि विद्यमान हो, उस समय उस नक्षत्र के वृक्ष की सेवा (सिंचन) करने से भी शनि ग्रह शान्त होते हैं।

10. ग्रह-नक्षत्रों की अनुकूलता-

ऋषियों के अनुसार हर नक्षत्र का एक वृक्ष निर्धारित है। मनुष्य का जन्म जिस नक्षत्र में हुआ रहता है, उस नक्षत्र के वृक्ष का उस मनुष्य पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। अगर आप अपने नक्षत्र वृक्ष का संवर्धन करते हैं, तो आपके सुख-सम्पत्ति, आरोग्य आदि की वृद्धि होगी तथा यदि आपके आसपास स्थित आपका नक्षत्र वृक्ष क्षतिग्रस्त हो रहा है या पीड़ाग्रस्त है तो आपको भी पीड़ा होगी। ये सभी बातें नारद पुराण, नारद संहिता, राजनिघण्टु एवं अन्य आयुर्वेदिक और तान्त्रिक ग्रन्थों में विस्तार से कही गयी हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

9. वृक्षारोपण को अभियान बनायें आपदाओं को दूर भगाएँ

आज वृक्षारोपण केवल पुण्यदायी कर्म ही नहीं, एक राष्ट्रधर्म के रूप में देखा जाना चाहिए। धरती माँ का आँचल सूना होता जा रहा है। उसे पुनः हरा-भरा करने के लिये स्वाधीनता संग्राम जैसे ही किसी आंदोलन और वैसी ही लगन वाले शूरवीरों की जरूरत है। राष्ट्र के विकास के लिये न जाने कितनी योजनायें चल रही हैं; परन्तु यदि पर्यावरण ही न बचा तो सभी योजनाएँ विफल हो जायेंगी। आज सर्वप्रथम आवश्यकता है- पर्यावरण संरक्षण की। हम तरुमित्र या तरुपुत्र बनकर वृक्षों की सेवा करें तो अक्षय पुण्य के भागीदार बन सकते हैं।

वृक्ष कहाँ एवं कैसे लगायें

1. अपनी जमीन है तो सर्वोत्तम, उसमें यथासम्भव अधिकाधिक वृक्ष लगाएँ।
2. शहरों में घर के सामने, गेट के दोनों ओर अशोक वृक्ष लगाए जाएँ। यह देखने में सुन्दर, औषधीय गुणों से भरपूर और कम फैलाव वाले वृक्ष हैं।
3. घरों के आँगन में कच्ची जमीन न हो, तो बड़े गमले में कम फैलाव वाले गुड़हल एवं चाँदनी के फूलों की बेल आदि लगा सकते हैं।
4. सरकारी सड़कों के किनारे, रेलवे लाइन के समीप जहाँ बेकार जमीन पड़ी हो, वहाँ अपने श्रम से पेड़ लगाये जा सकते हैं, उनका स्वामित्व सरकारी रहे, तो भी हर्ज नहीं।
5. गाँव के रास्तों के किनारे छायादार, चारे के वृक्ष एवं शहतूत, जामुन, लोकाठ, बड़हल आदि लुप्त होते जा रहे उन फलों के वृक्ष लगाएँ, जो बाजार में कम ही दिखते हैं और जिन्हें आज के वृद्ध बचपन में कभी वृक्षों पर चढ़-चढ़ कर खाया करते थे।
6. ऊसर भूमि कितनी ही जगह पड़ी है। ग्राम पंचायतों से पूछ कर खाली जगह का प्रयोग किया जा सकता है।
7. चरागाहों और जंगलों का विकास करें, उनमें सघन वृक्षारोपण करें।
8. प्रत्येक गाँव के देवस्थान/वन गोचर, बंजर भूमि में अधिकाधिक वृक्षों का रोपण करें।
9. शहरों कस्बों में उजड़े उद्यानों को फिर से हरा-भरा करें, विकसित करें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

10. शहरों-कस्बों में अक्सर खाली पड़े प्लॉट में गन्दगी का घर बन जाते हैं। अपने आस-पास के ऐसे स्थान को तुलसी वाटिका, पुष्प वाटिका, औषधीय पौधे लगाकर स्वास्थ्य वाटिका में रूपान्तरित करें। इससे गन्दगी एवं बीमारी से भी बचाव होगा और आसपास के लोग उसका लाभ भी ले सकेंगे। आवश्यकता हो तो प्लॉट मालिक से इसके लिये अनुमति ली जा सकती है।
11. नदियों, झीलों के तटों, किनारों पर भूमि क्षरण रोकने वाले एवं औषधीय वृक्षों का रोपण करें। तालाबों, कुओं, सरोवरों के किनारे विशेष रूप से बरगद, पीपल, गूलर आदि के वृक्ष लगायें।
12. वन प्रदेशों में जहाँ पेड़ काट तो लिये गये हैं, पर फिर लगाये नहीं गये, वहाँ जाकर वृक्ष लगायें। जंगलों एवं चरागाहों में विशेष रूप से फलदार वृक्ष लगायें; ताकि बन्दरों आदि वन्य पशुओं को आहार मिल सके। बन्दरों का गाँव, कस्बों और शहरों में आने का एक कारण जंगलों में पर्याप्त भोजन न मिल पाना भी है।
13. सामाजिक संगठनों एवं सरकारी कार्यालयों के परिसर में।
14. प्रत्येक विद्यालय में 24 पौधों का रोपण करायें। (जहाँ भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन होता है, वहाँ यह कार्य सहज है)
15. राष्ट्रीय/राज्य राजमार्गों के किनारे फलदार/छायादार वृक्ष लगायें।
16. श्मशान घाट पर धार्मिक महत्त्व वाले एवं छायादार वृक्ष लगायें।
17. खेतों की मेढ़ों पर फलदार एवं कृषि में सहायक पौधों का रोपण करें।
18. महाविद्यालयों के परिसरों में सम्पर्क कर वृक्षारोपण करें।
19. खाली, वीरान पड़ी छोटी-बड़ी पहाड़ियों पर।
20. औषधीय गुणों वाले वृक्षों को महत्त्व दें, जैसे- नीम, आँवला, अशोक आदि इन वृक्षों की पौध तैयार करके वितरित करें।
21. यज्ञ अथवा दीप यज्ञों में वृक्षों के तैयार पौधे प्रसाद रूप में संकल्पपूर्वक वितरित किये जायें तथा प्रत्येक कार्यक्रम में इस हेतु लक्ष्य निर्धारित करें।
22. शक्तिपीठों में, मन्दिरों में, उद्यानों में नक्षत्र वाटिका, राशि वाटिका, नवग्रह वाटिका, वास्तु वाटिकाओं आदि का रोपण करें। एक बोर्ड पर सम्बन्धित वृक्षों का महत्त्व भी लिखकर लगाने से लोग और अधिक लाभान्वित हो सकेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

23. विभिन्न धर्म स्थलों पर कुरानी, मसीही, बुद्ध, महावीर वाटिका, गुरु के बाग लगायें।

24. मन्दिरों में पर्यावरण शुद्धि हेतु त्रिवेणी (पीपल, बरगद, नीम) अथवा पंचवटी (नीम, पीपल, बरगद, जामुन, आँवला) रोपण, हरि शंकरी (पीपल, बरगद, पाकड़) का रोपण।

पौधे कहाँ से प्राप्त करें

1. फलदार पौधे- उद्यान विभाग से।
2. अन्य पौधे- वन विभाग व नर्सरी से
3. माली द्वारा कम लागत में बीज/कलमी पौधे तैयार किये जा सकते हैं।
4. शक्तिपीठों, मन्दिरों में यदि जगह है तो वहाँ भी पौध तैयार की जा सकती है।
5. अपने घर की छोटी-सी क्यारी में भी पौध तैयार कर सकते हैं।
6. नगरनिगम/पालिका से सम्पर्क करें।
7. सार्वजनिक स्थान हेतु सरकारी नर्सरी के पौधे प्राप्त कर सकते हैं।
8. पौधे एवं ट्री-गार्ड, बैंक, बीमा, उद्योग संस्थाओं से, पंचायत अथवा स्थानीय निकायों से प्रायोजित कराये जा सकते हैं।
9. तरुपुत्र या तरुमित्र बनाकर जन-भागीदारी से साधन जुटाये जा सकते हैं।

भूमि एवं साधन कहाँ से प्राप्त करें

1. ग्रामीण क्षेत्र में भूमि पर वृक्षारोपण हेतु सम्बन्धित पटवारी से उस स्थान का खसरा निकलवायें। तत्पश्चात् उस भूमि पर वृक्षारोपण हेतु ग्राम पंचायत में प्रस्ताव पास करवाकर वृक्षारोपण करें, जिसमें पंचायत का सहयोग भी लिया जाये।
2. रोड के दोनों ओर वृक्षारोपण हेतु पंचायत द्वारा तार फेन्सिंग करवाकर वृक्षारोपण करें, जिन्हें पालने की जिम्मेदारी आस-पास के दुकानदारों या रहवासियों को दी जा सकती है।
3. रेलवे के भूभाग पर वृक्षारोपण करने के लिए रेल विभाग से अनुमति व सहायता ली जा सकती है।
4. विद्यालयों में ईको क्लब द्वारा प्रति वर्ष इस हेतु कुछ राशि माध्यमिक, हाईस्कूल व हायर सेकेन्ड्री शालाओं को प्राप्त होती है। प्राचार्य से चर्चा कर विद्यालयों में तरुमित्र योजना द्वारा विद्यार्थियों को पर्यावरण आन्दोलन से जोड़कर पौधारोपण कर उनके संरक्षण का दायित्व विद्यार्थियों को दे दें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

5. नगरीय क्षेत्रों में नगर पालिका निगम या नगर पंचायत से ट्री-गार्ड की व्यवस्था बनवाई जा सकती है।
6. सस्ते बाँस खरीद कर बाँस की चिपली से भी सस्ते ट्री-गार्ड बनवाये जा सकते हैं। कँटीली तार का घेरा भी बना सकते हैं।
7. राष्ट्रीकृत बैंक/बीमा/पेट्रोलियम कम्पनी भी वृक्षारोपण हेतु ट्री गार्ड व साधन उपलब्ध करवाती है, उनसे भी इस कार्य हेतु सहयोग लिया जा सकता है।

खोजें वृक्षारोपण के अवसर

1. तरुपुत्र/तरुमित्र का संकल्प लें।
2. अपने जन्मदिन अथवा विवाह दिवस पर।
3. अपने पितरों की स्मृति में।
4. किसी महत्त्वपूर्ण अवसर, पर्व-त्यौहार पर।
5. हरियाली (तीज) महोत्सव पर।
6. नये भवन, परिसर के शुभारम्भ पर।
7. यज्ञों, कथाओं में, संस्कारों के आयोजन में प्रसाद रूप में पेड़े के साथ-साथ पेड़ भी बाँटें।
8. महाविद्यालयों /विद्यालयों में प्रवेश पर ज्ञान दीक्षा के अवसर पर।
9. स्कूल-स्कूल जाकर बच्चों में जागरूकता पैदा कर दी जाये तो वे परिवारजनों को भी प्रेमपूर्वक प्रेरित करते रहेंगे, बच्चों में यह भाव बहुत गहराई से भर दिया जाये कि पेड़ों में भी जीवन होता है, उसकी शाखा आदि काटने से उन्हें भी दर्द होता है।
10. अपना कीमती समय निकालकर पेड़ लगाने में नित्य-नियमित थोड़ा-थोड़ा पुरुषार्थ करते रहें।
11. स्वयंसेवक अपने संगठन तैयार कर वृक्ष गंगा अभियान में विशेष समय, पुरुषार्थ लगायें।
12. वृक्ष संरक्षण आदि के नियम-कानून की जानकारी लेकर इसके संरक्षण में विशेष रूप से मन लगायें।
13. तरु को अपना मित्र बना कर, पुत्र के रूप में गोद लेकर संस्था का सदस्य बनाकर (तरु मित्र, तरु पुत्र, तरु सदस्य) रोपण करें।
14. अपने गुरु व इष्ट को श्रद्धाञ्जलि स्वरूप वृक्ष लगायें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

15. अपने नक्षत्र का वृक्ष लगायें। (Plant your star tree.)
16. घरों में वास्तु के अनुसार वृक्ष लगायें, वास्तु वाटिका बनायें।
17. गाँव के देव स्थान को जाग्रत करें और त्रिवेणी (पीपल, बरगद, नीम), हरिशंकरी (पीपल, बरगद, पाकड़), पंचवटी (पीपल, बरगद, अशोक, बेल, जामुन) की स्थापना करें।
18. नदियों को वृक्षों की हरी चूनर चढ़ायें, तटों पर औषधीय, धार्मिक एवं पर्यावरण महत्त्व के पौधे लगायें ।
19. पहाड़ियों, टेकरियों को गोद लेकर हरा-भरा बनायें।
20. कृषकों के खेतों की मेढ़ पर पेड़ लगवायें।
21. मन्दिर और गाँव में नक्षत्र वाटिका, राशि वाटिका, नवग्रह वाटिका, वास्तु वाटिका की स्थापना करें।
22. विद्यालयों में तरुमित्र योजना चलायें। Eco Club के सहयोग से तरुमित्र बनाकर उनसे वृक्ष के रक्षण एवं पालन का संकल्प कराकर रोपण करायें।
23. गाँव-गाँव में तरुपुत्र यज्ञ करायें। वृक्ष को पुत्र रूप में स्वीकार करायें, रोपण एवं पालन का संकल्प करायें।

पालन-पोषण

मात्र पौधा लगाने को ही इतिश्री न समझा जाये। इनमें खाद-पानी देने तथा वृक्ष के रूप में विकसित होने तक इनकी समुचित देख-रेख की जाये। देख-रेख, सुरक्षा एवं परिपोषण की व्यवस्था न बन सकी, तो श्रम का अधिकांश भाग सरकारी प्रयासों की भाँति निरर्थक चला जायेगा और अन्ततः असफलता ही हाथ लगेगी। प्रारम्भ में गर्मी के दिनों में सिंचाई की एक-दो वर्ष आवश्यकता पड़ती है, फिर तो उनकी जड़ें गहरी चली जाती हैं और वे स्वावलम्बी हो जाते हैं। प्रत्येक परिवार अपने-अपने हिस्से का दायित्व सँभाल ले, वृक्ष लगाने और उसे परिपक्व स्थिति तक पहुँचाने का काम चल पड़े, तो कुछ ही वर्षों में अपने आस-पास के परिसर को हरा-भरा बनाया जा सकता है और राष्ट्र में न्यूनतम 33% वन-सम्पदा हो, इस अनिवार्य लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

1. वृक्ष जन-जन से लगवायें। पालन-पोषण की जिम्मेदारी युवा मण्डल सँभाले।
2. पास के मुहल्ले, कस्बे, गाँव के किशोरों, युवक-युवतियों तथा महिला-पुरुषों के पाँच-पाँच के समूह बनाकर उन्हें भी यह जिम्मेदारी दी जा सकती है।
3. उन्हें वृक्ष को तरुपुत्र अथवा तरुमित्र के रूप में गोद लेने की प्रेरणा दें।
4. जहाँ पालन-पोषण का प्रबन्ध न हो, वहाँ वर्षा ऋतु में पौध रोपण की व्यवस्था बनायें तथा ऐसे पौधों का चयन करें, जिन्हें बहुत अधिक देख-रेख की जरूरत न पड़ती हो। ऐसे स्थान के लिये किसी माली अथवा मजदूर को नियुक्त भी किया जा सकता है। उसके पारिश्रमिक की व्यवस्था किसी धनी व्यक्ति द्वारा अथवा गाँव, मोहल्ले एवं सोसायटी द्वारा सामूहिक रूप से चन्दा कर बनाई जा सकती है।
5. ग्रामीण क्षेत्रों तथा पिछड़े क्षेत्रों के विकास के लिये मनरेगा योजना के तहत ग्राम पंचायत में अर्जी देने पर आश्रित श्रेणी के लोगों को भी इसके लिये ऋण दिया जाता है। इसके अन्तर्गत गरीबी रेखा से नीचे, विधवा, अपंग, निराश्रित व्यक्ति सड़क किनारे या खाली पड़ी सरकारी भूमि पर फलदार वृक्ष लगाकर उसे अपनी आजीविका का साधन बना सकता है। वृक्ष लगाने वाला वृक्ष के फलों का अधिकारी होगा, वह उन्हें तोड़कर बेच सकता है; किन्तु वृक्ष को काट नहीं सकता। भूमि पर भी सरकार का ही स्वामित्व रहेगा।
6. वृक्षारोपण करने वाले तरुपुत्र अथवा तरुमित्रों का पंजीयन अवश्य करायें।

फ्लैट में रहते हुए हरियाली कैसे उगायें

1. घर के बरामदे या छत पर अपनी एक शाक वाटिका तैयार करें, जिसमें धनिया, मिर्च, टमाटर एवं गमले में लगाये जा सकने वाले अन्य शाक आदि लगायें तो कम ही सही, पर कीटनाशकों से मुक्त सब्जी एवं चटनी खा सकते हैं। थोड़ा खर्च बचेगा, सो अलग।
2. घर के सामने यदि थोड़ी जगह है तो उसमें शाक वाटिका लगा सकते हैं। अधिक जानकारी के लिये पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा लिखित पुस्तक 'गमलों में स्वास्थ्य' पढ़ सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

3. कुछ ऐसी बेलें भी होती हैं, जो दीवाल से चिपक जाती हैं और फिर वहीं से अपना पोषण पाती रहती हैं। बालकनी की बाहरी दीवार को ऐसे पौधों द्वारा भी सुशोभित किया जा सकता है। इन बेलों में पुष्प खिलने पर पुष्पों से लदी बालकनी सबके ध्यानाकर्षण का केंद्र बन जाती है। मूल उद्देश्य है, अपने आस-पास अधिकाधिक हरियाली विकसित करना, ताकि प्रदूषण आदि को कम किया जा सके।

वृक्षारोपण के समय अपेक्षित सावधानियाँ

1. वर्षा ऋतु समाप्त होने के बाद भूमि की नमी तेजी से सूखने लगती है और क्रमश: गहराई में सिमटने लगती है। ऐसे में वे पौधे, जिनकी जड़ें गहराई तक नहीं जा सकी हैं, वे जलाभाव में सूख जाते हैं। यह समस्या रोपण के प्रथम दो वर्षों में अधिक दृष्टिगोचर होती है। पौधों को जल देते रहने से इनकी जड़ों को गहराई में वृद्धि करने की अतिरिक्त सहायता मिलती है, जिससे वे गहरे जल स्तर से अपना सम्पर्क स्थापित कर लें। सार्वजनिक भूमि पर लगाये जाने वाले वृक्षों में अधिकांश की मृत्यु जलाभाववश प्रथम वर्ष में ही हो जाती है। अत: इन पौधों की सिंचाई कर इनकी जीवन रक्षा करना अति महत्त्वपूर्ण कार्य है।
2. गरमी के तेज तापक्रम में कभी-कभी पौधे झुलस कर मर जाते हैं, किन्तु यदि इन पौधों की पर्याप्त सिंचाई होती रहे तो ये पौधे गर्मी में भी ठण्डे बने रहते हैं और तपन की जलन से झुलसने से बच जाते हैं। जिन वृक्षों में सिंचाई होती रहती है, उनमें आग का खतरा भी नहीं रहता; क्योंकि वहाँ सूखी पत्तियाँ जल्दी सड़ जाती हैं, हरी घास उग आती है और पेड़ एवं भूमि ठण्डे होने से आग से बच जाते हैं।
3. तेज सूखा एवं अधिक लू पड़ने पर पुराने वृक्ष भी अपनी जलापूर्ति सुनिश्चित नहीं कर पाते और जलाभाव में मर जाते हैं। ग्रीष्म ऋतु में उन्हें भी थाँवला बनाकर जल देना चाहिए।
4. नियमित सिंचाई करने से वृक्ष बहुत तेजी से बढ़ते हैं और शीघ्र ही जानवरों द्वारा नुकसान पहुँचाने की ऊँचाई से ऊपर उठ जाते हैं।
5. पौधों को खर-पतवार से दबाये जाने का खतरा तभी तक रहता है, जब तक वे छोटे रहते हैं। प्रारम्भिक अवस्था में सिंचाई कर तेज वृद्धि करा देने से रोपित पौध को खर-पतवार का खतरा शीघ्र समाप्त हो जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

6. सिंचित वृक्षों में पाले से मृत्यु का खतरा कम होता है।
7. थाँवला बनायें- वृक्षों को थाँवला बनाकर जल देना चाहिए, बिना थाँवले के वृक्ष या पौधे को जल देने पर जल ऊपर ही ऊपर बह जाता है, और जड़ों को नहीं मिल पाता।
8. काँटेदार प्रजातियों शमी, बेल आदि एवं नीम को अधिक जल भराव से बचाना चाहिए।
9. धार्मिक दृष्टि से वृक्ष को जल देने का सर्वाधिक उपयुक्त समय पूर्वाह्न वेला होती है। वानिकी की दृष्टि में यदि पानी की कमी है, तो सिंचन का उपयुक्त समय सायंकाल होता है; क्योंकि दिन में सिंचाई करने से कुछ जल वाष्पीकृत हो जाता है।
10. वृक्ष को जल देते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि जल धार से जड़ के पास की मिट्टी का क्षरण न हो, और न ही जड़ें नंगी होने पायें।
11. जल वृक्ष को अधिक दिन तक लाभ पहुँचाये, इसके लिए जरूरी है कि थाँवला सूखते ही इसके ऊपर की सतह में पतली गुड़ाई कर दी जाये और हो सके तो यहाँ घास-पत्ती आदि फैला दी जाये। इससे थाँवले के नीचे की मिट्टी का पानी उड़ना बन्द हो जाता है।
12. जल भावनाओं का सर्वश्रेष्ठ वाहक है। अत: व्रत रहकर, पवित्र होकर दिव्य आत्माओं व वृक्ष को जल पिलाने की भावना से जल देने का महत्त्व सामान्य जलदान से कई गुना अधिक लाभदायक है।

पौध तैयार करना

बड़े स्तर पर वृक्षारोपण का कार्य हमारे सामने है। शहरों में तो नर्सरी से पौधे लिये जा सकते हैं, परन्तु बहुत बार वहाँ पर भी सीमित ही पौधे मिलते हैं। सभी प्रकार के वृक्षों की पौध वहाँ पर भी कम ही मिल पाती है। इसलिये जब हमें वृक्षारोपण का कार्य प्रारम्भ करना है, तो उससे कम से कम दो माह पूर्व नजदीकी नर्सरी में सम्पर्क करके अपनी माँग दर्ज करा दें। जानकार व्यक्ति अपने स्तर पर स्वयं भी पौध तैयार कर सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में निजी भूमि पर, सामूहिक योगदान से अथवा ग्राम सभा की भूमि पर भी आवश्यकतानुसार पौधशाला बनाई जा सकती है। आवश्यकता हो तो उद्यानिकी एवं वानिकी विभाग से ट्रेनिंग भी ले सकते हैं। शान्तिकुञ्ज के उद्यान विभाग से भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पौधशाला तैयार करने हेतु कुछ सामान्य जानकारी

1. नर्सरी प्रारंभ करने का उचित समय है- वर्षा ऋतु एवं वसन्त ऋतु।
2. जमीन सुसिंचित एवं उपजाऊ हो।
3. स्थान ऐसा हो, जहाँ वर्ष भर सिंचाई हेतु जल उपलब्ध हो सके।
4. पौधशाला सड़क के पास होने से पौध के परिवहन में सुविधा रहेगी।
5. ऐसा स्थान, जहाँ पौध को तेज धूप, तेज हवा व रेत आदि से बचाया जा सके।

भूमि (मिट्टी) की तैयारी

1. भूमि समतल होनी चाहिये। यदि ऐसा नहीं है, तो उसे समतल कर लें; ताकि दी गई खाद एवं पानी व्यर्थ न बह जाये।
2. भूमि में यदि कंकड़ - पत्थर हों, तो उसे बीनकर या छानकर अलग कर दें।
3. रेतीली जमीन है, तो 1:4 के अनुपात में कम्पोस्ट खाद एवं मिट्टी मिलाने से भूमि की जलधारण और उपजाऊ क्षमता को बढ़ाया जा सकता है।
4. यदि चिकनी मिट्टी है, तो पानी जमा होने की सम्भावना रहती है। उसे सुधारने के लिये 3:1:1 के अनुपात में मिट्टी, रेत एवं कम्पोस्ट खाद मिलाएँ।
5. अच्छी प्रजाति के पौधों तथा अच्छी गुणवत्ता के बीजों का इस्तेमाल करें।
6. एक से डेढ़ मीटर चौड़ाई की ही क्यारियाँ बनायें, ताकि उनमें आसानी से काम किया जा सके।
7. दो क्यारियों के बीच 1 से 2 फीट का स्थान अवश्य रखें; ताकि एक जगह बैठ कर दोनों ओर की क्यारियों में काम कर सकें।
8. तेज हवा से बचाव हेतु क्यारियाँ पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर बनानी चाहिये।
9. क्यारी बनाते समय उसमें हलकी-सी साधारण ढाल रहे, ताकि जल का निकास ठीक रहे। अधिक पानी को निकालने के लिये बीच में नालियाँ भी बनानी चाहिये।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आम तौर पर तीन प्रकार की क्यारियाँ बनाई जाती हैं।

1. **अंकुरण क्यारियाँ**- यह बीज को अंकुरित करने तथा पौध को प्राय: एक माह तक रखने के लिये बनाई जाती हैं।
2. **प्रतिरोपण क्यारियाँ**- अंकुरण क्यारियों से निकालकर पौध को इन क्यारियों में निश्चित दूरी पर प्रतिरोपित किया जाता है।
3. **पॉलिथिन रखने के लिये**- इन क्यारियों का उपयोग पौध के पात्र को रखने के लिये किया जाता है।

बीजों की बुआई

1. छोटे आकार के बीजों को अंकुरण क्यारियों में बोया जाता है। बड़े बीजों को पॉलिथिन या अन्य पात्र में बोना लाभदायक है।
2. बड़े बीज को उसकी लम्बाई से दो से चार गुना गहरा बोना चाहिये।
3. बीज को बुआई के तुरन्त बाद धान के पुआल या इसी प्रकार के किसी अन्य घास-फूस से ढक देना चाहिये। ध्यान रखें इस पुआल पर दीमक आदि का हमला न होने पाये।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पॉलिथिन पात्रों को भरना

1. पॉलिथिन भरते समय ध्यान रखें कि मिट्टी के बीच हवा की पट्टी न बन जाए।
2. अंकुरण क्यारियों से पॉलिथिन पात्र में प्रतिरोपण करते समय पौधों की जड़ें मुड़ने न पायें।
3. पौध का प्रतिरोपण पात्र के मध्य में किया जाए।
4. प्रतिरोपण सामान्यत: शाम के समय किया जाना चाहिए।
5. भरे हुए पात्र को क्यारियों में सीधा खड़ा करना चाहिए।
6. माह में एक बार पॉलिथिन पात्रों का स्थान बदलना चाहिए।
7. जैसे-जैसे पौधे बड़े होते हैं, उनकी जड़ें पॉलिथिन से बाहर निकलने लगती हैं। इन पतली जड़ों को कैंची से काट दें। इससे hormonal secretion अच्छा होता है और मुख्य जड़ मजबूत बनती है।
8. पौध को सीधी धूप से बचाने के लिये कृत्रिम छाया की जानी चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

10. वृक्षारोपण के विविध अभियान

1. श्रीराम स्मृति उपवन

पूज्य आचार्य जी के नाम से 2400 श्रीराम स्मृति उपवन लगाये जाने का संकल्प लिया गया है। वृक्ष गंगा अभियान का शहर–नगरों के सार्वजनिक स्थलों के लिए यह एक बहुत ही उपयोगी सेवा का रचनात्मक प्रकल्प है। इसके द्वारा मानव समाज को अच्छा स्वास्थ्य, पर्यावरण का संवर्धन और स्मृति उपवन को संचालित करने वाले व्यक्ति या संस्था को स्वावलंबन भी प्राप्त होता है। स्मृति उपवन का विधिवत् एक स्वरूप तय किया गया है। इसमें एक्यूप्रेशर मार्ग, प्राकृतिक आहार, पक्षी आहार गृह, साधना केन्द्र, औषधि वाटिका, ग्रह–नक्षत्र–राशि वाटिकाएँ जैसी शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्यवर्धक रचनाएँ जोड़ी गई हैं। शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्थित देव संस्कृति विश्वविद्यालय में इसका एक प्रारूप तैयार किया गया है, जिसे देखकर जगह–जगह ऐसे उपवन बनाये जा रहे हैं।

उपवन घटक–

एक्यूप्रेशर पथ, पिरामिड यज्ञशाला, वास्तु वृक्ष मण्डल, नवग्रह वृक्ष मण्डल, देववृक्ष, कल्पवृक्ष, हरिशंकरी, त्रिवेणी, पक्षी विहार, जवारा वाटिका, ध्यान प्राणायाम स्थल, प्राकृतिक आहार केन्द्र।

एक्यूप्रेशर पथ–

इस पथ पर प्रतिदिन प्रातः–सन्ध्या खाली पेट गहरी श्वास–प्रक्रिया के साथ नंगे पैर 10 से 15 मिनट चलने से पैर के तलवों में स्थित शारीरिक अंग–अवयवों के प्वाइन्ट्स सक्रिय हो जाते हैं और शरीर स्वस्थ होता है। मौन होकर धीरे–धीरे चलने से अधिक लाभ मिलता है।

स्वास्थ्य संवर्धक दिव्य औषधियाँ–

आज जब हम स्वास्थ्यवर्धक वायु सेवन हेतु मार्निंग–इवनिंग वॉक के लिए जाते हैं, तब या तो हमें वाहनों की कार्बन युक्त वायु या सड़क किनारे पड़ी गन्दगी की बदबूदार वायु ही मिलती है। किन्तु यहाँ स्वास्थ्य गार्डन में लगे औषधीय पौधे अपने श्वसन से यहाँ के वातावरण को प्राण तत्त्व से भरकर स्वास्थ्यवर्धक बनाए रहते हैं, जिसका लाभ यहाँ आने वालों को एक्यूप्रेशर पथ पर घूमते समय लम्बे गहरे श्वास–प्रश्वास द्वारा प्राप्त होता है और उनका सम्पूर्ण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वास्थ्य संवर्धन होता है। जीवन में सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है, जिससे जीवन सुखी एवं समृद्ध बनता है।

सात्विक ऊर्जा विस्तारित करने वाले दिव्य वृक्ष समूह- यहाँ स्वास्थ्य गार्डन के मध्य में विभिन्न दिव्य वृक्ष समूह जैसे-नवग्रह वाटिका, राशि वाटिका आदि अनेक दिव्य औषधि युक्त वृक्ष समूह लगाये जाते हैं। एक्यूप्रेशर पाथ पर भ्रमण के समय हम इन दिव्य वृक्ष समूहों की परिक्रमा करते हैं, जिससे हम इनकी सात्विक ऊर्जा के सम्पर्क में आते हैं। इससे सात्विक भाव बनते हैं और मानसिक शान्ति प्राप्त होती है। साथ ही हमारी ग्रह-नक्षत्र सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण भी होता है।

ध्यान केन्द्र-

भागदौड़ भरी जीवन शैली के परिणाम से उपजे तनाव से मुक्ति, मानसिक शान्ति और अपनी अन्तर्निहित दिव्यता की अनुभूति हेतु यह प्रकल्प अपने आप में अभिनव-अनूठा है।

योग स्थल-

योग से बनें निरोग। प्रकृति के सान्निध्य में सामूहिक एवं व्यक्तिगत रूप से आसन-प्राणायाम करने के लिए यह स्थल रहता है। सर्वांग योग-प्रज्ञा योग का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

संगीत चिकित्सा-

स्वास्थ्य उपवन में विभिन्न धुनों पर आधारित संगीत एवं मंत्रों की स्वर लहरियाँ तन-मन को दुरुस्त कर जीवन में आनन्द एवं उल्लास जगाती हैं।

पिरामिडीय यज्ञशाला (यज्ञ चिकित्सा)-

शरीर को समस्त प्रकार के रोगाणुओं से मुक्त रखने, मनोरोगों से मुक्ति के लिए और जीवनीशक्ति बढ़ाने के लिए यज्ञ बहुत ही कारगर उपाय है। यज्ञाग्नि के द्वारा हवन सामग्री की दिव्य जड़ी-बूटियों की शक्ति हजारों गुना होकर श्वसन तंत्र और त्वचा के माध्यम से तुरन्त ही सम्पूर्ण शरीर को प्राप्त होती है। स्वास्थ्य उपवन में यह प्रकल्प यज्ञ चिकित्सा के लिए ही बनाया जाता है।

माता भगवती प्राकृतिक आहार केन्द्र-

मनुष्य जीवन में अधिकांश बीमारियों का कारण अनियमित आहार-विहार ही है। आधुनिक फास्ट-फूड वाले इस युग में ढूँढ़ने पर भी स्वास्थ्यवर्धक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राकृतिक आहार व पेय नहीं मिलते हैं। यहाँ से हम अपने स्वास्थ्य संवर्धन के लिए लौकी, करेला, पालक, टमाटर, खीरा, गाजर, चुकन्दर, जवारा, आँवला, ऐलोवेरा रस, आदि उपलब्धता के अनुसार प्राप्त कर सकते हैं। जो घर पर प्रतिदिन सम्भव नहीं हो पाता, इनके अभाव में हम फास्ट फूड का उपयोग करते हैं और बीमारी को आमन्त्रण देते हैं।

जवारा रस-

प्रकृति प्रदत्त ग्रीन ब्लड कहलाता है। जो हीमोग्लोबिन बढ़ाता है, रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाता है। मोटापा कम कर रक्त चाप सामान्य करता है। त्वचा में कसाव रखता है तथा महिलाओं के रोगों में अति लाभकारी है। इसमें मौजूद बी-17 विटामिन कैंसर रोग में अत्यधिक लाभकारी है।

आँवला रस-

वात-पित्त-कफ नाशक, शरीरगत समस्त विकारों को दूर करने में सक्षम, केशवर्धक, नेत्ररोगों को दूरकर ज्योति बढ़ाने में लाभकारी होता है। कब्ज, रक्त विकार, एसिडिटी, अल्सर आदि रोगों में अत्यन्त लाभकारी है।

ऐलोवेरा रस-

शरीरगत समस्त रोगाणुओं को बाहर निकालकर पूर्ण आरोग्य देता है, एलर्जी रोकता है, पेट के रोग, गैस तथा मधुमेह को ठीक करता है। कोलेस्ट्रॉल सामान्य करता है, लीवर-किडनी के विकारों को दूर करता है। एच. आई. वी. संक्रमण को रोकता है, सोरायसिस और कैंसर जैसे असाध्य रोगों में उपयोगी है।

लौकी रस-

अनेक औषधीय गुण जो कि हृदय रोग, अनिद्रा, मूत्र रोग, लीवर सम्बन्धी रोग, कान दर्द, नेत्र रोग, मधुमेह आदि में अति गुणकारी है।

करेला रस-

मधुमेह के लिए रामबाण औषधि, पेट रोग, खूनी बवासीर, हैजा, पीलिया, गठिया, रक्त एवं चर्मरोग आदि में लाभकारी है।

अंकुरित अन्न-

पेट के समस्त विकारों को दूर करता है। विटामिन (ए, ई तथा के) का मुख्य स्रोत है, इसका नियमित सेवन पुरुषों में नपुंसकता और स्त्रियों में बाँझपन होने नहीं देता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पालक रस-

रक्त सम्बन्धी समस्त रोगों, पेट सम्बन्धी रोगों, चेहरे की सुन्दरता बढ़ाने, मधुमेह, मोटापा, दान्त एवं मसूढ़ों के रोग, कब्ज आदि में गुणकारी है।

चुकन्दर रस-

चुकन्दर में बिटीन तत्त्व रहता है, जो शरीर में कैंसर तथा ट्यूमर नहीं बनने देता, कब्ज व बवासीर के लिए अत्यन्त उपयोगी, एनीमिया (रक्ताल्पता) ठीक करता है। स्मरणशक्ति बढ़ाता है एवं मानसिक कमजोरी दूर करता है।

गाजर रस-

नेत्र ज्योति बढ़ाने, त्वचा की सौन्दर्यता को बढ़ाने, रक्तशोधक के रूप में विशेष लाभकारी है।

नारियल दूध-

शरीर को शक्ति प्रदान करता है, सूखा रोग, टी.बी. नष्ट करता है। सूखी खाँसी, गले की जलन, सीने का दर्द एवं पेचिस में लाभकारी है।

नीबू-शहद पानी-

रक्त में हीमोग्लोबिन बढ़ाता है, शरीर को सुडौल बनाता है, रक्त में कोलेस्ट्रॉल घटाता है, चर्बी घटाकर मोटापा कम करता है।

फल सलाद-

विटामिन एवं खनिज तत्त्वों को प्रदान कर बीमार नहीं होने देता, कब्ज घटाकर मोटापा घटता है। इसके प्रतिदिन सेवन से हम प्राकृतिक शर्करा प्राप्तकर हमेशा पूर्ण स्वस्थ रहते हैं। शरीर में स्फूर्ति रहती है। शरीर सुन्दर व सुडौल बनता है।

उपलब्धियाँ-

पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य संवर्धन, स्वावलम्बन, आयुर्वेद औषधि उपयोगिता, जानकारी, जागरूकता। श्रीराम स्मृति उपवन को शहर-नगर कॉलोनी के मध्य सार्वजनिक या निजी उद्यानों को गोद लेकर या भूमि खरीदकर, विकसित कर उसका संचालन व्यक्तिगत या संस्था स्तर पर किया जा सकता है।

2. श्रीराम स्मृति वन-पर्वत

मध्यप्रदेश सहित अनेक प्रान्तों में कई पहाड़ियों/भूखण्डों को गोद लेकर गायत्री परिवार की स्थानीय शाखाओं ने उन्हें हरा-भरा बना दिया है। सरकार से अनुमति और सहयोग लेकर ऐसे प्रयास हर क्षेत्र में किये जा सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

3. श्रीराम स्मृति वाटिकाएँ

पहले गाँवों में प्राय: हर परिवार का अपना छोटा सा बगीचा भी होता था, जिसमें आम, केला, अमरूद, पपीता, जामुन, शहतूत एवं स्थानीय फलों के वृक्ष होते थे। इस परम्परा को पुन: अपनाया जाये। गाँवों में छोटे से क्षेत्र में कुछ वृक्ष लगाकर ऐसी वाटिकाएँ बनायी जा सकती हैं, जहाँ स्वास्थ्य संवर्धन, बच्चों के खेलने, संस्कार-साधना आदि की सुविधा उपलब्ध हो सके।

4. गमलों में स्वास्थ्य

शहरों, कस्बों के उन घरों में, जहाँ वृक्ष लगाना सम्भव नहीं है, वहाँ आँगन में या घर की छत पर गमले रखकर शाक वाटिका, औषधि वाटिका लगाकर हरियाली बढ़ाई जा सकती है। ऐसे प्रयोग स्वास्थ्य लाभ एवं आर्थिक दृष्टि से भी लाभदायक होंगे और शुद्ध शाक भी उपलब्ध हो सकेंगे।

5. एक लाख अशोक वाटिकाएँ लगाना

'हमारी वसीयत और विरासत' पुस्तक की पृष्ठ संख्या- 191 पर पूज्य गुरुदेव ने पाँच संकल्पों की बात कही है।

1. एक लाख यज्ञ,
2. एक लाख नर रत्न,
3. एक लाख अशोक वाटिका,
4. एक लाख ग्राम तीर्थ,

6. एक लाख वर्ष का समयदान संकलन

इस कार्य को पूर्ण करना गायत्री परिवार के जिम्मे आता है। शक्तिपीठों पर, अपने घर के आस-पास अधिकाधिक अशोक वृक्षों का रोपण कर हमें पूज्य गुरुदेव के इस संकल्प में भागीदार बनना है। वृक्षों में अशोक का अपना विशेष महत्त्व है। सीता को आश्रय अशोक वाटिका में ही मिला था। हनुमान् जी ने भी उसी के पल्लवों में आश्रय लिया था। आयुर्वेद में इसे महिला रोगों की अचूक औषधि कहा गया है। पुरुषों की बलिष्ठता एवं प्रखरता बढ़ाने की इसमें विशेष शक्ति है। साधना के लिए अशोक वन के नीचे रहा जा सकता है। शोभा तो उसकी असाधारण है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

7. औषधि वाटिका

शक्तिपीठों में तुलसी, गिलोय, पुदीना, घृतकुमारी, कालमेघ, चिरायता, गोक्षरू, सदाबहार, अपामार्ग, लाजवन्ती, अश्वगन्धा, पत्थरचूर, गुड़मार, मदार, मेहँदी, श्यामातुलसी, कपूरतुलसी, अकरकरा, पुनर्नवा आदि पौधों को गमले अथवा जमीन में लगा सकते हैं। इनके औषधीय गुणों का एक पर्चा भी छपाकर रखें, ताकि आने-जाने वाले परिजन रोग के अनुसार आवश्यक पौधे को अपने घर पर भी लगा सकें और उसका लाभ ले सकें। यदि घर के आस-पास कोई पार्क है तो उसमें नीम, अशोक, कचनार, हरड़, बहेड़ा, आँवला, बेल, अमलतास, गिलोय, हरसिंगार आदि औषधीय महत्त्व के वृक्ष लगायें।

8. शाक वटिका

शहरों, कस्बों के उन घरों में, जहाँ भी क्यारी बनाना सम्भव है, वहाँ घरेलू शाक वाटिका लगायी जानी चाहिये। जहाँ यह सम्भव नहीं है, वहाँ आँगन में या घर की छत पर गमले रखकर शाक वाटिका लगायी जाये। जहाँ तक सम्भव हो, जैविक खाद का इस्तेमाल करें; ताकि रासायनिक खादों एवं कीटनाशकों से मुक्त शाक भाजी प्राप्त हो सके। इस प्रकार आर्थिक दृष्टि से भी लाभ होगा और स्वास्थ्य की दृष्टि से भी शुद्ध शाक उपलब्ध हो सकेंगे।

अभिनव प्रयोग

मध्यप्रदेश में गायत्री परिवार ने वहाँ की जनता के सहयोग से लगभग 75 छोटी-बड़ी सूखी पहाड़ियों को हजारों वृक्ष लगाकर हरा-भरा कर दिया है। 2007-2008 में जो पहाड़ियाँ पहले मिट्टी के टीलों जैसी दिखाई देती थीं, अब हरे-भरे वनों में परिवर्तित हो गई हैं।

कार्य आसान नहीं था-

संकल्पित परिजनों ने गाँव-गाँव जाकर सभाएँ कीं। ग्रामीणों में चेतना जगाई और दम्पतियों को तरुपुत्र गोद लेने की प्रेरणा दी। फिर क्या था, संकल्प और जन चेतना जब दोनों मिल गये, तो कहीं 1100, तो कहीं 2400 दम्पतियों एवं इससे भी अधिक हर जाति-वर्ग, समुदाय के परिवारों ने इस कार्यक्रम में संकल्पपूर्वक भाग लिया। गाँव में उत्साही युवाओं की एक समिति बनाकर उन्हें कार्ययोजना समझाई जाती है और भविष्य की गतिविधियों को संचालित करने की जिम्मेदारी भी सौंपी जाती है। इस कार्यक्रम को तरुपुत्र महायज्ञ के नाम से जाना जाता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तरुपुत्र महायज्ञ से पूर्व की प्रक्रिया-

वृक्षारोपण के दिन से पूर्व तय की गई भूमि को वृक्षारोपण के लिये तैयार किया जाता है। पौधों की सिंचाई हेतु जल की व्यवस्था भी की जाती है। जहाँ कहीं जल की कोई व्यवस्था नहीं थी, वहाँ टैंकरों की सहायता भी ली गई। जन सहयोग से ही उसमें आवश्यकतानुसार गड्ढे किये जाते हैं, उनमें खाद डाली जाती है एवं सबको क्रमश: एक संख्या दी जाती है। संकल्पित परिवारों को भी टोकन नम्बर दे दिया जाता है। निश्चित दिन पर सभी संकल्पित परिवार निश्चित समय पर तय किये गये स्थान पर एकत्रित होते हैं और अपने टोकन पर दिये गये नम्बर के अनुसार वृक्षारोपण के लिये किये गये गड्ढों के समीप बैठ जाते हैं। संक्षिप्त यज्ञ प्रक्रिया के बाद सभी अपने-अपने पौधे (वृक्ष) को निश्चित स्थान पर रोपते हैं। वृक्ष को तरुपुत्र मानकर स्वनिर्भर होने तक उसके पोषण की जिम्मेदारी भी उठाते हैं। जल आपूर्ति की समस्या के समाधान के लिये परिस्थिति अनुसार इन पहाड़ियों की तलहटी में वर्षा जल संग्रहण के लिये श्रीराम स्मृति सरोवर भी बनाये जा रहे हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

खण्ड- 2

तरुपुत्र महायज्ञ- कर्मकाण्ड

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तरुपुत्र महायज्ञ- कर्मकाण्ड

तरुपुत्र महायज्ञ माहात्म्यः-पर्यावरण और अध्यात्म दोनों का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। ऋषियों के समय में यह सम्बन्ध अविच्छिन्न बना रहा, इसी कारण कभी भी दैवी आपदाएँ-प्राकृतिक विभीषिकाओं की बहुलता नहीं रही। हमारे ऋषिगण विश्वराष्ट्र की बात कहते थे एवं उसे पुष्ट बनाने का निर्देश देते थे। "**माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः**" के रूप में इकॉलॉजी का एक अति महत्त्वपूर्ण सूत्र हमें ऋषिगणों ने दिया। आज चारों ओर वृक्षों का विनाश हो रहा है, इसी कारण सभी प्रकार की विपत्तियाँ हम पर बरस रही हैं। भूमि का कटाव, उपजाऊ मिट्टी का क्षरण होकर उसका समुद्र में बहकर चले जाना एवं क्रमशः कवच हटते चले जाने से पृथ्वी का तापमान बढ़ना इसी कारण है। जब तक हम पर्यावरण के प्रति आध्यात्मिक दृष्टि नहीं अपनाते, तब तक अपना अस्तित्व सुरक्षित नहीं रख सकते।

एक वृक्ष दस पूत समाना

हमारी संस्कृति में परोपकार भाव की जड़ें इतनी गहरी रही हैं कि व्यक्ति कामना करता है कि मरने के बाद उसका वंश भी यज्ञ की आहुति के रूप में अर्पित हो और उसकी हर सन्तति परोपकार में निरत रहे। उसकी सम्पत्ति भी परोपकार में लग जाये। इस क्रम में उसकी सबसे बड़ी अपेक्षा जीवन की सबसे बड़ी कृति से होती है, इसीलिए वह पुत्र को परोपकारमय जीवन जीने के लिए संस्कार और साधन उपलब्ध कराता है। इतने प्रयासों के बाद भी यदि पुत्र यज्ञमय जीवन नहीं जी पाता, तो पिता की आत्मा को पीड़ा होती है, जो उसकी सद्गति में बाधक होती है। ऐसी दशा में ऋषियों ने पौधों को पुत्र रूप में धारण कर पाल-पोस, सेवा कर बड़ा बनाने का विधान बताया है। तरुपुत्र अर्थात् पुत्र के रूप में अपनाया गया तरु। जो वृक्ष रोपणकर्त्ता को नरक से पार करे, उसे तरु कहते हैं और जो सन्तान माता-पिता की नरक से रक्षा करे, उसे पुत्र कहते हैं। अनेक वृक्ष ऐसे हैं, जो छोटे-बड़े लाखों जीवों को भोजन, छाया, शरण और सन्तुलित पर्यावरण देकर प्रतिदिन बहुत बड़ा पुण्य करते हैं। ऋषियों के अनुसार यह पुण्य उस वृक्ष का रोपण, रक्षा एवं सेवा करने वाले को मिलता है। व्यक्ति की अपनी सन्तान विरले ही उतना पुण्य कर पाती है, जितना कि एक वृक्ष अपने जीवन काल में करता है। शास्त्रीय मान्यता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह भी है कि पाप करने वाली सन्तान के पापों से पितर घोर नरक में जाने को बाध्य होते हैं, इसलिए ऋषियों ने नरक से मुक्ति दिलाने के लिए वृक्ष को पुत्र के रूप में ग्रहण करने का विधान बताया है। तरुपुत्र रोपण महायज्ञ द्वारा नन्हे पौधे को वैदिक मन्त्रों के साथ पुत्र रूप में वरण करने का विधान है। अत: आइये श्रद्धा के साथ माँ वसुन्धरा की साक्षी में तरुपुत्र रोपण महायज्ञ द्वारा नन्हें पौधे को पुत्र के रूप में वरण कर उसके पालन, पोषण का संकल्प लें।

आवश्यक सामग्री-

एक कुण्ड हेतु- गाय के छोटे 5 उपले (छोटी प्लेट के आकार के) 10 ग्राम हवन सामग्री, कपूर, पूजन सामग्री, अक्षत, कलावा, जल, घी की बत्ती, एक दोने में फूल, अगरबत्ती, माचिस, कलावा।

आह्वान-

देव तुल्य आत्मीय बन्धुओ! ईश्वर की योजना एवं ऋषियों के संकल्प में तरुपुत्र महायज्ञ के इस आयोजन के माध्यम से धरती माता को हरी चूनर ओढ़ाने का दिव्य अवसर हमें प्राप्त हुआ। हम सब सौभाग्यशाली हैं कि विषपायी शिव को पुत्र के रूप में वरण करने का हमें सौभाग्य मिल रहा है। इस कार्यक्रम में जिस किसी का भी समय, साधन, प्रतिभा पर्यावरण के विश्वव्यापी संकटों के निवारण हेतु लगा है, उनका पुरुषार्थ इतिहास में सदैव 'श्रीराम स्मृति उपवन' के रूप में जीवन्त रहेगा।

॥ मंगलाचरणम् ॥

धरती माता की गोद एवं नीले गगन की छाया में उपस्थित सभी भाई बहिनों पर अक्षत-पुष्प की वर्षा की जा रही है। भावना करें कि इस वर्षा द्वारा सभी युग सृजन साधकों पर प्रकृति माता का अनुग्रह बरस रहा है। निर्धारित स्वयं सेवक बैठे हुए सभी याजकों पर वैदिक मंत्र के साथ पीले अक्षत एवं पुष्पों की वर्षा करें।

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा, भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवाᳬसस्तनूभिः, व्यशेमहि देव हितं यदायुः॥

॥ पवित्रीकरणम् ॥

भावना करें कि जिस वीरान उजड़े पहाड़/क्षेत्र में पौधरोपण हो रहा है, उस पौधे में त्रिदेव का वास मान कर एक तरुमन्दिर की स्थापना हो रही है। जिस स्थान पर ये रोपित हो रहे हैं, उस स्थान का कण-कण शुभ और देव

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संस्कार से जागृत हो रहे हैं। धरती माता इस वृक्ष देवता का अपनी गोद में पुत्र की तरह पालन-पोषण करे। साथ ही इस स्थान के कुसंस्कारों का निवारण होकर आने वाले समय में रोपित सारे पौधे वन का रूप लेकर सदैव पर्यावरण सन्तुलन का क्रम बनाए रखेंगे, इस भाव के साथ जल-सिंचन संपन्न करें। स्वयंसेवक पात्रों में रखे जल का पुष्प या आम के पत्तों द्वारा सभी यजमानों एवं पौध रोपण स्थान पर सिंचन करें। मंत्रपूरित जल सिंचन के समय सभी भाई-बहिन हथेली आकाश की ओर खोल कर भावना करें कि पवित्रता हमें महान् बना रही है।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं, स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।
ॐ पुनातु पुण्डरीकाक्षः, पुनातु पुण्डरीकाक्षः, पुनातु।

-वा०पु० ३३.६

।। पृथ्वी पूजनम् ।।

जहाँ से हम अन्न, जल, वस्त्र, पेड़-पौधे एवं दिव्य वनस्पति प्राप्त करते हैं, जिसकी गोद में हम पलते एवं बड़े होते हैं, ऐसे सन्तों, सुधारकों और शहीदों की इस पावन माटी को नमन-वन्दन करें। रोपित तरु को धरती माँ अपनी गोद में पालन-पोषण कर सम्पूर्ण विश्व मानवता को दिव्य प्राण का प्रवाह बिखेरती रहें, इस भाव से माँ पृथ्वी का पूजन करें। पुत्रवत् भावना से आपके पास रखे हुए दोनों से अक्षत-पुष्प लेकर धरती माता का पूजन करें।

ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका, देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि, पवित्रं कुरु चासनम्।।

।। संकल्प ।।

सभी भाई-बहिन अपने दाहिने हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर तरुपुत्र महायज्ञ का संकल्प ग्रहण करें। संकल्प से मन की समस्त शक्तियाँ केन्द्रित होती हैं। इस महायज्ञ से कितने ऊँचे उद्देश्य जुड़े हैं, इस पर भी ध्यान दें।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य, अद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे, वैवस्वत मन्वन्तरे, भूर्लोके, जम्बूद्वीपे, भारतवर्षे, भरतखण्डे, आर्यावर्तैक देशान्तर्गते, ... क्षेत्रे, मासानां मासोत्तमेमासे, ... मासे,..... पक्षे, ... तिथौ, ...वासरे, ...गोत्रोत्पन्नः,.....नामाहं सत्प्रवृत्ति संवर्धनाय, दुष्प्रवृत्ति उन्मूलनाय,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मकल्याणाय, लोककल्याणाय, वातावरण परिष्काराय, प्रदूषण उन्मूलनाय, पर्यावरण संवर्धनाय, उज्ज्वल भविष्य कामना पूर्तये च प्रबल पुरुषार्थं करिष्ये, अस्मै प्रयोजनाय च कलशादि आवाहित देवता पूजनपूर्वकम् तरुपुत्र महायज्ञ सम्पादनार्थं संकल्पं अहं करिष्ये।

॥ कलश-वरुण पूजनम् ॥

कलश विश्व ब्रह्माण्ड का प्रतीक है, भगवान् का साकार रूप भी है। यह सम्पूर्ण दृश्य जगत् ही जगदीश है। कलश के ऊपर रखे पंच पल्लव वृक्ष वनस्पति का प्रतीक है। जल नदियों एवं सागर के जल का प्रतीक है। नारियल पूर्णता का प्रतीक है। प्रकृति का पूर्ण सन्तुलन बने, इस भाव से समस्त देवी-देवताओं का कलश के मध्य ध्यान करें। मुख्य यजमान अपने दाहिने हाथ में अक्षत-पुष्प लें। मंत्र पूरा होने पर कलश के ऊपर चढ़ा दें। शेष सभी भाई-बहिन अपने हृदय में अपने इष्टदेव का ध्यान करें।

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानः तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। वरुणेह बोध्युरुषꣳ समानऽ आयुः प्रमोषीः। ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं, यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामो३म् प्रतिष्ठ।

ॐ वरुणाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

गंधाक्षतम्, पुष्पाणि, धूपम्, दीपम्, नैवेद्यम् समर्पयामि। ॐ कलशस्थ देवताभ्यो नमः।

॥ गुरु आवाहनम् ॥

गुरु परमात्मा की विशेष दृश्यमान् शक्तिधारा है, जो हमें सतत आत्म कल्याण एवं लोक कल्याण की सेवा-साधना के लिए प्रेरित करती रहती है। वह गुरु सत्ता हमें सतत प्रेरणा एवं शक्ति देती रहे, हमारे मन की वृत्तियाँ भी उनके अनुकूल बनी रहें। ऐसी प्रार्थना के साथ उनका भावभरा आवाहन करें। सभी भाई-बहिन अपने दाहिने हाथ में अक्षत-पुष्प लें। अपने हृदय में अपने गुरु देव का ध्यान करें। मंत्र पूरा होने पर कलश के ऊपर उसे चढ़ा दें।

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुरेव महेश्वरः।
गुरुरेव परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः॥
अखण्डमण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मातृवत् लालयित्री च, पितृवत् मार्गदर्शिका।
नमोस्तु गुरुसत्तायै, श्रद्धा प्रज्ञा युता च या॥
ॐ श्री गुरवे नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

॥ गायत्री आवाहनम्॥

गायत्री परमात्मा की मूल शक्ति है। वह परम शक्ति हमें सद्बुद्धि, सद्विचार एवं सद्भाव से भरती रहे, इस भाव के साथ उनका आवाहन करें। सभी भाई-बहिन अपने दाहिने हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर माँ गायत्री का ध्यान एवं पूजन करें।

ॐ आयातु वरदे देवि, त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।
गायत्रिच्छन्दसां मातः, ब्रह्मयोने नमोस्तुते॥
ॐ श्री गायत्र्यै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

॥ सूर्य आवाहनम्॥

सूर्य ही हमारे प्राणों के आधार हैं। सम्पूर्ण वृक्ष, वनस्पतियों, जीव जगत् एवं मनुष्यों को प्राणों का पोषण सूर्य से ही मिलता है। जगदात्मा सूर्य हमें बलपूर्वक सन्मार्ग की ओर बढ़ाएँ, एवं सुप्रेरणाएँ प्रदान करें। इस भाव से उनका भाव भरा आवाहन करें। सभी भाई-बहिन अपने दाहिने हाथ में अक्षत-पुष्प लें। अपने हृदय में सविता देवता का ध्यान करें। मंत्र पूरा होने पर कलश के ऊपर उसे चढ़ा दें।

ॐ भास्कराय विद्महे, दिवाकराय धीमहि, तन्नः सूर्य प्रचोदयात्।
ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव, यद्भद्रं तन्नऽ आ सुव।
ॐ सूर्याय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

तरु पुत्र वरण एवं पूजनम्

विष्णु स्मृति में तरुपुत्र का विधान मिलता है, जिसमें ऋषि कहते हैं, जो कोई वृक्षारोपण करता है, उसके द्वारा रोपित वृक्ष परलोक में पुत्र होते हैं। वृक्ष अपने फूलों से देवताओं को प्रसन्न करता है। मेघ के बरसने पर छाते की तरह अभ्यागतों को तथा जल से पितरों को प्रसन्न करता है। अतः आइये पुत्रवत् भाव से तरु का पूजन करें। सभी याजक पौधे को पुत्रवत् गोद में रख लें। अक्षत-पुष्प और इस क्षेत्र की पावन रज हाथ में ले, अपने विवाह दिवस, जन्म दिवस तथा अपने पुरखों की पुण्यतिथि का स्मरण करते हुए तरुपुत्र का आवाहन करें। मंत्र के बाद अक्षत पुष्प और रज अर्पित कर तरुदेव का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आवाहन - पूजन करें। आचार्य तरुपुत्र भाव का जागरण करें। तरु महिमा का गान करें।

ॐ मूले ब्रह्मा त्वचा विष्णुः, शाखाः रुद्रो महेश्वरः।
पत्रे पत्रे देवानां, वृक्ष राजाय नमोस्तुते।।
दश कूप समो वापी, दश वापी समो ह्रदः।
दश ह्रद समः पुत्र, दश पुत्र समो द्रुमः।।

तरु मिलन

पौधे को ह्रदय से लगायें और नेत्र बन्द कर वृक्ष के उपकारों का निम्नलिखित भाव अनुसार स्मरण करें। हे मेरे प्यारे तरु! प्यारे मित्र जब मैं माँ के गर्भ में आया और तीन माह का हुआ था कि आचार्य जी ने मेरा पुंसवन संस्कार कराया, तब तूने ही अपनी नन्हीं-नन्हीं कोपलों और जड़ों से औषधि बनाकर कर माँ के उदर में ही मुझे आरोग्य प्रदान किया था। मेरे सखा जब मेरा जन्म हुआ, तो प्रथम बार तूने ही पलना बनकर मुझे थामा था। घुट्टी बनकर तूने ही मुझे पुष्ट बनाकर रोगों के आक्रमण से बचाया था। मैं तेरे उपकार कैसे भूल सकता हूँ। मेरे भाई, मेरे अन्दर जब चलने की इच्छा जागी, तो तूने ही तीन चक्के की गाड़ी बनकर मुझे सहारा दे कदम-कदम चलना सिखाया था। मेरे प्यारे दोस्त, तू ही मेरे खिलौने बना।

मैं जब स्कूल पढ़ने गया तो तू ही मेरी पट्टी बना, और मेरे सुख के लिए कुर्सी टेबिल बना। मैं तेरे उपकार कैसे कहूँ, हे प्रिय! जब मेरा विवाह हुआ, तो तू ही मेरे मण्डप के चार खम्भे और छाज बना और तेरी ही जलती अग्नि के फेरे लेकर मैंने अपने जीवन साथी का हाथ थामा था। मेरी गृहस्थी का तू ही तो सहारा बना, मेरे घर का दरवाजा तू, छप्पर तू, खाट तू, साजो सामान तू बना। मेरे प्यारे, तेरे ही फलों रसों से मेरा यौवन खिलता रहा। तेरे उपकार अनन्त हैं, मित्र आज भी तू मेरे साथ है और कल भी रहेगा। मैं जानता हूँ प्रिय पुत्र, जब मैं बूढ़ा हो जाऊँगा, भले ही सब साथ छोड़ दें, पर तू ही मेरी झुकी कमर का सहारा बन मुझे मन्दिर-मन्दिर, तीर्थ-धाम करायेगा और मैं यह भी जानता हूँ, मेरे देवता, जब मैं अशक्त हो जाऊँगा, तो तू ही खटिया बन मुझे आश्रय देगा और जब इस दुनिया से विदा लूँगा। पत्नी, बच्चे, नाते-रिश्तेदार सब साथ छोड़ देंगे, कोई मेरे साथ नहीं जायेगा, पर तू मेरे श्मशान पहुँचने के पहले ही मन लकड़ी के रूप में वहाँ पहुँच जायेगा। सब देखते रहेंगे और तू ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मेरे साथ जलेगा मेरे साथी। मैं तेरा ऋण कैसे चुकाऊँ देवता, मेरे सखा, मेरे पुत्र।

॥ स्वस्तिवाचनम् ॥

अक्षत-पुष्प हाथ में लें, यहाँ से स्वस्तिवाचन मंत्रों का गायन होगा। भावना करें कि समस्त देव शक्तियाँ शुभ एवं मंगलकार्य के लिए वांछित शक्तियों का योग मिलाकर अवांछनीय शक्तियों से रक्षा कर रही हैं।

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे, प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे, निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे। वसोमम आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।

ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः, स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः, स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।

ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु, पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्पतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः, श्नप्त्रेस्थो विष्णोः, स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि, वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता, सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता, वसवो देवता रुद्रा देवता, आदित्या देवता मरुतो देवता, विश्वेदेवा देवता, बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता, वरुणो देवता।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः, पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः, सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि।

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव, यद्भद्रं तन्नऽ आ सुव।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः। सर्वारिष्ट सुशान्तिर्भवतु।

॥ रक्षा विधानम् ॥

अक्षत हाथ में लेकर खड़े हो जाएँ। दशों दिशाओं के दिग्पाल देवता इस क्षेत्र की सुरक्षा कर रहे हैं, इस भाव के साथ निर्दिष्ट दिशाओं में अक्षत की वर्षा करें-

ॐ पूर्वे रक्षतु वाराहः, आग्नेयां गरुडध्वजः।
दक्षिणे पद्मनाभस्तु, नैर्ऋत्यां मधुसूदनः॥
पश्चिमो चैव गोविन्दो, वायव्यां तु जनार्दनः।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उत्तरे श्रीपती रक्षेत् ऐशान्यां हि महेश्वरः।।
ऊर्ध्वं रक्षतु धाता वो, ह्यधोऽनन्तश्च रक्षतु।
अनुक्तमपि यत्स्थानम्, रक्षत्वीशो ममाद्रिधृक्।।
अपसर्पन्तु ते भूता, ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारः, ते गच्छन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि, पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन, यज्ञकर्म समारभे।।

।। अग्नि स्थापनम्।।

दो ईंट की वेदी बनाकर उसके उपर गाय के एक उपले पर कपूर रखें तथा चारों ओर से चार उपलों की झोपड़ीनुमा आकार बना लें। अग्नि को ब्रह्म का प्रतिनिधि मानकर वेदी पर अग्नि की प्रतिष्ठा करते हैं। अगरबत्ती को प्रज्वलित कर अग्नि का आवाहन करें।

ॐ भूर्भुवः स्वद्यौरिव भूम्ना, पृथिवीववरिम्णा, तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि, पृष्ठेग्नि मन्नादमन्नाद्यायादधे, अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवां आसादयादिह। ॐ अग्नये नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि।

।। गायत्री स्तवनम्।।

दोनों हाथ जोड़कर भुवन भास्कर भगवान् सूर्य का ध्यान करें, दिव्यता पवित्रता के संचार की पुलकन का अनुभव करते हुए गायत्री स्तवन का गान करें।

1. शुभ ज्योति के पुंज अनादि अनुपम। ब्रह्माण्डव्यापी आलोककर्ता।
दारिद्र्य दुःखभय से मुक्त कर दो, पावन बना दो हे देव सविता।

2. हे योगियों के शुभ मार्गदर्शक, सद्ज्ञान के आदि संचारकर्ता।
प्रणिपात स्वीकार कर लो हमारा, पावन बना दो हे देव सविता।।

।। गायत्री मन्त्राहुतिः ।।

गायत्री मन्त्र द्वारा सबके विचार शुद्ध पवित्र निर्मल बनें। श्रेष्ठ कार्य करने की ऐसी ही प्रेरणा हमें सदैव मिलती रहे, इस भाव के साथ मध्यमा, अनामिका तथा अंगुष्ठ की सहायता से स्वाहा उच्चारण के साथ अग्नि देवता को अपनी आहुतियाँ समर्पित करें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा। इदं गायत्र्यै इदं न मम॥

॥ तरुदेव मन्त्राहुतिः ॥

जिनके विवाहदिवस, जन्मदिवस या जिनकी पुण्य स्मृति में आप ये वृक्ष लगा रहे हैं, परमपिता परमात्मा इस वृक्ष के त्याग, तप एवं पुण्य को उनकी रक्षा के लिए सदैव लहलहाता रहे, इस भाव के साथ महामृत्युंजय मन्त्र से आहुति समर्पित करें।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे, सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्, उर्वारुकमिव बन्धनान्, मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् स्वाहा। इदं महामृत्युंजयाय इदं न मम॥

॥ पृथ्वी गायत्री मन्त्राहुतिः ॥

माँ पृथ्वी की एक आहुति समर्पित करें। भावना करें कि धरती माता के दिव्य संस्कार हमें प्राप्त हो। क्षेत्र, वर्ग आदि की संकीर्णता से हटकर विशालता, सहनशीलता हममें आए, इस भाव से आहुति समर्पित करें।

ॐ पृथ्वी देव्यै विद्महे, सहस्त्रमूर्त्यै धीमहि, तन्नः पृथ्वी प्रचोदयात् स्वाहा। इदं पृथिव्यै इदं न मम॥

॥ वरुण गायत्री मन्त्राहुतिः ॥

भावना करें कि वरुण देवता की दृष्टि सदैव इस क्षेत्र में बनी रहे, जिससे रोपित किए जाने वाले पौधे सदैव विकसित हों, इस भाव के साथ आहुति समर्पित करें।

ॐ जलबिम्बाय विद्महे, नीलपुरुषाय धीमहि, तन्नो वरुणः प्रचोदयात् स्वाहा। इदं वरुणाय इदं न मम।

॥ सूर्यदेव मन्त्राहुतिः ॥

सूर्य ही वृक्षों - जीव जगत् के आधार हैं, वे अपनी स्वर्णिम किरणों से इन तरुपुत्रों की रक्षा एवं पोषण करें, इसी भाव से सूर्य गायत्री मन्त्र से आहुति प्रदान करें।

ॐ भास्कराय विद्महे, दिवाकराय धीमहि, तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् स्वाहा। इदं सूर्याय इदं न मम॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

॥ पूर्णाहूतिः ॥

हमारे द्वारा लिए गए श्रेष्ठ संकल्प सदैव पूरे हों, इस भाव के साथ पूर्णाहुति समर्पित करें।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते, पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते। ॐ पूर्णादर्विं परापत सुपूर्णा पुनरापत, वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जꣳ शतक्रतो स्वाहा। ॐ सर्वं वै पूर्णꣳ स्वाहा। 3।

॥ तरुरोपण या स्तुतिः (तरुगीता)॥

ध्यान दें, सभी भाई-बहिन तरु की थैली को फाड़ कर अलग कर लें। धरती माँ को कुण्ड मान कर पौधे को धरती माता के गोद में स्थान दें। सदा-सदा के लिए दिव्य प्राण और पर्जन्य की वर्षा वृक्ष देवता भूवासियों के लिए करते रहें, इस भाव से वृक्ष का रोपण कर चारों ओर से मिट्टी चढ़ा दें।

ॐ तस्मात् सुबहवो ....।
अश्वत्थरूपी भगवान् विष्णुरेव न संशयः।
रुद्ररूपी वटस्तद्वत् पलाशो ब्रह्मरूपधृक्॥
दर्शनं पूजनं सेवा तेषां पापहरा स्मृताः।
दुःखापव्याधिदुष्टानां विनाशकरणीध्रुवम्॥

– पद्म पुराण उत्तर खण्ड, अ. 115

॥ तरुसिंचनम्॥

भविष्योत्तर पुराण के अनुसार जो कोई चतुर्मास में रोपित वृक्ष की जड़ों का सिंचन करता है, उसे दुर्लभ फल प्राप्त होते हैं। आपके द्वारा रोपित इस पौधे को सदैव आपका संरक्षण मिलता रहेगा। इस भाव के साथ आपके पास रखे पात्र के जल से रोपित तरु का सिंचन करें।

ॐ यः करोति तरोर्मूले सेकं मासचतुष्टयम्।
सोष्णिप तत् फलमाप्नोति श्रुतिरेशा सनातनी॥

॥ शान्तिपाठ॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः, पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः, सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः। सर्वारिष्ट सुशान्तिर्भवतु।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

।। तरुगीत/यज्ञ महिमा ।।

अब यहाँ से यज्ञ महिमा अथवा तरुगीत गाया जायेगा। आप रोपित किये गये पुत्र रूपी तरु की दोनों हाथ जोड़कर परिक्रमा करें।

नोट :-इसके पश्चात्
सत्साहित्य वितरण,
तरु प्रसाद वितरण,
आवश्यक सूचनायें।

प्रेरणा गीत

ओ तरु पर उपकारी.....

ओ तरु पर उपकारी, मन मुद मंगलकारी।
विषपायी शिव पालक पोषक, सब विधि मंगलकारी।
तारक तरु दश सुत सम मेरे, घोर नरक उद्धारी।
आतप, वर्षा, हेम, शरद ऋतु, शीत वसंत प्रभारी।
मुनि, गंधर्व, पित्तर, मानव, सब विधि हरिहर शिवधारी।
जलधि मित्र जल थल नभ जीवन, पोषक प्राण आधारी।
पत्र फूल फल कन्द मूल जल, दाता सब सुखकारी।
प्राण प्रदाता जीवन दाता, श्वास-श्वास आभारी।
ऋषि आरण्यक औ' वन दण्डक, निर्माता अधिकारी।
तुम शुभ अश्वत्थ, वट, पाकड़ सब, पाप पंक फल हारी।
हे शिवशंकरी, शुभग त्रिवेणी, पंचवटी सुखकारी।
वायुशोधक नभजल पोषक, धरा गगन श्रृंगारी।
ओ उपकारी, नरक उबारक, सर्व विध मंगलकारी।
श्वास प्रभारी, गगन धरा श्रृंगारी, जाऊँ चरण बलिहारी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यज्ञ महिमा

यज्ञ रूप प्रभो हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल-कपट को, मानसिक बल दीजिए॥
वेद की बोलें ऋचाएँ, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे, शोक सागर से तरें॥
आश्वमेधादिक रचाएँ, यज्ञ परउपकार को।
धर्म मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को॥
नित्य श्रद्धा भक्ति से, यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के, सन्ताप सब हरते रहें॥
कामना मिट जाये मन से, पाप अत्याचार की।
भावनाएँ शुद्ध होवें, यज्ञ से नर-नारि की॥
लाभकारी हो हवन, हर जीवधारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हों, शुभगन्ध को धारण किये॥
स्वार्थ भाव मिटे हमारा, प्रेम पथ विस्तार हो।
'इदं न मम' का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हो॥
हाथ जोड़ झुकाएँ मस्तक, वन्दना हम कर रहे।
नाथ करुणारूप करुणा, आपकी सब पर रहे॥
यज्ञ रूप प्रभो हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल-कपट को, मानसिक बल दीजिए॥

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कण कण में आनन्द भरा है

कण कण में आनन्द भरा है, लूटें और लुटायें।
आओ दुनियाँ स्वर्ग बनायें, आओ दुनियाँ स्वर्ग बनायें॥

वर्षा मीठा नीर पिलाती, धरती मैया अन्न खिलाती।
मैया जो कुछ देती हमको, बाँट-बाँट कर खायें। आओ....

परम मित्र ये वृक्ष हमारे, जीवन के अनमोल सहारे।
फूल खिलाते, फल भी देते, देख-देख मुस्कायें। आओ....

आसमान सुन्दर महफिल है, तारों की झिलमिल झिलमिल है।
बरस रहा आनन्द स्वर्ग से, आनन्दी बन जायें। आओ....

जग तो है आनन्दमय, मन ही करता दुःख, द्वन्द्व, भय।
मन को अगर जीत लें हम तो, स्वर्ग यहीं ले आयें। आओ....

झूठे सब मद मोह छोड़कर, मानवता से प्रेम जोड़कर।
जग को एक कुटुम्ब समझकर, हिलमिल हँसे-हँसायें। आओ....

सबसे मीठी बोली बोलें, कपट छोड़ अपना दिल खोलें।
प्रेम बढ़ायें विनय दिखायें, वत्सलता दिखलायें। आओ.....

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अब नये पौधे लगाने के लिए हम श्रम करें

बढ़ रहा है ताप दिन-दिन, हम उसे कुछ कम करें,
अब नये पौधे लगाने के लिए हम श्रम करें।
वृक्ष बादल को विवश करते उतरने के लिए,
आसमाँ से भूमि पर आकर बरसने के लिए,
अब न रेगिस्तान सारी भूमि हो जाए कहीं,
आइए, इस खौलते माहौल को कुछ नम करें।
अब नये पौधे लगाने के लिए हम श्रम करें।।
उपकरण विज्ञान के दिन-रात बढ़ते जा रहे,
कारखाने भी निरन्तर विष उगलते जा रहे,
वृक्ष विष पीकर अमृतवत् ओषजन देते हमें।
हम सभी वह प्राण पाने के लिए उपक्रम करें।
अब नये पौधे लगाने के लिए हम श्रम करें।।
मानवों, पशु, पक्षियों के प्राणदाता वृक्ष हैं,
फल, सुमन, ईंधन, वनौषधि के प्रदाता वृक्ष हैं,
वृक्ष बिन जीवन कहीं सम्भव न होगा भूमि पर,
हरीतिमा से भूमि को अब हम पुनः अनुपम करें।
अब नये पौधे लगाने के लिए हम श्रम करें।।
एक भी जो वृक्ष है मन से लगाता भूमि पर,
वह सहज ही दस सुतों का पुण्य पाता भूमि पर,
निज घरों में पौध तुलसी की लगायें भाव से।
राशि, ग्रह, नक्षत्र-वृक्षों का मधुर संगम करें।
अब नये पौधे लगाने के लिए हम श्रम करें।।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नारे

- धरती माँ का हो श्रृंगार, प्रति व्यक्ति पर वृक्ष हजार॥
- कड़ी धूप जलते पाँव, पेड़ होते तो मिलती छाँव॥
- धरती का श्रृंगार करायें, आओ हम सब वृक्ष लगायें॥
- वृक्ष हितैषी शिव विषपायी, क्यों निर्मम हो करें कटाई॥
- वृक्ष हमें जीवन भर देता, सोचो हमसे वह क्या लेता?
- वायु छाया फल आधार, वृक्षों के अनुदान ये चार॥
- सूखी धरती करे पुकार, वृक्ष ही हैं मेरा आधार॥
- दस पुत्रों से वृक्ष महान, तरु पिता सब बनें सुजान॥
- तरु सा मित्र नहीं है भाई, जनम मरण का यह हमराही॥
- धरती माँ कर रही पुकार, कम बच्चे और वृक्ष हजार॥
- वृक्षारोपण पुण्य महान, ऐसा हो अपना अभियान॥
- हर कोई एक पेड़ लगाये, जीवन का कर्तव्य निभाये॥

सदक़ा ए जारिया

बुखारी शरीफ़ की एक हदीस के अनुसार मुहम्मद साहब ने मुसलमानों से कहा कि-'तुम लोग ज़्यादा से ज़्यादा वृक्ष लगाओ और जब इनसे मनुष्य फल खायेंगे या जानवर चारा चरेंगे तो तुमको इसका उतना ही पुण्य मिलेगा, जैसे तुमको फल या चारा खिलाकर मिलता है।'

ज़रा सोचने की बात है कि इस्लाम में पौधे का लगाना ऐसा भला काम है, जिसका पुण्य जीवनपर्यन्त एवं मृत्योपरान्त उस व्यक्ति को मिलता रहेगा, जिसने पौधा लगाया है और उससे मानव समाज या जानवरों को लाभ मिल रहा हो। इस्लामी परम्परा में इस तरह के कार्यों को 'सदक़ा ए जारिया' कहते हैं, जिसका तात्पर्य है, जारी रहने वाला या अविरल दान।

- डॉ. एम. आई. एच. फारुकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अन्य सहायक पुस्तकें

- युगधर्म पर्यावरण संरक्षण
- मानव प्रगति एवं पर्यावरण
- पर्यावरण असन्तुलन - जिम्मेदार कौन ?
- जड़ी-बूटियों से स्वास्थ्य संरक्षण एकौषधि उपचार पद्धति
- मसाला वाटिका से घरेलू उपचार
- जड़ी-बूटी चिकित्सा एवं संदर्शिका
- तुलसी के चमत्कारी गुण
- जड़ी-बूटियों की व्यावसायिक खेती
- केंचुआ खाद संदर्शिका
- शाक उगायें अन्न बचायें
- वृक्षारोपण एक परम पुनीत पुण्य
- गमलों में स्वास्थ्य
- तरुपुत्र (पेड़-पौधों को पुत्रवत् पालने का महत्त्व)
- तरुसिंचन (पेड़-पौधों को जल-दान का महत्त्व)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक विनम्र अपील....

पहल स्वयं से ही करनी होगी

पर्यावरण संरक्षण की चर्चा तो विश्व भर में हो रही है, चारों ओर जन जागरूकता अभियान भी चलाये जा रहे हैं, पर फिर भी कोई ठोस परिणाम सामने नहीं आये हैं। यह प्रत्येक व्यक्ति के लिये आज एक बहुत बड़ी चुनौती है। जब कुछ कर गुजरने का जज्बा भीतर से पैदा होता है तो बड़ी से बड़ी मुश्किलें भी आसान हो जाती हैं। हमारे पर्यावरण को स्वस्थ एवं स्वच्छ करने के लिये किसी सरकार, संस्था, क्लब या मसीहे की जरूरत नहीं है। जरूरत केवल अपने भीतर से संजीदगी पैदा करने की है। "जो मुझसे बन पड़े, वह मैं करूँगा, मेरी ओर से लापरवाही नहीं बरती जायेगी।" यह संकल्प अपने अंदर पैदा करने की जरूरत है। ऐसी बहुत सी बातें हैं, बहुत से काम हैं जिन्हें यदि हम ध्यान में रखें, अभ्यास में लायें या उन्हें अपना नैतिक कर्तव्य ही मान कर, कर लें तो भी उतने भर से ही हमें काफी हद तक सफलता मिल सकती है।

शुरुआत में हो सकता है हमें यह व्यर्थ का प्रयास लगे, लोगों को अटपटा लगे। "केवल हमारे करने भर से ही क्या हो जायेगा?" ऐसे विचार भी मन में आ सकते हैं। लेकिन कुछ दिनों बाद हमारे कुछ मित्र, हमारे कुछ पड़ोसी हमारा अनुकरण करने लगेंगे। धीरे-धीरे उनके मित्र, उनके पड़ोसी उनका सहयोग करने लगेंगे और यह दायरा बढ़ता चला जायेगा। इस तरह हम अपने गाँव, कस्बे, शहर में नागरिक कर्तव्यों का पालन करने भर से ही स्वच्छता, सुरक्षा, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, शौचालय निर्माण जैसी बहुत सी समस्याओं का सहजता से समाधान कर सकते हैं।

इसके लिये हमारा सिर्फ एक प्रयास ही काफी है। पहल अपने आप से ही करनी होगी। जब तक हम ठानेंगे नहीं और खुद को बदलने के लिये मानेंगे नहीं, तब तक कोई सरकार न तो हमें बदल सकती है और न ही हमारे शहर को। कोई भी गली, मुहल्ला, गाँव या कस्बा सरकारी प्रयासों, अनुदानों अथवा चर्चाओं से बेहतर नहीं बनते। बल्कि यह बेहतर बनते हैं हमारी सोच और हमारे सहयोग से। हम अगर एक बार सोच लें और उसे बदलने की ठान लें तो बहुत कुछ कर सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

॥ हमारा युग निर्माणसत्सङ्कल्प ॥

१. हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।
२. शरीर को भगवान् का मन्दिर समझकर आत्मसंयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।
३. मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाये रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।
४. इन्द्रिय संयम, अर्थ संयम, समय संयम और विचार संयम का सतत अभ्यास करेंगे।
५. अपने आपको समाज का एक अभिन्न अङ्ग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।
६. मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।
७. समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अङ्ग मानेंगे।
८. चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।
९. अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।
१०. मनुष्य के मूल्याङ्कन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।
११. दूसरों के साथ वह व्यवहार नहीं करेंगे, जो हमें अपने लिए पसन्द नहीं।
१२. नर-नारी परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।
१३. संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।
१४. परम्पराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।
१५. सज्जनों को सङ्गठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

१६. राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान् रहेंगे। जाति, लिङ्ग, भाषा, प्रान्त, सम्प्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।

१७. 'मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है,' इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनायेंगे, तो युग अवश्य बदलेगा।

१८. 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा,' 'हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा,' इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

गायत्रीतीर्थ-शांतिकुंज, हरिद्वार
(उत्तराखण्ड) 249411
Ph.No.Off.- 01334-260602, 260403, 261328 Fax-260866
www.awgp.org shantikunj@awgp.org

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री तीर्थ, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

दिव्यतीर्थ- सन् १९२६ से प्रज्वलित अखण्ड दीप, अखण्ड यज्ञाग्नि, प्रतिदिन करोड़ों गायत्री मंत्रजप, साधना,अनुष्ठान।

अनुपम गुरुकुल- आरण्यक- हर व्यक्ति की मनोभूमि के अनुरूप जीवन साधना सत्रों का सतत संचालन।

नवयुग की गंगोत्री- वशिष्ठ, विश्वामित्र, भगीरथ, परशुराम, याज्ञवल्क्य, चरक आदि ऋषियों की परम्परा का विस्तार।

आध्यात्मिक सेनिटोरियम- प्रत्यक्ष परामर्श एवं पत्राचार द्वारा नित्य हजारों साधकों-परिजनों का मार्गदर्शन।

विचार क्रान्ति अभियान
शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

VM20